UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182835
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81·08 G725 Accession No. P.G. H3054

Author गोयलीय, अयोध्याप्रसाद संपा

Title शाइरी के नये मोड़ · तीसरा मोड़

This book should be returned on or before the date last marked below. 1962

शाइरीके नये मोड़

तीसरा मोड़

[प्रगतिशील सर्वश्रेष्ठ शाइर]

१. इसरारुलहक़ 'मजाज़'

२. फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

•

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थाङ्क–१५६
ग्रन्थमाला सम्पादक-नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

●

SHAIRI KE NAYE MODE
(Teesra Mode)
AYODHYA PRASAD GOYALIYA
Publication
Bharatiya Jnanpeeth Kashi
First Edition 1962
Price Rs. 3/

●

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ काशी
मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६२
मूल्य तीन रुपये

●

कल्याणी,

"तेरे क़दमोंमें ले के आया हूँ
ज़िन्दगीका हक़ीर नज़राना"

—गोयलीय

सहायक ग्रन्थ-सूची

●

प्रस्तुत तीसरे मोड़के शाइरोंका कलाम चयन करनेमें और जीवन-परिचय आदि लिखनेमें निम्नलिखित पुस्तकोंका उपयोग हुआ है—

शबे-ताब—इसरारुलहक़ 'मजाज'; प्रकाशक : हिन्दुस्तानी पब्लिशर्स दिल्ली। पृ० २१४, द्वितीयावृत्ति १९४५ ई०।

नक़्शे-फ़रियादी—फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़', प्रकाशक : मक्तबा उर्दू लाहौर। पृ० २११, प्रकाशन-तिथि मुद्रित नहीं। १९४१ ई०से पूर्वके कलामका संकलन।

दस्ते-सबा—'फ़ैज़'; प्रकाशक : उर्दू-बुकडिपो अमृतसर, प्रथम संस्करण जून १९५६; पृ० १२०। सन् १९५२ तकके कलामका संकलन।

ज़िन्दानामा—'फ़ैज़'; प्रकाशक : कबीर-बुकडिपो दिल्ली। १९५६ के लगभग प्रकाशित, पृष्ठ १४२।

सुर्ख़-हाशिए—नरेशकुमार 'शाद'; प्रकाशक : मक्तबे-शाहे-राह, उर्दूबाज़ार, दिल्ली, पृष्ठ १९२, प्रथम संस्करण।

मजाज़—इस्मत चुगताई; प्रकाशक : कुतुब पब्लिशर्स लि० बम्बई। पृष्ठ ६०, प्रथम संस्करण १९४८ ई०

विषय-सूची

मजाज़

●

परिचय	९
भेदपूर्ण मृत्यु	१७
अर्थीका जुलूस	१७
वातावरण और विकास	१९
असफल प्रेम	२१
सुरापान	३६
जिन्दादिली	४२
स्वाभिमानी मजाज़	५५
इन्क़िलाबी और रोमानी शाइरी	५७

कलाम

दिल्लीसे वापसी	११
नज़रे-अलीगढ	१९
बुताने-हरम	२२
उनका जश्ने-सालगिरह	२३
किससे मुहब्बत है	२४
आजकी रात	२७
मजबूरियाँ	२८
शिकवए-मुख्तसिर	२९
एक ग़मग़ीन याद	३०
तिफ़्लीके ख़्वाब	३२
ऐतराफ़	३३
आवारा	४०
इन्क़िलाब	५८
नौजवान ख़ातूनसे	५९
मुझे जाना है इक दिन	६०
आहंगे-नौ	६१
तआर्रुफ़	६४
नज़रे-दिल	६५
शौके-गुरेज़ाँ	६६
मुसाफ़िर	६७
अँधेरी रातका मुसाफ़िर	६८
नौजवानसे	६९
पर्दा और इस्मत	७०
ग़द्दार	७१
ख़्वाबे-सहर	७२
आज भी	७३
इशरते-तन्हाई	७४
नूरा	७७
रात और रेल	७९
अयादत	८२
क़तआत	८३
ग़ज़ल	८४
आहंगे-जुनूँ	८८

फ़ैज़

परिचय	९३	दो आवाज़ें	१२५
अमर कृति	९७	तुम्हारे हुस्नके नाम	१२८
शाइराना मर्त्तबा	९७	तराना	१२९
संकोचशील स्वभाव	१०३	नज़रे-सौदा	१२९
भाईकी मौत	१०३	निसार मैं तेरी गालियोंपै	१३०
फ़ैज़की शाइरी	१०५	याद	१३२
पहली-सी मुहब्बत	१०७	ऐ हबीब अम्बरीं-दस्त	१३३
रक़ीबसे	११०	मुलाक़ात	१३४
सोच	११२	वासोख्त	१३५
चन्द रोज़ और मेरी जान	११४	हम जो तारीक राहोंमें	१३६
ख़ुदा वह वक़्त न लाये	११५	दरीचः	१३८
तन्हाई	११६	दर्द आयेगा दबे पाँव	१३८
मौज़ूए-सुख़न	११७	यह फ़स्ल उम्मीदोंकी हमदम	१४०
शाहे-राह	११९	बुनियाद कुछ तो हो	१४१
ऐ दिले-बेताब ठहर	१२०	कोई आशिक़ किसी महबूबसे	१४१
मेरे हमदम मेरे दोस्त	१२१	अगस्त १९५५ ई०	१४२
सुबहे-आज़ादी	१२३	हम्द	१४३
लोहो-क़लम	१२४	क़ते और ग़ज़लें	१४४

शाइरीके नये मोड़

तीसरा मोड़

खुलता किसी पै क्यों मेरे दिल का मुआ़मला
शेरों के इन्तख़ाब ने रुसवा किया मुझे

—ग़ालिब

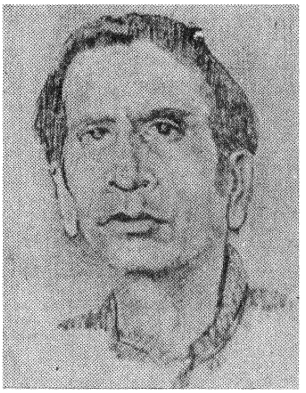

मजाज़

मजाज़

आग थे इब्तदाए-इश्क़में हम
अब जो हैं, ख़ाक इन्तिहा है यह

—मीर

हायरे भाग्यकी विडम्बना ! लखनऊके बलराम हॉस्पिटलमें अत्यन्त दयनीय, शोचनीय एवं असहाय स्थितिमें वही 'मजाज़' मर गया, जिसके नामपर कभी 'इस्मत' चुग़ताईके शब्दोंमें—"गर्ल्स कॉलेजोंमें लाटरियाँ डाली जाती थीं, और उसके अशआ़र तकियोंके नीचे छिपाकर आँसुओंसे सींचे जाते थे; और कुँवारियाँ अपने आइन्दा बेटोंके नाम उसीके नामपर रखनेकी क़समें खाती थीं, न जाने किस अरमानके बदलेमें ?[1]"

मजाज़की शाइरीपर अलीगढ़ कॉलेजकी लड़कियाँ किस हदतक फ़रे-फ़्तः (मुग्ध) थीं ? इस्मत चुग़ताईकी ज़बाने-मुबारकसे सुनिए, जो ख़ुद भी उन दिनों वहाँ पढ़ती थीं—"लड़कियाँ मौसमी छुट्टियाँ गुज़ारने अपने-अपने घरोंको सिधार चुकी थीं। सिर्फ़ चन्द फूटे नसीबोंवाली, जिनके घर दूर थे, या कोई हमसफ़र न मिला था, होस्टलमें सहमी हुई नज़र आती थीं।.....दिन तो किसी-न-किसी तरह ज़बर्दस्ती हँसी-खेलमे घसीट डालते, पर ज्यूँ ही शामका सुर्मई साया सहनमें रेंगना शुरू करता, दम बोखला उठते और ना मालूम-सा धीमा-धीमा खौफ़ गला दबोचने लगता। चुपके-चुपके गिनतीकी आठ-दस लड़कियाँ एक-दूसरेके क़रीब खिसक आतीं। घरोंकी याद दिलमें सुलग उठती और बेइख्तियार सर जोड़कर आँसू बहाने शुरू कर दिये जाते। आँसू पूछे जाते और फिर घुल-मिलकर जीनेकी कोशिश शुरू हो जाती।....वही लम्बा-चौड़ा मक़बरेकी तरह सुनसान

१. मजाज़ पृ० २६।

होस्टल, जहाँ छुट्टियाँ गुज़ारनी थीं। फिर घुटन और बढ़ गयी। खामोशी गहरी हो गयी। एक खला (रिक्तता)–सी दिलोंमे फैलने लगी, उसी खलामें आवाज़ आयी—

ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ[1] ?

.....

"चौंककर जो हमने देखा तो यह चाकलेट-जैसी सौंधी रंगतवाली महमूदः थी, जो हम सबसे दूर दरीके कोनेपर हाथोंका तकिया सरके नीचे रखे अपनी आँसू-भरी आवाज़मे गुनगुना रही थी। फिर तो सितारे टूटने लगे, मोतियोंकी लड़ियाँ ठेससे बिखरकर दुपट्टोंमे उलझ गयीं। सीनोंमें हूकें उठने लगीं। लेकिन जब शोले भड़क उठे, पैमाने छलक पड़े और सीनोके ज़ख्म महक उठे तो ड्रामा शाइरीकी हदोंसे गुज़रकर भौंडे क़िस्मकी भों-भोंमें फिसल आया। वह धूम-धामकी सफ़े-मातम बिछी कि मुहर्रम मॉद पड़ गये[2]।"

उक्त नज़्म 'मजाज़' की 'आहंग' नामक पुस्तकसे पढ़ी गयी थी। इस पुस्तककी फिर इतनी चाहत बढ़ी कि 'ईदी-बक़रीदी' नुमाइशके पैसोंसे छह-छह सात-सात कापियाँ खरीद डालीं। तोहफ़े (उपहार) हैं तो 'आहंग'-के। ग़रज़ सारे बोर्डिङ्गमें आहंग चल पड़ी। दिलो-दमाग़पर कुछ इस तानसे 'आहंग' छायी कि मालूम होता था कोई वबा बोर्डिङ्गपर टूट पड़ी है। यहाँ तक कि कान पक गये, सुनते-सुनते जी मतला उठे।

"चः तौबा है, तुम तो मर जाओ उसपर जाकर।"

"पढ़ना-वढ़ना छोड़ो जी, उसके दर पै धरना दे दो जाके।"

"सफ़िया (मजाज़की बहन) से कहो तुम्हारी शादी करा दे।"

"वाह तुम न कर लो शादी।"

कड़वे-कड़वे जुमले चलते, जो जल जाते और मुँह सूज जाते। "यह

१. यह नज़्म 'आवारा' शीर्षकसे अगले पृष्ठोंमें मिलेगी। २. मजाज़ पृ० ५–९।

सब जिन्सी (शारीरिक) भूक है, जहाँ लड़केका नाम सुना मर मिटीं।" नाकपर ऐनक लगाये टीचर्स बड़बड़ायी—"ज़हनी ग़िलाज़त" (मानसिक-अपवित्र विचार) यह लीजिए मज़ाक़ खत्म, जुर्म साबित, मुजरिम सहम-कर रह गये। होंट साकित हो गये। मगर दिल लर्ज़ां। यहाँ कम्बख्त शाइरसे जान-न-पहचान। सरोकार ही कब था शाइरीसे ? जो रिश्ता क़ायम हो चुका था, वह क़ायम रहा। उसे तानों-तिश्नोंकी संगबारी (पथराव) न तोड़ सकी[1]।"

परिचय

इसरारुलहक़ 'मजाज़' उत्तर प्रदेशीय बाराबंकी ज़िलेके रदौली क़सबेमें ई० सन् १९०९ में जन्मे थे। आपके वंशका तारतम्य—अजमेरके ख्वाजा मुहीउद्दीन चिश्तीके गुरु ख्वाजा उस्मान हारुनी तक पहुँचता है। मजाज़के पिता चौधरी सिराजु-लहक़ लखनऊके रजिस्ट्रेशन विभागमें मुलाज़िम थे। अपने पिताके पास रहते हुए मजाज़ने लखनऊसे मैट्रिक पास किया। आगरेसे एफ. ए. और अलीगढ़ यूनिवर्सिटीसे बी. ए. किया।

दिल्लीमें जब रेडियो विभाग खुला तो मजाज़ १९३५ ई० में अलीगढ़से दिल्ली चले गये। वहाँ आपने अनुमानतः दो वर्ष रेडियोके उर्दू-पत्र 'आवाज़'-का सम्पादन किया, किन्तु रेडियो विभागके तत्कालीन सर्वेसर्वा बुखारी बन्धुओंकी दूषित प्रान्तीय मनोवृत्ति और तानाशाही स्वभावके कारण आप वहाँ अधिक न टिक सके। रेडियोसे मुलाज़मत छूटनेपर मजाज़को जो मानसिक क्लेश पहुँचा, उसका आभास निम्न नज़्मसे हो सकता है—

दिल्लीसे वापसी

[४८ में-से ११ शेर]

रुख़सत ऐ दिल्ली ! तिरी महफ़िलसे अब जाता हूँ मैं
नौहागर[2] जाता हूँ मैं, नालः-ब-लब[3] जाता हूँ मैं

---

१. मजाज़ पृ० ९–१०, २. शोकसन्तप्त, ३. दीर्घनिश्वास लिये हुए।

याद आयेंगे मुझे तेरे ज़मीनो-आस्माँ
रह चुके हैं, मेरी जौलाँगाह[1] तेरे बोस्ताँ[2]

क्या कहूँ किस शौक़से आया था तेरी बज़्ममें[3]
छोड़कर ख़ुल्दे-अलीगढ़की[4] हज़ारों महफ़िलें
कितने रंगीं अहदो-पैमाँ[5] तोड़कर आया था मैं
दिल नवाज़ाने[6]-चमनको छोड़कर आया था मैं

इक नशेमन[7] मैंने छोड़ा इक नशेमन छुट गया
साज़ बस छेड़ा ही था मैंने कि गुलशन छुट गया
दिलमें सोज़े-ग़मकी[8] इक दुनिया लिये जाता हूँ मैं
आह तेरे मैकदेसे[9] बे-पिये जाता हूँ मैं

जाते-जाते लेकिन इक पैमाँ[10] किये जाता हूँ मैं
अपने अज़्मे-सरफ़रोशीकी[11] क़सम खाता हूँ मैं
फिर तेरी बज़्मे-हसींमें[12] लौटकर आऊँगा मैं
आऊँगा मैं और ब-अन्दाज़े-दिगर[13] आऊँगा मैं

आह ! वे चक्कर दिये हैं, गर्दिशे-ऐयामने[14]
खोलकर रख दी हैं, आँखें तल्ख़िए-आलामने[15]

---

१. क्रोड़ास्थल, २. उद्यान, ३. महफ़िलमें, ४. अलीगढ़ विश्वविद्यालयकी रंगीन जन्नत, ५. वायदे, प्रतिज्ञाएँ, ६. सहृदयोंको, ७. घर, स्थान, ८. दुःखकी जलन, ९. मदिरालयसे, १०. वादा, ११. मस्तक बलिदान कर देनेवाली दृढ़ भावनाकी, १२. कमनीय स्थलीमें, १३. निश्चय पूर्वक। १४. भाग्यके फेरने, १५. कष्टोंकी कड़ुवाहटने।

फ़ितरते-दिल[1] दुश्मने-नग़्मः[2] हुई जाती है अब
ज़िन्दगी इक बर्क़[3] इक शोलः[4] हुई जाती है अब
सरसे पातक एक ख़ूनी आग बनकर आऊँगा
लालः ज़ारे रंगो-बूँ में[5] आग बनकर आऊँगा

रेडियोसे सम्बन्धविच्छेद होनेपर मजाज़ लखनऊ चले गये। वहाँ आपके पिता पेंशन पानेके पश्चात् स्थायी रूपसे बस गये थे। अतः आप भी लखनऊ रहते हुए साहित्यिक कार्य्योंमे रुचि लेने लगे, साथ ही एम. ए. करनेके लिए कॉलेज भी जाने लगे, किन्तु अपने मौजी स्वभावके कारण एम. ए. कर न सके। अपने साहित्यिक मित्र सैयद सब्तहसन और अली-सरदार जाफ़रीके सहयोगसे १९३९ में 'नया अदब' मासिक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ किया।

१९४१ ई०में मजाज़का मस्तिष्क विकृत हो गया। स्वस्थ होनेपर दिल्लीकी हार्डिङ् लाइब्रेरीमें मुलाज़िम हो गये, परन्तु १९४४ ई०में वहाँसे भी नौकरी छूट गयी। मुशाअ़रोंमें हाथों-हाथ लिया जानेवाला और घरोंमें सबसे ज्यादा पढ़ा जानेवाला मजाज़ चिन्ताओं और दरिद्रताका जीवन-यापन करते हुए लखनऊके बलराम हस्पातालमें केवल ४६ वर्षकी आयुमें ५ दिसम्बर १९५५ ई०की रातको १० बजकर २२ मिनिटपर अल्लाहको प्यारा हो गया।

मजाज़के अनन्य मित्र हयातुल्लाह अंसारी उनकी इस दर्दनाक मौतके बारेमें लिखते हैं—

"मजाज़ शाम तक अच्छे थे और अपनी बाग़ो-बहार तबीयतके मुताबिक़ अपने दोस्तोंसे पुरलुत्फ़ गुफ़्तगू (मनोरंजक वार्त्तालाप) में रात गये तक मसरूफ़ (व्यस्त, तल्लीन) देखे गये। तक़रीबन १२ बजे रातको वे अपने

---

१. सहृदयता, २. शत्रुका राग, प्रतिहिंसक, ३. बिजली, ४. अंगार, ५. फूलोंके रंग और गन्धमें।

चन्द हम मश्रब (अपने जैसे स्वभाव और चाल-चलनवाले) साथियोंके साथ लाल बाग़के एक देशी शराब-घर ले जाये गये। जहाँसे उनके साथी तीन बजे रातको अपने-अपने घर चले गये और मजाज़की पूरी रात वहीं गुज़री। रात-भर आँगनमें पड़े रहनेकी वजहसे सुबह वे मफ़लूज (पक्षाघाती, लकवाग्रसित) मिले। दुकानके मालिकने एक क़रीबी डाक्टरको बुलाकर दिखाया। जिसने डबल निमोनियाँ तजवीज़ किया और वह ख़ुद दोपहरके क़रीब मजाज़को बलरामपुर हस्पताल पहुँचा गया।

"वहाँ भी डॉक्टरोंने डबल निमोनियाँ तजवीज़ करते हुए पैनसिलिनके इञ्जेक्शन देने शुरू कर दिये। शामके क़रीब हस्पतालके इंचार्जने तशख़ीस (रोगका निदान) किया कि जिस्मके दाहिने हिस्सेमें फ़ालिज (पक्षाघात) का असर हो गया है और दमाग़की रगें फट गयी हैं। अभी तक मजाज़के घरवालोंको कोई इत्तिला नहीं थी, इसीलिए कि मजाज़ तीन दिनसे घर नहीं गये थे और घरवालोंके लिए यह कोई नयी (अनोखी) बात नहीं थी। हस्पतालमें किसी जाननेवालेने मजाज़को देखकर उसके घरवालोंको इत्तिला पहुँचायी। मजाज़के वालिदैन (माता-पिता) ने हस्पताल आकर मरनेवालेकी हालत उस वक्त देखी, जब कि डाक्टरोंने मायूसी (निराशा) का इज़हार कर दिया था और आक्सीज़नके ज़रिये साँसकी आमदोशुद (आवागमन) को क़ायम रखनेकी कोशिश की जा रही थी।

"दूसरोंको सरूर और इंबसात (मादकता एवं आनन्द) से मालामाल करनेवाला मजाज़ रुख़सत हो गया; और इस तरह रुख़सत हो गया कि बेकसी (निःसहायता) आँसू बहा रही है। न उसका सिन मरनेका था और न अभी ऐसी तन्दुरुस्ती थी कि वह इतनी जल्दी दग़ा दे जाती। मगर भला हो ज़ालिम दोस्तों और शराबका कि उसने बहारे-अदबके एक गोशे (साहित्य-उद्यानके एक कोने) को वीरान कर दिया।

"मजाज़का मर जाना एक बहुत दर्दनाक सानिहः (दुर्घटना) है। लेकिन जिस तरह वह मरा है, वह तो एक अज़ीमुश्शान ट्रेजडी (बहुत

बड़ी दुःखद घटना) है । उसमें सिर्फ़ शराबका ही दख़्ल नहीं है, बल्कि ऐसे ज़ालिम दोस्तोंका भी दख़्ल है, जो उसकी बज़्लःसंजी (विनोदी स्वभाव) और शाइरीकी वजहसे उसे पिलाते थे । वे जानते थे कि यह पीना उसके लिए ज़हरे-क़ातिल (मारक विष) है, लेकिन फिर भी पिलाते थे । अपने मज़े और अपनी संगतके लिए पिलाते थे ।

"मजाज़ इस दौर (युग) का कीट्स था·····वह जिस दौरमें पैदा हुआ था, उसमें ग़ज़लों और नज़्मोंके एक मजमूए (संकलन) की—जिसे शाइर चार-पाँच सालमें रातोंको ख़ूने-दिलके दिये जला-जलाकर तैय्यार करे—क़ीमत सिर्फ़ चार-पाँचसौ रुपये थी । मगर वह भी उस वक़्त मिलते थे, जब पब्लिशरों (प्रकाशकों) और ख़रीदारोंकी ख़ुशामद करता फिरे ।

"मजाज़का सरमाया (शाइराना पूँजी) सिर्फ़ उसका मज़्मूआ 'आहंग' (ग़ज़लों-नज़्मोंके मुद्रित संकलनका नाम) था । उससे कुछ रक़म मिली और फिर उसका (मजाज़के शाइराना दिलका) सोता सूख गया । मजाज़का सीना आर्ज़ूओं, तमन्नाओं और हौसलोंका बहुत बड़ा गहवारः (हिंडोला) था । वह घरबार चाहता था, बीवी-बच्चे चाहता था, बा-वक़्त रोज़गार चाहता था । लेकिन ज़मानेके पास एक ऐसे शख़्सको, जो शाइर और महज़ (केवल) शाइर हो, देनेको कुछ नहीं था । मजाज़ भी कुढ़ता रहा और अपनी इस कुढ़नको उसने ग़र्क़े-मैनाब करना (मदिरामें डुबोना) चाहा ।"

मदिरा मज़ाजकी कुढ़नको क्या पचा पाती, मदिरा-पानकी लतने स्वयं एक और कुढ़न दे दी । फिर इस दोहरी कुढ़नसे मुक्ति पानेके लिए डबल मदिरा पान करते रहे ।

"इस तरह नाकामियाँ, नामुरादियाँ (असफलताएँ, निराशाएँ) मकड़ीकी तरहका जाल उसकी ज़िन्दगीके लिए बुनती गयीं । और मज़ीद (पुनः-पुनः) नाकामियों और नामुरादियोंको दावत देती गयीं । ये नामुरादियाँ और नाकामियाँ अगर मजाज़की शाइरीमें आ जातीं तो आज उसने

'आवारा' नज़्मकी तरह बहुत-सी चीज़ें कह दी होतीं और बहुत-से मज्मूए (कविता-संकलन) छपवा डाले होते। इन मज्मूओंने उसकी माली हालतको किसी हदतक सुधार दिया होता। लेकिन अफ़सोस ऐसा भी न हो सका।

"इसके बहुत-से असबाब (कारण) हो सकते हैं। लेकिन हमको यक़ीन है कि इस बातका इम्कान (सम्भावनाका भाव) ज़रूर था कि मजाज़ इन नाकामियों और नामुरादियोंके झुरमुटमें चाँद बनकर चमकता। हमारा ख़याल है कि ऐसा न होनेका एक सबब यह भी है कि मजाज़ एक ऐसी जमातसे ताल्लुक़ (सम्बन्ध) रखता था, जो अदब (साहित्य) को अपने रोज़ानाके मसाइल (समस्याएँ) और एक ख़ास सियासी नज़रियेसे मुताल्लिक़ (विशेष राजनैतिक दृष्टिकोणसे सम्बन्धित) रखना चाहती थी। और यह रोज़ानाके मसाइल और सियासी नज़रिये भी उस जमातके बराबर बदलते रहते थे। मजाज़ इस क़िस्मकी शाइरीके लिए मौज़ूँ (उपयुक्त) न था। वह गहरे जज़्बात (भावनाओं), दूररस ख़यालात (दूरन्देश विचारों) और हज़ारों साल रहनेवाली क़दरोंमें सोचता था। वह सहाफ़ती क़िस्म (प्रचारात्मक गुटबन्दी-विज्ञापन ढंग) की शाइरी नहीं कर सकता था[1]। नतीजा यह हुआ कि उसे अपनी पार्टीकी राइज़ बहरों (निश्चित की गयी विचार धाराओं) में कुछ-न-कुछ कहना पड़ा। मगर जो कुछ भी कहा अपनी तर्ज़का कहा और इसके लिए एतराज़ोंका आमाजगाह (निशाना) बना।

"न मजाज़ अपनेको काट-पीटकर ज़मानेके साँचेमें ढाल सका और न ज़माना इतना फ़य्याज़ (उदार, सहृदय) था कि वह अपनेको मजाज़के लिए इतना ख़ुशगवार बना लेता। मजाज़को एक-दो बार मुलाज़मतें भी मिलीं। लेकिन ख़ुश्क फ़र्ज़ और बदमज़: पाबन्दियाँ उसे कुंजे-क़फ़स (बन्दी-

१. साम्यवादियोंकी विचारधारावाली प्रगतिशील शाइरीकी ओर संकेत है।

गृह) और सैयादका घर लगीं। जिनको वह बर्दाश्त न कर सका और यह कामयाबी भी उसके लिए नाकामयाबी ही रही।

"अगर्चे डॉक्टरोंकी मुत्तफ़िक़: तशखीसके मुताबिक़ मौतका सबब रगोंका फट जाना है। मगर मजाज़के जिस्मपर चोटोंके निशानों—जलाये जानेके ऐसे दाग़ोंने जो मैयतके ग़ुस्ल (शव-स्नान) के वक़्त दिखायी दिये, सबको सुबहेमें डाल दिया।....सही तहक़ीक़ पोस्ट मार्टमके ज़रिये ही की जा सकती थी। मगर पोस्टमार्टमके लिए मजाज़के ग़मज़दा घरानेसे इजाज़त लेनेकी जुरअत किसीको न हुई। मजाज़के एक साथी जलाल मलीहाबादीके बारेमें मालूम हुआ कि वे भी उस रातसे बेहोश पड़े हैं, और उनके मुँह पर आमास (सूजन) है। मजाज़की आख़िरी रातका तीसरा साथी एक पहलवान बताया जाता है, जिसके बारेमें अभ तक कुछ और मालूम नहीं हो सका है।"[1]

भेदपूर्ण मृत्यु

मजाज़ अत्यन्त लोकप्रिय और यारबास आदमी थे। उनकी मृत्युकी ख़बर बिजलीकी तरह लखनऊमें कौंध गयी। जिसने भी सुना कलेजा थामे हुए बलरामपुर हस्पताल पहुँचा। सज्जाद ज़हीर, हयातुल्लाह अन्सारी, एहतमान हुसैन, इस्मत-चुग़ताई, नियाज़ हैदर-जैसे ख्यातिप्राप्त साहित्यिक मजाज़के पास दम साधे खड़े हुए थे। सरदार जाफ़िरी[2] और मुहम्मदरज़ा अन्सारी लिपटकर रोने लगे।

अर्थीका जुलूस

वे घबराकर जनाज़ा देखने बाहर निकल आये
किसी ने कह दिया मैयत जवाँ मालूम होती है,

—अज्ञात

---

१. 'आईना' दिल्ली १९ दिसम्बर १९५५ पृष्ठ ६-७, २. आपका परिचय एवं कलाम चौथे मोड़में देखें।

मजाज़के जनाज़ेको क़ब्रिस्तानमें मिट्टी देनेके लिए प्रायः सभी वर्गके उर्दू-हिन्दी-साहित्यसेवी, शाइर-कवि, कलाकार, चित्रकार, राजनैतिक, सामाजिकनेता, शिक्षक-विद्यार्थी, अमीर-ग़रीब एक हज़ारके लगभग उमड़ पड़े थे। कहते हैं इतना बडा समूह इससे पूर्व लखनऊके किसी भी शाइरके जनाज़ेमें सम्मिलित नहीं हुआ था।

आशिक़का जनाज़ा है ज़रा धूमसे निकले

मजाज़ भरी जवानीमें केवल ४६ वर्षकी आयुमे मर गये। भला कोई यह सिन भी मृत्युका होता है। यद्यपि मद्य-पानकी अधिकता, आवारगी और अस्त-व्यस्त जीवनके कारण दिन-प्रतिदिन मजाज़का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, किन्तु वे इतने शीघ्र उठ जायेंगे, इसकी स्वप्नमे भी किसीको सम्भावना न थी। लेकिन मजाज़को मृत्युके सन्निकट होनेका शायद आभास मिल चुका था। तभी तो मृत्युसे दो दिन पूर्व अपने मित्रोंसे, जो कि एक कान्फ्रेंसमे सम्मिलित होनेके लिए बम्बईसे आये थे, मजाज़ने कहा था—"अब तो हर मुलाक़ात ऐसी मालूम होती है, जैसी कि आख़िरी मुलाक़ात है। मजाज़ने अपने अशआरमे भी कहीं-कहीं इस ओर संकेत किया है—

ज़िन्दगी साज़[1] दे रही है मुझे
सहर-ओ-एजाज़[2] दे रही है मुझे
और बहुत दूर आस्मानोंसे
मौत आवाज़ दे रही है मुझे

और मजाज़ ही का यह शेर उनकी अकाल मृत्युपर कितना मौज़ूँ चस्पा होता है—

इस महफ़िले—कैफ़ो—मस्तीमें[3], उस अञ्जुमने-इरफ़ानीमें[4]
सब जाम ब-कफ़[5] बैठे ही रहे, हम पी भी गये छलका भी गये

---

१. वाद्यतन्त्र, २. वशीकरण, जादू, ३. आनन्दपूर्ण मस्तीमें, ४. मित्र-मण्डलीमें, ५. मदिरापात्र लिये हुए।

मजाज़की मृत्युसे उर्दू-संसारको बहुत व्यथा पहुँची। 'जोश' मलीहाबादीने लिखा—"मर्ग-मजाज़की ख़बरने दिलको बरमाकर रख दिया। काश वह ज़िन्दा रहता, मैं मर जाता। हाय! हाय!!"

मजाज़का विकास अलीगढ़ यूनिवर्सिटीके वातावरणमे हुआ। यहींसे उन्होंने बी.ए. किया, यहीं उनको शाइराना ख्याति मिली। यहीं वे—

वातावरण और विकास

हयातुल्लः अंसारी, सब्तहसन, अख्तर हुसेन रायपुरी, अली सरदार जाफ़िरी, जाँ निसार अख्तर, और जज़्बी आदि जैसे ख्याति पाने वाले साहित्यिकोंके सहपाठी रहे। यहीं उनकी शाइरीमें क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रीय भावोंका समावेश हुआ और यहींके मादक वातावरणमें उनके हृदयमें प्रेम-अंकुर फूटा। अलीगढ़की मेरिस रोडपर, जिसे सिविल लाइन-जैसी मनोरंजक और सौन्दर्यस्थली समझा जाता है, मजाज़का परिवार रहता था। यह स्थान सौन्दर्य्य-उपासकोंके मनबहलावके लिए कलकत्तेकी चौरंगी और दिल्लीका कनॉटप्लेस था। इसी मेरिस रोडपर यूनिवर्सिटीके प्रोफ़ेसरोंके बँगले, गर्ल्ज़ कॉलेज और गर्ल्ज़ हॉस्टल थे। सड़कके दोनों तरफ़ आम और जामनके वृक्षोंकी क़तार, बहती हुई नहर, पपीहेकी पीहू-पीहू, कोयलकी कूक और अँधेरेमे जुगनुओंकी चमकसे ऐसा मादक एवं रोमाचक वातावरण रहता था कि चन्द्रमुखियों और छबीलोंको बरबस सैरके लिए खींच लेता था। फिर मजाज़ तो इस रंगीन एवं नशीली रोडपर रहते ही थे।

इसी रंगीन माहौलमें सराबोर रहकर उन्होंने 'नज़रे-अलीगढ़' १९ अशआ़रकी नज़्म कही। जिसके ८ शेर यहाँ नज़र किये जा रहे हैं—

हर आन यहाँ सहबाए-कुहन[1] इक साग़रे-नौमें[2] ढलती है
कलियोंसे हुस्न टपकता है, फूलोंसे जवानी उबलती है

१. पुरानी मदिरा, २. नवीन मदिरा-पात्रमें।

याँ हुस्नकी [1]बर्क़ चमकती है, याँ नूरकी[2] बारिश होती है
हर आह यहाँ इक नग्म:[3] है, हर अश्क[4] यहाँ इक मोती है
हर शाम है, शामे-मिस्र[5] यहाँ,हर शब है,शबे-शीराज़[6] यहाँ
है सारे जहाँका सोज़[7] यहाँ और सारे जहाँका साज़[8] यहाँ
यह दश्ते-जुनूँ[9] दीवानोंका यह बज़्मे-वफ़ा[10] परवानोंकी
यह शहर तरब रूमानोंका[11] यह ख़ुल्दे-बरीं[12] अरमानोंकी
इस फ़र्शसे हमने उड़-उड़कर अफ़लाकके[13] तारे तोड़े हैं
नाहीदसे की है सरगोशी[14] परवीनसे रिश्ते जोड़े हैं
इस बज़्ममें तेग़ें खींची हैं, इस बज़्ममें साग़र तोड़े हैं
इस बज़्ममें आँख बिछायी है, इस बज़्ममें दिल तक जोड़े हैं
इस बज़्ममें नेज़े फेंके हैं, इस बज़्ममें ख़ंजर चूमे हैं
इस बज़्ममें गिर-गिर तड़पे हैं, इस बज़्ममें पीकर झूमे हैं
याँ हमने कमन्दें डाली हैं, याँ हमने शब ख़ूँ[15] मारे हैं
याँ हमने क़बाएँ[16] नोची हैं, याँ हमने ताज उतारे हैं

यह था वह मादक और रसीला हर्षोल्लासयुक्त वातावरण, जहाँ सौन्दर्य-पिपासु आँखोंसे पीते थे और झूमते थे। इसी आनन्द-विभोर क्रीड़ास्थलमें मजाजकी शाइरीने अँगड़ाइयाँ लीं, यहीं जवान हुई और यहीं 'मजाज' किसीके नैन-बाणोंसे घायल हुए।

---

१. बिजली, २. प्रकाशकी, ३. संगीत, ४. आँसू, ५-६ इस्लामी दो देशोंके नाम, ७. दर्द, ८. वाद्ययंत्र, ९. उन्मादस्थल, १०. वफ़ादारोंकी महफ़िल, ११. आसक्त होनेका केन्द्र, १२. जन्नत, स्वर्ग, १३. आकाशके, १४. कानाफूसी, १५. शत्रु आक्रमणकारी, १६. परिधान।

इश्क़ करते हैं, उस परीरूसे
'मीर' साहब भी क्या दिवाने हैं

मजाज़ भी इश्क़के मामलेमें 'मीर'-जैसा ही दीवानापन कर बैठे। कुछ इतनी ऊँची अट्टालिकामें रहनेवाली शहज़ादीसे आँख लड़ा बैठे कि जिसका दीदार तो किया जा सकता था, लेकिन

असफल प्रेम

उस तक पहुँचनेके लिए कमन्द फेंकना असम्भव था। वह एक ऐसी छुई-मुई थी, जिसे दूरसे निहारना तो मुमकिन, मगर हाथ लगाना गुनाह था। वह एक ऐसी कली थी, जिसकी सुबाससे मनका भँवरा चचल तो हो पाता था, परन्तु रसका अधिकारी नहीं था। उसके मार्गमें पलक-पाँवड़े तो बिछाये जा सकते थे, मगर चरणोंका चुम्बन लेना वर्जित था। उस शोलारूने मजाज़को झुलसा तो दिया, लेकिन उस जलनपर मरहम रखनेको राज़ी न हुई। मजाज़को बर्फ़की तरह गलते तो देखती रही, मगर उसके सीनेको सेंकनेके लिए तत्पर न हुई।

मजाज़की यह प्रेयसी बहुप्रतिष्ठित, सम्पन्न और उच्च शिक्षित परिवारकी कन्यारत्न थी। उसको पानेका स्वप्न देखना बौनेका चाँद छूने-जैसी अनधिकार चेष्टा थी। यह माना कि वह पर्देकी पाबन्द नहीं थी। बहुत-से दक़ियानूसी रीति-रिवाजोंसे भी मुक्त थी। निर्भय और स्वच्छन्द थी। फिर भी थी तो बड़े घरानेकी लड़की न? वह कैसे मजाज़को इतनी अधिक इश्क़की पेंगें बढ़ानेकी इजाज़त दे सकती थी कि अन्तमें जीवन-साथी बननेकी नौबत आ जाये। उसे अपनी वंश-प्रतिष्ठा, अभिभावकोंकी मान-मर्यादा और अपने रहन-सहनके स्तरका भी तो ध्यान था। वह मृगनयनी तोतेके पिंजरेमें क्यों और कैसे आती? वह कुछ दिनों आँख-मिचौनीका खेल तो खेल सकी, पर हमेशाके लिए आँखें बन्द करानेको राज़ी न हुई। वह मजाज़के साथ बालू-रेतके घरौन्दे बनाती रही, मगर जब उसे शक हुआ

कि यही घरौन्दा स्थायी निवासस्थान बननेवाला है तो वह उसे ढाकर मजाज़की पकड़से दूर जा खड़ी हुई। लेकिन इसमें मजाज़का भी क्या दोष? इश्क़ किया नहीं जाता, वह तो अनायास हो जाता है। बक़ौल 'असर' लखनवी—

इश्क़से लोग मनअ़ करते हैं
जैसे कुछ इख़्तियार है अपना

और इश्क़के सौदेमें कौन मुनाफ़ेमें और कौन घाटेमें रहता है? किसकी हार हुई और किसको जीत, यह भी कौन ख्याल करता है। इश्क़का ज्वार जब आता है, तब अच्छे-अच्छे तैराक भी ग़ोता खा जाते हैं, ग़फ़लतका पता तो ज्वार उतरनेपर ही लगता है—

इक निगाह करके उसने मोल लिया
बिक गये आह, हम भी क्या सस्ते

—मीर

दिल बचाकर न रख सकने और उसे लुटा बैठनेकी मजबूरीका बयान खुद मजाज़ने इस तरह किया है—

बुताने-हरम

[२५ मैं-से ७]

जिनकी इक जुम्बिशसे[1] बुनियादे-हरममें इर्तिआ़श[2]
जिनकी इक ठोकरसे ज़ंजीरे-क़दामत पाश-पाश[3]

---

१. हिलने-डोलनेसे, २. काबेकी नींवमें कम्पन आता है, ३. प्राचीन बन्धन टुकड़े-टुकड़े, छिन्न-भिन्न।

रुख़ पै शादाबी, लबोंमें रस[२], तबस्सुम बक़[३] पाश
चुस्त पैराहन[४]-नुमायाँ जिस्मे-सीमींकी[५] तराश

शोख़ियाँ उसकी हयाके रंगमें डूबी हुईं
सादगी उसकी अदाके रंगमें डूबी हुई
आँचलोंकी सरसराहट ज़मज़मे[६] गाती हुई
पैरहनसे निकहते-ख़ुल्देबरीं[७] आती हुई

गुफ़्तगू कुछ इस सलीक़ेसे कुछ इस अन्दाज़से
दिल बचाना सख़्त मुश्किल था कमन्दे-नाज़से
वह लचक-सी जिस्मे-नाज़ुकमें ख़ुद अपने बारसे[८]
फूट निकली थीं शुआएँ आरिज़ो–रुख़सारसे[९]

आरिज़ोंपर इक गुलाबीपन-सा, माथेपर दमक
आँखड़ियोंमें इक सरूरे-फ़तहमन्दीकी झलक

इश्क़की शुरूआत हुई तो मजाज़ने प्रेयसीकी जश्ने-सालगिरहपर ८ बन्दकी नज़्म कही, जिसके ५ बन्द यहाँ दिये जा रहे हैं—

उनका जश्ने-सालगिरह

इक मजमए-रंगी[१०] में वह घबरायी हुई-सी
बैठी है अजब नाज़से शर्मायी हुई-सी
आँखोंमें हया लब पै हँसी आयी हुई-सी

---

१. कपोलोंपर प्रसन्नता, २. ओठोंमें रस, ३. मुसकान बिजली गिराने वाली, ४. लिबास, ५. धवलशरीर, ६. गीत, ७. वस्त्रोंसे स्वर्गीय सुगन्ध, ८. बोझसे, ९.कपोलोंसे, १०.जन्म-गाँठके उपलक्षमें हो रहे रंगीन जल्सेमें।

लहरें-सी वह लेता हुआ इक फूलका सेहरा
सेहरेमें झमकता हुआ इक चाँद-सा मुखड़ा
इक रंग-सा रुख़[1]पर कभी हलका कभी गहरा
सरसार निगाहोंमें[2] हया[3] झूम रही है
हैं रक़्समें[4] अफ़लाक[5] ज़मीं घूम रही है
शाइरकी वफ़ा बढ़के क़दम चूम रही है
ऐ तू कि तेरे दमसे मिरी ज़मज़मः-ख़्वानी[6]
हो तुझको मुबारक यह तेरी नूरजहानी
अफ़कारसे[7] महफ़ूज़[8] रहे तेरी जवानी
छलके तेरी आँखोंसे शराब और ज़ियादा
महकें तेरे आरिज़के गुलाब और ज़ियादा
अल्लाह करे ज़ोरे-शबाब[10] और ज़ियादा

फिर यह इश्क़ परवान चढ़ा तो मजाजने यह नज़्म कही—

किससे मुहब्बत है

[२२ मैं-से २०]

बताऊँ क्या तुझे ऐ हमनशीं[11] ! किससे मुहब्बत है
मैं जिस दुनियामें रहता हूँ, वह उस दुनियाकी औरत है
सरापा रंगो-बू[12] है, पैकरे-हस्नो-लताफ़त[13] है,
बहिश्ते-गोश होती हैं, गुहर अफ़शानियाँ[14] उसकी

---

१. मुँहपर, २. मदभरे नयनोंमें, ३. लाज, ४. नृत्य करनेमें, ५. आकाशका बहुवचन, ६. शेर कहनेका उत्साह, ७-८. चिन्ताओंसे रहित, परेशानियोंसे सुरक्षित, ९. कपोलोंके, १०. यौवन-सौन्दर्यकी वृद्धि, ११. साथी, मित्र, १२. सुबास और शोभायुक्त, १३. रूप और कोमलतासे ओत-प्रोत, १४. मोती-जैसे वचन कर्णप्रिय लगते हैं।

वह मेरे आस्माँपर अख़्तरे-सुबहे-क़यामत है
सुरैया बख़्त है, जुहराजबीं है, माहे-तलअ़त है
मेरा ईमाँ है, मेरी ज़िन्दगी है, मेरी जन्नत है
मेरी आँखोंको ख़ैरह कर गयीं ताबानियाँ[1] उसकी

वह इक मिज़राब[2] है, और छेड़ सकती है रगे-जाँको[3]
वह चिंगारी है लेकिन फूँक सकती है, गुलिस्ताँको[4]
वह बिजली है, जला सकती है सारी बज़्मे-इमकाँको[5]
अभी मेरे ही दिल तक हैं, शरर सामानियाँ[6] उसकी

ज़बाँपर हैं अभी तक इस्मतो-तक़दीसके नग़मे[7]
वह बढ़ जाती है इस दुनियासे अक्सर इस क़दर आगे
मेरी तख़यीलके बाज़ू[8] भी उसको छू नहीं सकते
मुझे हैरान कर देती हैं, नुक्तादानियाँ[9] उसकी

अदाएँ लेके आयी है, वह फ़ितरतके[10] ख़ज़ानोंसे
जगा सकती है महफ़िलको नज़रके ताज़ियानोंसे[11]
वह मलका है, ख़िराज[12] उसने लिये हैं बोस्तानोंसे[13]
बस इक मैंने ही अक्सर की हैं, ना फ़रमानियाँ[14] उसकी

---

१. रूपका ओज आँखोंको झपका गया, २. सितार बजानेका छल्ला, ३. हृदय-वीणाको, ४. उद्यानको, ५. विश्वको, ६. आगके साधन, ७. शील और पवित्रताके गीत, ८. कल्पनाओंके पंख, ९. आलोचनाएँ, सूक्ष्मता, मर्मज्ञाताकी बातें, १०. प्रकृतिके, ११. दृष्टिरूपी हंटरसे, १२. राज्यकर, १३. उपवनोंसे, १४. हुक्मउद्‌ली, आदेशोंकी अवहेलना।

वह मेरी जुरअतोंपर बेनियाज़ीकी[1] सज़ा देना
हविसकी ज़ुल्मतोंपर[2] नाज़की बिजली[3] गिरा देना
निगाहे-शौक़की बेबाकियोंपर मुस्करा देना
जुनूँको दर्से-तमकीं[4] दे गयीं नादानियाँ उसकी

वफ़ा ख़ुद की है और मेरी वफ़ाको आज़माया है
मुझे चाहा है, मुझको अपनी आँखोंपर बिठाया है
मेरा हर शेर तनहाईमें[5] उसने गुनगुनाया है
सुनी हैं मैंने अक्सर छुपके नग़मा-ख़्वानियाँ[6] उसकी

मेरे चहरे पै जब भी फ़िक्रके आसार पाये हैं
मुझे तस्कीन[7] दी है, मेरे अन्देशे मिटाये हैं
मेरे शाने पै सर तक रख दिया है, गीत गाये हैं
मेरी दुनिया बदल देती हैं, ख़ुश उल्हानियाँ उसकी

लबे-लालींपै[8] लाली है, न रुख़सारों पै ग़ाज़ा[9] है
जबीने-नूर अफ़शाँपर[10] न झूमर है न टीका है
जवानी है सुहाग उसका तबस्सुम[11] उसका गहना है
नहीं आलूदए-ज़ुल्मत, सहर-दामानियाँ[12] उसकी

---

१. उपेक्षा भावकी, २. कामवासनाकी अँधेरीरूपी इच्छाओंपर, ३. हाव-भावरूपी उल्का, अभिमानकी बिजली, ४. सहिष्णुताका पाठ, ५. एकान्तमें, ६. गीत-लहरी, ७. तसल्ली, ८. लाल ओठोंपर, ९. कपोलों पर पाउडर, १०. चमकते मस्तकपर, ११. मुस्कान, १२. प्रभात अँधेरा रहित है, उसका प्रातःकाल अँधेरेसे लिप्त नहीं है, यानी वह स्वच्छ और बेदाग़ है।

कोई मेरे सिवा उसका निशाँ पा ही नहीं सकता
कोई उस बारगाहे-नाज़[1] तक जा ही नहीं सकता
कोई उसके जुनूँका ज़मज़मा गा ही नहीं सकता
झलकती हैं मेरे अशआ़रमें जौलानियाँ उसकी

अपनी प्रेयसीके मिलनकी एक रातका उल्लेख मजाज़ आनन्द-विभोर-होते हुए करते हैं—

आजकी रात

[१८ मैं-से ७]

देखना जज़्बे-मुहब्बतका असर[2] आजकी रात
मेरे शाने पै[3] है उस शोख़का सर आजकी रात
और क्या चाहिए अब ऐ दिले-मजरूह[4] ! तुझे
उसने देखा तो ब-अन्दाज़े दिगर आजकी रात
नूर-ही-नूर[5] है जिस सिम्त[6] उठाऊँ आँखें
हुस्न-ही-हुस्न है, ताहद्दे-नज़र[7] आजकी रात
अल्लाह-अल्लाह वह पेशानिए-सीमींका जमाल[8]
रह गयी जमके सितारोंकी नज़र आजकी रात
नग़मा-ओ-मैका[9] यह तूफ़ाने-तरब[10] क्या कहिए !
घर मेरा बन गया ख़ैय्यामका घर आजकी रात

---

१. प्रियतमाके समीप, २. प्रेम-आकर्षणका प्रभाव, ३. कन्धेपर, ४. घायल हृदय, ५. प्रकाश, ६. तरफ़, ७. जहाँतक नज़र पहुँचती हैं, ८. धवल मस्तकका निखार, ९.संगीत और सुराका, १०. आनन्ददायी समाँ।

अपनी रफ़अत पै जो नाज़ाँ[1] हैं तो नाज़ाँही रहें
कह दो अंजुमसे[2] कि देखें न इधर आजकी रात
उनके अल्ताफ़का[3] इतना ही फ़सूँ[4] काफ़ी है
कम है पहलेसे बहुत दर्दे-जिगर आजकी रात

मजाजकी प्रेयसी न तो पारिवारिक प्रतिष्ठाके मोहका परित्याग कर सकी और न सामाजिक बन्धनोंको ही तोड़ सकी। वह मजाजके साथ क़दमसे क़दम मिलाकर जीवन-संगिनीकी हैसियतसे चलनेको प्रस्तुत न हुई और प्रेम-डगरसे वापिस लौट गयी। बेचारा मजाज अकेला रह गया। वह चाहता तो अगले वक़्तोंके शाइरोंकी तरह माशूक़की बेवफ़ाई और हर-जाईपनका ढिंढोरा पीट सकता था। लेकिन मजाज तो मजाज था। उसने अपनी प्रेयसीकी मजबूरियोंको समझा और तत्कालीन अपने मनोभाव इस प्रकार नज़्म किये—

मजबूरियाँ

[११ में-से ६]

मैं आहें भर नहीं सकता कि नग़्मे[5] गा नहीं सकता
सकूँ[6] लेकिन मेरे दिलको मयस्सर आ नहीं सकता
कोई नग़्मे तो क्या अब मुझसे मेरा साज़[7] भी ले ले
जो गाना चाहता हूँ आह वह मैं गा नहीं सकता
हविस-कारी[8] है जुर्मे-ख़ुदकशी[9] मेरी शरीअ़तमें[10]
यह हद्दे-आख़िरी है मैं यहाँ तक जा नहीं सकता

---

१. ऊँचाईपर गर्वित, २. नक्षत्रोंसे, ३. कृपाओंकी, ४. जादू, ५. गीत, ६. चैन, ७. वाद्ययन्त्र, ८. कामुकता, लम्पटता, ९. आत्म-हत्या-जैसा पाप, १०. आत्म-धर्ममें।

न तूफ़ाँ रोक सकते हैं, न आँधी रोक सकती है
मगर फिर भी मैं उस क़स्रे-हसीं[1] तक जा नहीं सकता
वह मुझको चाहती है, और मुझ तक आ नहीं सकती
मैं उसको पूजता हूँ और उसको पा नहीं सकता
यह मजबूरी-सी मजबूरी यह लाचारी-सी लाचारी
कि उसके गीत भी जी खोलकर मैं गा नहीं सकता
ज़बाँपर बेख़ुदीमें[2] नाम उसका आ ही जाता है
अगर पूछे कोई यह कौन है बतला नहीं सकता
कहाँ तक क़िस्सए-आलामे-फ़ुर्क़त[3] मुख़्तसिर[4] यह है
यहाँ वह आ नहीं सकती, वहाँ मैं जा नहीं सकता
हदें वह खींच रक्खी हैं, हरमके[5] पासबानोंने[6]
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम[7] भी पहुँचा नहीं सकता

अपनी प्रेयसीकी इन मजबूरियोंका कारण मजाज़ने सामाजिक व्यवस्था और परम्परागत बन्धनोंको समझा।

शिकवए-मुख़्तसिर

मुझे शिकवा नहीं दुनियाकी उन ज़ुहराजबीनोंसे[8]
हुई जिनसे न मेरे शौक़े-रुसवाकी पज़ीराई[9]

---

१. सुन्दर महलतक, २. आत्मलीनतामें, ३. विरह-कष्टोंकी कहानी, ४. संक्षेपमें, ५. महलोंके, ६. रक्षकोंने, ७. सन्देश, ८. ज़ुहरा नक्षत्र-जैसी सुन्दरियोंसे, ९. बदनाम शौक़की मंज़ूरी।

मुझे शिकवा नहीं उन पाकबातन नुक्ताचीनोंसे[1]
लबे-मौज्जिज़ नुमाने[2] जिनके, मुझपर आग बरसाई
मुझे शिकवा नहीं तहज़ीबके उन पासबानोंसे[3]
न लेने दी जिन्होंने फ़ितरते-शाइरको अँगड़ाई
मुझे शिकवा नहीं दैरो-हरमके पासबानोंसे[4]
वह जिनके दर पै की है मुद्दतों मैंने जबीं-साई[5]
मुझे शिकवा नहीं उफ़्तादगाने ऐशो–इशरतसे[6]
वोह जिनको मेरे हाले-ज़ारपर[7] अक्सर हँसी आयी
मुझे शिकवा नहीं उन साहबाने-जाहो-सरवतसे[8]
नहीं आयी मेरे हिस्सेमें जिनकी एक भी पाई
ज़मानेके निज़ामे-ज़ंगे-आलूदासे[9] शिकवा है
क़वानीने-कुहन आईने-फ़रसूदासे[10] शिकवा है

प्रेयसीसे सम्बन्ध-विच्छेद होनेपर कही गयीं चन्द नज़्में—

एक ग़मगीन याद

मेरे पहलू–ब-पहलू[11] जब वह चलती थी गुलिस्ताँमें[12]
फ़राज़े-आस्माँपर[13] कहकशाँ[14] हसरतसे[15] तकती थी

---

१. बाह्यमें पवित्र दीखनेवाले आलोचकोंसे, २. प्रभावशाली मालूम होनेवाले ओठोंने, ३. सभ्यताके रक्षकोंसे, ४. मन्दिर-मस्जिदके संरक्षकोंसे, ५. मस्तक टेके हैं, माथा रगड़ा है, ६. संयोगसे जिन्हें भोग-विलास प्राप्त हैं, ७. दुरवस्थापर, ८. धनिकों और शासकोंसे, ९. जंग लगे हुए दुनियाके क़ानूनसे, १०. पुराने रीति-रिवाजोंसे, ११. मेरी बग़लमें, क़दमसे क़दम मिलाकर, १२. वाटिकामें, १३. उच्च आकाशमें, १४. आकाशगंगा, १५. लालसाभरी नज़रोंसे।

मुहब्बत जब चमक उठती थी उसकी चश्मे-ख़न्दाँमें[1]
ख़मिस्ताने-फ़लकसे[2] नूरकी सहबा[3] छलकती थी

मेरे बाज़ू पै[4] जब वह ज़ुल्फ़े[5]-शबगूँ खोल देती थी
ज़माना निकहते-ख़ुल्दे-बरींमें[6] डूब जाता था
मेरे शानेपै[7] जब सर रखके ठंडी साँस लेती थी
मेरी दुनियामें सोज़ो-साज़का तूफ़ान आता था

वह मेरा शेर जब मेरी ही लयमें गुनगुनाती थी
मनाज़िर[8] झूमते थे, बामोदरको[9] वज्द[10] आता था
मेरी आँखोंमें आँखे डालके जब मुस्कराती थी
मेरे ज़ुल्मतकदेका[11] ज़र्रा-ज़र्रा[12] जगमगाता था

उमड़ आते थे जब अश्के-मुहब्बत[13] उसकी पलकों तक
टपकती थी दरो-दीवारसे शोख़ी तबस्सुमकी[14]

---

१. मुस्कराती आँखोंमें, २. आकाशसे, ३. प्रकाशकी मदिरा, ४. बाहुओंपर, ५. काली रात-जैसी जुल्फ़ें, ६. स्वर्गीय उद्यानकी सुगन्धमें, ७. कन्धेपर, ८. प्राकृतिक दृश्य, ९. छत और दरवाज़ोंको, १०. बेहोशी-सी ११. अन्धकारका, १२. कण-कण, १३. प्रेमाश्रु, १४. मुसकानकी चंचलता।

जब उसके होंट आ जाते थे अज़खुद[1] मेरे होंटों तक
झपक जाती थीं आँखें आसमाँपर माहो-अंजुमकी[2]

वह जब हंगामे-रुख़सत[3] देखती थी मुझको मुड़-मुड़ कर
तो ख़ुद फ़ितरतके[4] दिलमें महशरे-जज़्बात[5] होता था
वह महवे-ख़्वाब[6] जब होती थी अपने नर्म बिस्तरपर
तो उसके सर पे मरियमका मुक़द्दस[7] हाथ होता था

ख़बर क्या थी कि वह इक रोज़ मुझको भूल जायेगी
और उसकी याद मुझको ख़ूनके आँसू रुलायेग

तिफ़्लीके ख़्वाब

[१२ मैं-से ४]

तिफ़्लीमें[8] आर्ज़ू[9] थी किसी दिलमें हम भी हों
इक रोज़ सोज़ो-साज़की[10] महफ़िलमें हम भी हों
गायें तराने दोशे-सुरैया[11] पै रखके हम
तारोंसे छेड़ हो महे-कामिलमें[12] हम भी हों

---

१. स्वयमेव, २. चन्द्र और नक्षत्रोंकी, ३. जाते समय, बिदा होते हुए, ४. प्रकृतिके, ५. प्रलयकी-सी हालत, ६. नींदमें लीन, ७. ईसाकी पूज्यमाताका पवित्र हाथ, ८. बचपनमें (किशोरावस्थासे आशय है), ९. इच्छा, १०. संगीतकी, ११. सुरैय्या नक्षत्र-जैसी सुन्दरीके कन्धेपर, १२. पूर्णिमाके चन्द्रमामें।

आज़ाद होके कश-म-कशे-इल्मसे[1] कभी
आशुफ़्तगाने–इश्क़की[2] मंज़िलमें हम भी हों
सहरा[3] हो, ख़ारज़ार[4] हो, वादी हो,[5] आग हो
इक दिन इन्हीं मुहीब मनाज़िलमें[6] हम भी हों

ऐतराफ़

अब मेरे पास तुम आयी हो तो क्या आयी हो ?

मैंने माना कि तुम इक पैकरे–रानाई[7] हो,
चमने-दहरमें रूहे-चमन-आराई[8] हो,
तलअ़ते-महर[9] हो, फ़िरदौसकी बरनाई[10] हो,
बिन्ते-महताब[11] हो, गर्दूँ से[12] उतर आयी हो,
मुझसे मिलनेमें अब अन्देशए-रुसवाई[13] है
मैंने ख़ुद अपने कियेकी यह सज़ा पायी है

ख़ाक़में आह मिलायी है जवानी मैंने
शोलाज़ारोंमें[14] जलायी है जवानी मैंने

---

१. विद्याध्ययनसे छुटकारा पानेपर, २. प्रेमियोंकी, ३. रेगिस्तान, ४. कण्टकाकीर्ण जङ्गल, ५. पर्वतकी हरी-भरी घाटी, ६. भयानक मार्गोंमें, ७. सुसज्जित, शृंगार की हुई सुन्दरी ८. विश्वरूपी वाटिकामें उसकी आत्मा हो, विश्व-उद्यानकी प्राण, ९. चन्द्रमुखी १०. हूर, देवाङ्गना, ११. चन्द्रमाकी पुत्री, १२. आकाशसे, १३. बदनामीका भय, १४. आगकी लपटोंमें ।

शहरे-ख़ूबाँमें[1] गँवायी है जवानी मैंने
ख़्वाबगाहोंमें[2] लुटायी है जवानी मैंने
हुस्नने सामने वह लालो-गुहर डाल दिये
मेरे पैमाने-मुहब्बतने सिपर[3] डाल दिये

इन दिनों मुझ पै क़यामतका जुनूँ[4] तारी था
सर पै सरशारिए-इशरतका[5] जुनूँ तारी था
माहपारोंसे[6] मुहब्बतका जुनूँ तारी था
शहरयारोंसे[7] रक़ाबतका[8] जुनूँ तारी था
बिस्तरे-मख़मलो-संजाब थी दुनिया मेरी
एक रंगीनो-हसीं ख़्वाब थी दुनिया मेरी

जन्नते-शौक़[9] थी, बेगानए-आफ़ाते-समूम[10]
दर्द जब दर्द न हो काविशे-दरमाँ[11] मालूम
ख़ाक थे दीदए-बेबाकमें[12] गर्दूं[13] के नजूम
बज़्मे-परवीं[14] थी, निगाहोंमें कनीज़ोंका हुजूम
लैलिए-नाज़[15] बरअफ़गन्दः नक़ाब आती थी
अपनी आँखोंमें लिये दावते-ख़्वाब आती थी

---

१. सुन्दरियोंमें, २. शयनागारोंमें, ३. हथियार, ४. उन्माद, ५. विलासका नशा, ६. चन्द्रमुखियोंसे, ७. शासकोंसे, ८. शत्रुताका, ९. स्वर्ग-सदृश, १०. कष्टोंकी आँधियोंसे अपरिचित, ११. चिकित्सा करानेकी चिन्ता क्यों हो, १२. बे पर्वाह नज़रोंमें, १३. आकाशके नक्षत्र, १४. नक्षत्रोंकी पंक्ति, १५. अभिमानिनी लैली।

संगको[1] जौहरे-नायाबो-गराँ[2] जाना था
दश्ते-पुरख़ारको[3] फ़िरदौसे-जवाँ[4] जाना था
रीगको[5] सिलसिलए-आबे-रवाँ[6] जाना था
आह यह राज़ अभी मैंने कहाँ जाना था
मेरी हर फ़तहमें है, एक हज़ीमत[7] पिन्हाँ[8]
हर मसर्रतमें[9] है राज़े ग़मो-हसरत[10] पिन्हाँ

क्या सुनोगी मेरी मजरूह[11] जवानीकी पुकार
मेरी फ़रियादे-जिगरदोज़ मेरा नालए-ज़ार[12]
शिद्दते-कर्बमें[13] डूबी हुई मेरी गुफ़्तार[14]
मैं कि ख़ुद अपने मज़ाक़े-तरब आगींका[15] शिकार
वह गुदाज़े-दिले-मरहूम[16] कहाँसे लाऊँ ?
अब मैं वह जज़्बए-मासूम[17] कहाँ.से लाऊँ ?

मेरे सायेसे डरो तुम मेरी क़ुर्बतसे[18] डरो
अपनी जुरअतकी क़सम अब मेरी जुरअतसे[19] डरो
तुम लताफ़त[20] हो अगर मेरी लताफ़तसे डरो
मेरे वादोंसे डरो, मेरी मुहब्बतसे डरो

---

१. पत्थरको, २. अमूल्य, भारी जवाहरात, ३. कण्टकाकीर्ण मार्गको, ४. स्वर्ग-जैसा पथ, ५. धूलको ६. पानीका दरिया, ७. हार, पराभव, ८. छिपी हुई, ९. खुशीमें, १०. इच्छाओं-दुःखोंका भेद, ११. घायल, १२. मेरे दिल-जिगरकी प्रार्थना, १३. व्याकुलताकी तीव्रतामें, १४. वार्ता, १५. सुरुचियोंका, १६. मृतक मृदुल हृदय, १७. किशोर और भोली भावनाएँ, १८. समीपतासे, १९. हिम्मतसे, २०. कोमल।

अब मैं इल्ताफ़ो-इनायतको[1] सज़ावार नहीं
मैं वफ़ादार नहीं हाँ मैं वफ़ादार नहीं

अब मेरे पास तुम आयी हो तो क्या आयी हो ?

मजाज़को विपत्तिरूपी बाढ़ बहाकर नहीं ले गयी थी, वे स्वयं ही आपदाओंसे खेलनेके लिए भँवरमें कूद पड़े थे। वे चाहते तो स्वयं भी हाथ-पाँव मारकर किनारे लग सकते थे। उनके हितैषी मित्र भी सहारा देनेको तत्पर रहे, किन्तु वे किनारेपर आनेके बजाय मौजोंके थपेड़े खाते हुए भी यही ज़िद पकड़े रहे—

सुरा-पान

दरियाकी[1] ज़िन्दगीपर सदक़े हज़ार जानें
मुझको नहीं गवारा साहिलकी मौत मरना

—जिगर मुरादाबादी

जब किश्ती साबित-ओ-सालिम थी, साहिलकी तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकिस्ता किश्तीपर साहिलकी तमन्ना कौन करे

—जज़्बी

मजाज इश्क़में कामयाब न हुए तो उन्होंने मदिराको मुँह लगा लिया। मानो पोखरसे निकले तो कुएँमें छलाँग मार दी। वे इश्क़की कड़ुवाहटको शराबकी तल्खीसे दूर करना चाहते थे। गोया प्रेम-ज्वालाकी जलनको सुरा-जलसे शान्त करनेका प्रयास करते रहे। परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य चौपट हो गया। मस्तिष्क विकृत हो जानेके कारण दो बार पागलखानेमें भी रहना पड़ा और भरी जवानीमें केवल ४६ वर्षकी उम्रमें जिस दयनीय स्थितिमें निधन हुआ, सुनकर शत्रुओंने भी कानपर हाथ रख लिये। उनको

१. कृपा-महर्बानियोंका।

अत्यन्त निकटसे जाननेवाली और मृत्युके समय उनके समीप उपस्थित रहने वाली इस्मत चुग़ताईने मजाज़के सुरा-पानका बहुत ही करुणाजनक चित्र प्रस्तुत किया है—

"पहली मुलाक़ातको चार-पाँच साल गुज़र गये। फिर १९४४ ई० में अचानक रेडियो स्टेशनपर मिले। यह वह ज़माना था कि मजाज़का सितारए-शाइरी डूब चुका था।·····रेडियो स्टेशनपर कोई मुशाअ़रा था, तमाम शाइर तो मौजूद, पर आप न जानें कहाँ ग़ायब? शुक्र है कि मुशाअ़रा शुरू होनेसे पहले लोग आपको समेट लाये और कुरसीपर टिका दिया। अब हुलिया मुलाहिज़ा हो। मैला चुस्त पायजामा कान मैलियों जैसा, उसपर बेतुका-सा ओवरकोट, गलेमे चीकट मफ़लर और सरपर चायपोशी। वाह! माइक्रोफ़ोनपर आकर न जाने क्या ऊल-फूल बकने लगे। कलेजेमें आतिश लावेकी तरह खौल रहा था। आँखोंकी पुतलियोंको क़रार न था। एक ज़मीनपर तो दूसरी आस्मानपर। कभी एक दायें तो दूसरी बायें कोनेमे। एक हाथ मशीनकी-सी रफ़्तारसे बालोंकी एक रेतआलूदः (धूलसे भरी हुई) लटको बार-बार कनपटीपरसे उठाये जा रहा था और वह बेहयाईसे गिरे जा रही थी। अब ख़ुश उलहानी (ख़ुश आवाज़) शुरू! अल्लाह जाने क्यों और क्या बकना शुरू किया। बीच-बीचमे दाँत भीचकर न जाने क्या लेक्चर भी देते जाते थे। टहलते हुए माइक्रोफ़ोनसे दूर निकल गये, वापिस लानेपर बिगड़कर बैठ गये।

"यह उनके मुँहको क्या हो गया? क्या दाढ़मे दर्द है?" मैने शाहिदसे पूछा—"नहीं तो, यह तो हमेशासे है इसके जबड़ेमें" वे बोले। "कोई नहीं, पहले तो कभी भी नहीं था" मैंने बुरा मानकर कहा और मुझे किसी तरह यक़ीन न आया कि मजाज़का जबड़ा हमेशासे ही ऐसा है, यक़ीनन वह मुझे जलानेके लिए बन रहा है।

"हम लोग बाहर आये तो मजाज़से फिर मुठभेड़ हो गयी। अब जो बातोंका तूमार बँधा है, तो अल्लाह तौबा!·····मालूम होता था ज्वार

की बोरीका मुँह खुल गया और बहर-बहरके दाने निकल रहे हैं। क्या मजाल जो मुहलत मिले और कह सकें कि दिल्ली शहरमें ताँगे मुश्किलसे मिलते हैं, और रातके ग्यारह बजे हैं, अब तो बख़्शिए। खैर खुद ही दिलमें नेकी आ गयी, बोले—"सुबह आऊँगा।"

"और सुबह-ही-सुबह कोई छह बजे होंगे कि आप वारिद (उपस्थित) और पहलेसे भी ज्यादा लबरेज़। रातवाली ज्वारकी बोरीमें मालूम होता था, इस वक़्त तक दाने पिस गये हैं और मुँहसे बातें ऐसे निकल रही हैं, जैसे किसीने सूखा सत्तू गालोंमें भर लिया हो और चूल्हा फूँकनेकी मश्क करना चाहता है। जबड़ा और भी भिच गया था।.....बोलते-बोलते गलेमें फन्दा-सा पड़ा, माफ़ी माँगकर बोले—"ज़रा गला खुश्क हो रहा है, फिर जेबसे बोतल निकालकर बोले—'कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं, अर्क़-गुलाब है ज़रा गला तर कर लूँ। दो घूँट लिये, काग लगाया और जेबमें वापिस। फिर रेलगाड़ी अपनी पूरी रफ़्तारसे चल पड़ी।.....वे शराब पीते हैं और हिमाक़तकी हद तक पीते हैं। पीते वक़्त सिर्फ़ एक बातका खयाल रहता है कि जल्द-अज़-जल्द पियें और बहुत-सी पी लें। जिसका नतीजा यह होता है, कि हालत खराब हो जाती है। यह आगकी बारिश जब मुतवातिर मेदे और जिगरपर होती है, तो सेहतका तो कोई सवाल ही एक सिरेसे नहीं रहता। शायद यही वह सबसे शदीद (भयानक) मर्ज़ है, जो जानको लागू है, जिसने जिस्मको खोखला कर दिया है और दमाग़ पज़मुर्दा हो गया है।

"सवाल करनेपर कि भई इतने सबेरे कैसे आ गये, जवाब मिला कि 'रेडियो स्टेशनसे ताँगा लेकर उस वक़्तसे जो चले तो सुबह तक शहरमें चक्कर लगा रहे थे। ताँगे वालेसे कह दिया था कि भैया तेरा जी चाहे जहाँ ले चल। बीच-बीचमें लोगोंको जगा-जगाकर शर्फ़े-मुलाक़ात भी बख़्शते (भेंट करनेका सौभाग्य भी प्रदान करते) आ रहे थे।

"फिर अर्से तक कोई खबर न मिली....अब जो तीसरी दफ़ा मिली तो

देखा कि कुछ सूरत ही दूसरी है। मालूम होता है कि हज़ारों तूफ़ान और रेले गुज़र गये हैं, जैसे न यह शख़्स कुछ सुनता है और न सोचता है।.... किसी शदीद बीमारीके हमलेने बिलकुल सुन्न कर डाला है। चेहरेको ग़ौरसे देखकर शुबहा होता है कि शायद इस शख़्सको ख़बर ही नहीं कि वह ज़िन्दा है या मर चुका है।.....खानेवालोंके साथ खा लेना, चलते देखकर चल पड़ना, बैठे देखकर बैठ जाना और रुख़सत होते देखकर उनके पीछे-पीछे सरक जाना। अदम और वजूद (विनाश और अस्तित्व) कुछ एक ही जैसा। जिस्म तो मौजूद है, मगर आगे सूराग़ नहीं मिलता कि दूसरे लवाज़मात कहाँ भटक रहे हैं। मुशाअ़रोंमें खड़ा कर दिया तो हाथ सूखे पत्तोंकी तरह, आवाज़ गोया कोसोंसे गिरती-पड़ती चली आ रही है। दाद देते जी डरता है कि कहीं सचमुच स्टेजसे नीचे न गिर पड़ें।"[1]

अव्वल तो नाकामयाब इश्क़ ही घुनके कीड़ेकी तरह शरीरको खोखला करता रहता है—

इश्क़ आदममें नहीं कुछ छोड़ता
हौले-हौले कोई खा जाता है जी

—मीर

उसपर भी शराबकी लत, गोया पत्नीके कर्कश स्वभावसे बचनेके लिए डायनके घरमें शरण लेनेकी हिमाक़त।

कसरते-बादा रंग लाती है
आदमीको लहू रुलाती है

—'जोश' मलीहाबादी

---

१. मजाज़ पृ० २८-३४।

मजाज आशिक़ और मैख्वार हो नहीं, बदक़िस्मतीसे बे-रोज़गार भी थे। कभी रेडियो-विभागमें, कभी किसी लायब्रेरीमें मुलाज़मत मिली भी तो वहाँ ज़्यादा नहीं टिक पाये। बेकारी हमेशा उनके पीछे छायेकी तरह साथ लगी रही। उसी दुखद स्थितिमें मजाज़ने यह नज़्म कही—

आवारा

[१५ में-से ६]

शहरकी रात और मैं नाशादो-नाकारा[1] फिरूँ ?
जगमगाती जागती सड़कों पै आवारा फिरूँ ?
ग़ैरकी बस्ती है कब तक दर-ब-दर मारा फिरूँ ?
ऐ ग़मे-दिल! क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल! क्या करूँ ?

रास्तेमें रुककें दम लूँ, यह मेरी आदत नहीं
लौटकर वापिस चला जाऊँ मेरी फितरत[2] नहीं
और कोई हमनवा[3] मिल जाये यह क़िस्मत नहीं
ऐ ग़मे-दिल ! क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल ! क्या करूँ

जीमें आता है यह मुर्दा चाँद-तारे नोच लूँ
इस किनारे नोच लूँ और उस किनारे नोच लूँ
एक-दोका ज़िक्र क्या सारेके-सारे नोच लूँ
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?

---

१. दुखी और बेकार, २. स्वभाव, ३. साथी ।

मुफ़लिसी और यह मज़ाहिर[1] हैं, नज़रके सामने
सैकड़ों सुल्ताने-जाबिर[2] हैं नज़रके सामने
सैकड़ों-चंगेज़ों-नादिर हैं नज़रके सामने
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?

लेके इक चंगेज़के हाथोंसे ख़ंजर तोड़ दूँ
ताजपर इसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूँ
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़कर तोड़ दूँ
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?

बढ़के इस इन्दर-सभाका साज़ो-सामाँ फूँक दूँ
इसका गुलशन फूँक दूँ उसका शबिस्ताँ फूँक दूँ
तख़्ते-सुल्ताँ क्या मैं सारा क़स्रे-सुल्ताँ[3] फूँक दूँ
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?

चाँद-तारे नोचना तो असम्भव था, काश 'मजाज़'में संघर्षोंसे लड़नेकी ही क्षमता होती। खञ्जर तोड़नेकी बात न सोचकर, अपने इरादोंको मज़बूत कर पाते और इन्दर-सभाके सामान फूँकनेकी कल्पनाके बजाय मदिरालयोंको फूँक देनेका दृढ़ संकल्प करते। जहाँ कि अनेक नौजवानोंकी जवानियाँ बुढ़ापेमें परिवर्तित होती जा रही हैं, तो मजाज़ एक आदर्श उपस्थित कर जाते, किन्तु मजाज़की क्रान्तिकारी कल्पना केवल शाइराना थी। उसका अमली सबूत उनकी ज़िन्दगीमे न था। उनके मन्सूबे तो बहुत बुलन्द थे, मगर उन्हे अमली शक्ल देनेका हौसला न था—

---

१. दृश्य, २. बलवान ज़ालिम, ३. बादशाहका महल।

ग़मे-आर्ज़ूका 'हसरत' ! सबब और क्या बताऊँ ?
मेरी हिम्मतोंकी पस्ती, मेरे शौक़की बुलन्दी

हैरत होती है, 'मजाज़'की ज़िन्दादिली, हाज़िर-जवाबी और फ़िकरे-बाज़ीके क़िस्से सुन-पढ़कर कि वह मुसीबतोंका पहाड़ उठाये-उठाये भी क्योंकर ऐसे लाजवाब जुमले कह पाता था। व्यथा एवं कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए भी सदैव प्रफुल्ल दिखते हुए मुसीबतोंको मुँह चिढ़ाना, चुभती हुई फ़ब्तियाँ कसना, अचूक व्यंग्य-वाण छोड़ना, मजाज़का अदना करिश्मा था और तारीफ़ यह कि जिसपर फ़ब्ती या फिकरा कसा जाता, वह भी बुरा माननेके एवज़ मुक्त कंठसे प्रशंसा किये बिना न रहता। उनकी ज़िन्दादिली एवं हाज़िरजवाबीके कुछ उदाहरण श्री नरेशकुमार 'शाद'-द्वारा संकलित 'सुर्ख़हाशिये'से साभार यहाँ दिये जा रहे हैं—

मजाज़की ज़िन्दादिली

— १ —

"भई मैंने सोचा है, अब मुझे शादी कर ही लेनी चाहिए" उर्दूके एक निहायत नामवर और कुहनामश्क़ शाइरने परेशान-सा होकर कहा।

"तो परेशानीकी क्या बात है, कर लीजिए।" 'मजाज़'ने मशविरा दिया।

"लेकिन बात यह है कि मैं किसी बेवासे शादी करना चाहता हूँ।"

"आप शादी कर लीजिए।" मजाज़ने निहायत संजीदगीसे जवाब देते हुए कहा—"बेवा तो वह बेचारी हो ही जायेगी।"

— २ —

किसी जलसेमें सरदार जाफ़री इक़बालकी शाइरीपर तक़रीर (भाषण) कर रहे थे। दौराने-तक़रीरमें इधर-उधरकी बातोंके बाद जब आपने एक

दम यह 'इंकशाफ़' (प्रकट) किया कि इक़बाल दरअस्ल इश्तराकी नुक़्त नज़र (साम्यवादी दृष्टिकोण) के शाइर थे तो मजमेमें-से कोई मर्दे-मोमिन चीख़ते हुए बोला—

"जाफ़री साहब ! आप यह क्या कुफ़्र फ़र्मा रहे हैं। शाइरेमशरिक़ और इश्तराकियत (पूर्वीय शाइर और साम्यवादी) ! लाहौल वला—आप अपनी इस ख़ुराफ़ातसे इक़बालकी रूहको तकलीफ़ पहुँचा रहे हैं।" और जलसेकी पिछली सफ़ोंसे 'मजाज़' एक फुलझड़ीकी तरह छूटते हुए कहने लगे—

"हज़रत ! तकलीफ़ दरअस्ल आपकी अपनी रूहको पहुँच रही है जिसे आप ग़लतीसे इक़बालकी समझ रहे हैं।"

— ३ —

राजा महमूदाबादने बहुत प्यारसे मजाज़से कहा—"मजाज़ ! अगर तुम मान लो तो एक बात कहूँ !"

मजाज़ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया—"आपका हुक्म सर-आँखोंपर, फ़र्मायें राजासाहब क्या इरशाद है ?"

"मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे लिए दो-सौ रुपये माहवारका वज़ीफ़ा-मुक़र्रर कर दूँ।"

"बड़ा करम है, हुज़ूरका।"

"लेकिन तुम ख़ुदाके लिए यह शराब पीना छोड़ दो।"

"शराब पीना छोड़ दूँ ?" मजाज़ने निहायत हैरानी और बेचारगीसे राजा साहबकी तरफ़ देखते हुए कहा—"फिर आपके दो-सौ रुपये हर माह मेरे किस काम आया करेंगे ?"

— ४ —

मजाज़ तनहा काफ़ी हाउसमें बैठे थे कि एक साहब जो उनसे परिचित न थे, उनकी साथवाली कुरसीपर आ बैठे। कॉफ़ीका आर्डर देकर उन्होंने गुनगुनाना शुरू कर दिया—

अहमक़ोंकी कमी नहीं 'ग़ालिब'
एक ढूँढो हज़ार मिलते हैं।

मजाज़ने उनको तरफ़ देखते हुए कहा—"ढूँढ़नेकी नौबत भी कहाँ आती है हज़रत! ख़ुद-ब-ख़ुद तशरीफ़ ले आते हैं।"

— ५ —

हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यपर एक मुशाअ़रा हो रहा था। दूसरे शाइरोंके साथ जब 'मजाज़' मुशाअ़रा-गाहमें दाखिल होने लगे तो वहाँ दरवाज़ेपर लिखा हुआ था—

"मज़हबके नामपर लड़ना हिमाक़त है।"

मजाज़ने एक लमहा इस इबारतपर नज़र डालनेके बाद कहा—

"और हिमाक़तके नामपर लड़ना मज़हब है।"

— ६ —

'फ़िराक़' गोरखपुरी अपनी रुबाइयातकी दूसरे शाइरोंकी रुबाइयोंसे तुलना करते हुए कह रहे थे—"कहनेको तो रुबाइयाँ 'जोश' साहब भी कहते हैं, लेकिन वे इस सनफ़े-सुख़न (शाइरी-कला) का बाक़ायदा फ़नकी हैसियतसे इस्तेमाल नहीं करते। दरअस्ल वे अपनी शाइरीके मुँहका मज़ा बदलनेके लिए दूसरी चीज़ें लिखते-लिखते कभी-कभार रुबाइयाँ भी लिख देते हैं। उनकी रुबाइयाँ एक लिहाज़से चटनी है और मेरी रुबाइयाँ....."

मजाज़ने 'फ़िराक़'की बात काटते हुए कहा—"एक तरहसे मुरब्बा।"

— ७ —

कोई साहब मजाज़के सामने 'ग़ालिब'का यह शेर पढ़ रहे थे—

शमअ़ जलती है तो उसमें-से धुँआ उठता है
शोलए-इश्क़ सियःपोश हुआ मेरे बाद

मजाज़ने सर धुनते हुए कहा—"सुब्हान अल्लाह, क्या शेर है, जल तो शमअ रही है और धुआँ 'मैं' के अन्दरसे उठ रहा है।"

['शमअ बुझती है' के बजाय 'शमअ जलती है' ग़लत शेर पढ़नेपर मजाज़ने यह व्यंग्य किया था।]

— ८ —

मजाज अपनी नीम दीवानगीके आलममें एक बार किसी व्याख्यान-सभामें पहुँच गये तो किसी परिचितने हैरतज़दा होकर कहा—"हज़रते-मजाज़ ! आप और यहाँ ?"

"जी हाँ" मजाजने बहुत ही संजीदगीसे कहा—"आदमीको बिगड़ते क्या देर लगती है भाई !"

— ९ —

मजाज अपने एक बहुत बेतकल्लुफ़ दोस्त और बहुत बड़े शाइरके यहाँ मेहमान थे। उनके शाइर दोस्तने एक कमसिन बच्चीसे उन्हें मिलाते हुए बताया—"मजाज ! यह मेरी भांजी है, बहुत शरीर है। कल दोपहर-को मैं सो रहा था कि अचानक मेरी आँख खुल गयी। उसी हालतमें क्या देखता हूँ कि मेरे सिराहने खड़ी मेरी पेशानीको सहलाती हुई यह बार-बार कह रही है—पाजी-पाजी।"

मजाजने बच्चीके मासूम चेहरेपर अपनी मुस्कराती हुई नज़रें डालते हुए कहा—"काफ़ी मर्दुम-शनास (आदमी पहचाननेवाली) बच्ची मालूम होती है।"

— १० —

"देखो मजाज ! यह बम्बई वी.टी. का स्टेशन है। कितनी आलीशान इमारत है ? कैसे बड़े-बड़े खुले और रौशन कमरे हैं।"

मजाजके इस दोस्तने अपनी पतली-पतली लम्बी-लम्बी उँगलियोंको फ़ज़ामें लहराकर निहायत जज़्बाती (भावपूर्ण) होते हुए कहना शुरू

किया—"और इसी बम्बईमें हज़ारों बल्कि लाखों मज़दूर कीड़ों-मकोड़ोंकी तरह तंगो-तारीक खोलियोंमें रहनेपर मजबूर हैं। उन्हें रहनेके लिए न जाने ऐसे कमरे कब बनेंगे ?"

मजाज़ने उसीके लबहो-लहजेमें उदास-सा होकर कहा—"हाँ यार साहिर ! तुमने ठीक ही तो कहा है—

रेलवे वालोंने दौलतका सहारा लेकर
हम ग़रीबोंकी मुहब्बतका उड़ाया है मज़ाक़

— ११ —

मजाज़ने एक साहिबे-ज़ौक़ ख़ातून (साहित्यिक महिला) को अपनी शाइरीके बारेमे राय देते हुए बताया मैं डिक्शन (भाषा साहित्य) का मास्टर हूँ।"

"तो फिर जोश मलीहाबादी क्या हैं ?" उस ख़ातूनने महज़ दिल्लगीकी ख़ातिर मजाज़से सवाल किया।

"डिक्शनरीके मास्टर।"

— १२ —

एक मुशाअ़रेमे मजाज़ जब अपनी नीम बदहवासीके आलममें भी अपनी नज़्म—

बोल अरी ओ धरती बोल
राज-सिंहासन डावाँडोल

निहायत ठाठ-बाट और तमतराक़से पढ़ चुके तो उन्हें हंसराज 'रहबर' ने छेड़ते हुए पूछा—

"मजाज़ भाई ! क्या यह नज़्म तुमने शराब पीकर कही थी ?"

"बल्कि कहनेके बाद भी पी थी"—मजाजने तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया।

— १३ —

'मजाज़' और 'फ़िराक़'के दरमियान काफ़ी संजीदा गुफ़्तगू हो रही थी। एकदम फ़िराक़का लहजा बदला और उन्होने हँसते हुए पूछा—

"मजाज़ ! तुमने कबाब बेचने क्यों बन्द कर दिये ?"

"आपके यहाँसे गोश्त आना बन्द जो हो गया।" मजाज़ने उसी संजीदगीसे जवाब दिया।

— १४ —

एक मशहूर शाइरने मजाज़से पूछा—

"मेरी समझमें नहीं आता कि तुमने शेर कहना क्यों छोड़ दिया ?"

मजाज़ने परेशान-सा होकर कहा—

"और मेरी समझमें नहीं आता कि आप बराबर क्यों शेर कहे जा रहे हैं ?"

— १५ —

बम्बईके एक जलसेमें मुल्कराज आनन्दने बहुत लम्बी-चौड़ी तक़रीर शुरू कर दी। उस जलसेमें 'मजाज़' भी मौजूद थे और तक़रीर सुनते-सुनते काफ़ी बेज़ार हो गये थे। आनन्दकी तक़रीरके बाद 'मजरूह' सुल्तानपुरीसे ग़ज़ल सुनानेकी फ़र्माइश की गयी, और मजरूहने अपनी रसीली आवाज़में अपनी वह मशहूर गज़ल सुनायी।

जो समझाते भी आकर वाइज़े-बरहम तो क्या करते।
हम इस दुनियाके आगे, उस जहाँका ग़म तो क्या करते॥

लेकिन मजरूहकी ख़ुश उलहानी भी मजाज़के ज़हनकी फ़िज़ाको पूरे तौरपर न बदल सकी और ग़ज़ल ख़त्म होनेके बाद वह तड़पकर माइकके सामने आकर बोले—

यहाँ तो मुल्कराज आनन्द ही ने बोर कर डाला।
अगर ऐसेमें होते क़ाइदे-आज़म तो क्या करते ?

— १६ —

'जोश' मलीहाबादी बिलउमूम शराब पीते वक़्त टाइमपीस सामने रख लेते हैं, और हर पन्द्रह मिनिटके बाद नया पेग बनाते हैं। लेकिन यह पाबन्दी भी अक्सर औक़ात तीसरे, चौथे, पेगके बाद नज़रे-जाम हो जाती है। एक सुहबतमें उन्होंने पहले पेगका आख़िरी घूँट हलक़मे उँडेलनेके बाद अपने टाइमपीसकी तरफ़ इशारा करते हुए मजाज़से कहा—

"देखो मजाज़ ! मैं कितनी बाक़ायदगीसे शराब पीता हूँ। अगर तुम भी घड़ी सामने रखकर पिया करो तो बद् एहतियातीसे महफ़ूज़ रहो।"

और मजाज़ उसी वक़्त चमकते हुए बोले—

"घड़ी तो क्या 'जोश' साहब ! मेरा बस चले तो घड़ा सामने रखकर पिया करूँ।"

— १७ —

आमोंकी एक दावतमें आम चूसते-चूसते सरदार-जाफ़रीने मजाज़से कहा—

"कैसे मीठे आम हैं मजाज़ ! रूसमें और तो हर चीज़ मिल जाती होगी। लेकिन ऐसे मीठे आम वहाँ कहाँ ?"

"रूसमें आमोंकी क्या ज़रूरत है ?" मजाज़ने बिला ताम्मुल जवाब दिया। "वहाँ अवाम (जनता) जो हैं।"

— १८ —

हैदराबाद दकनमें 'क़ाफ़' (क़) की जगह आम तौरपर लोग 'खे' (ख) बोलते हैं।

किसी हैदराबादीने 'मजाज़'को एक दावतपर मदऊ करते हुए कहा—

"मजाज़ साहब ! कल मेरी फ़लाँ अज़ीज़:की तख़्रीब[1] (तक़रीब) है। ग़रीबखानेपर तशरीफ़ लाइए।"

मजाज़ने खौफ़ज़दः होकर जवाब दिया।

"नहीं साहब ! मुझसे यह दर्दनाक मंजर नहीं देखा जायेगा।"

— १९ —

किसीने एक बार इसरारुलहक़ 'मजाज़' के सामने अल्लामा इक़बालका यह मिसरा पढ़ा—

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे-मजाज़में

तो मजाज़ने अपनी मखसूस शोख मुस्कराहटके साथ उसी वक़्त यह जुमला कस दिया—

"और जब हक़ीक़ते-मुन्तज़िर मजाज़के लिबासमें नज़र आयी तो कोई पहचाननेवाला नहीं रहा !"

— २० —

'ग़ालिब'के इस मशहूर शेर को—

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं
आज 'ग़ालिब' ग़ज़लसरा न हुआ

'मजाज़' ने अपने एक बेतकल्लुफ़ और ख़ुशमज़ाक़ दोस्तके यहाँ जाकर बुलन्द आवाज़से इस तरह पढा—

कुछ तो खाओ कि लोग कहते हैं,
आज 'ग़ालिब'ने कुछ नहीं खाया

---

१. तख़्रीबके माइने विध्वंस करना, बरबाद करना है, 'क़' के बजाय 'ख' के प्रयोगने वाक्यको उपहासास्पद बना दिया है। कोई भी पिता अपनी पुत्रीके लिए यह शब्द इस्तेमाल नहीं करेगा।

इत्तिफ़ाक़से 'मजाज़' के उस दोस्तके यहाँ पहले भी एक शाइर महमान बनकर वारिद हो चुके थे और जब 'मजाज़' वहाँ पहुँचे तो वह बिस्तरे-इस्तराहतपर दराज़ थे। साहबे-खानाने इन सोये हुए शाइरकी तरफ़ इशारा करते हुए मीरतकी 'मीर' का यह शेर—

सिरहाने मीरके आहिस्ता बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

निहायत धीमी आवाज़से इस तरमीमके साथ पढ़ दिया—

सिरहाने 'मीर' के आहिस्ता बोलो
नहीं तो उठके फिर खाने लगेगा

— २१ —

मुशाअ़रेसे पहले खानेकी दावत थी। ज़्यादातर शुअ़रा खानेसे फ़ारिग़ होकर मुशाअ़रेके पण्डालमें पहुँच चुके थे। लेकिन 'मजाज़' और 'जज़्बी' मसरूफ़े-खुर्दनोश (खानेमें व्यस्त) थे।

दफ़अ़तन मुंतज़मीनमें-से चन्द लोगोंने जज़्बीके पास आकर दरख़्वास्त-की कि हाज़रीन मुशाअ़रा निहायत बेताबीसे उनका इन्तज़ार कर रहे हैं। जज़्बीने कहा—

"भैया ! अभी चलता हूँ ज़रा-सा रायता खा लूँ" और मजाज़ इतनी सी बात सुनते ही एक दम संजीदा होकर कहने लगा—

"जज़्बी, इस रायतेके मज़मूनको 'इक़बाल' अपने यहाँ नज़्म करता तो कुछ ऐसे करता—

हैफ़ शाहीं[1] रायता पीने लगा

और 'अख़्तर' शीरानीका मिसरा होता—

रायता जो रुख़े-सलमापै[2] बिखर जाता है।

---

१. बाज पक्षी, २. सलमा प्रेयसीके कपोलोंपर।

और 'जोश' यूँ कहते—

रायता खाकर वह शाहे-कजकलाहाँ आ गया।

और 'फ़िराक़' यह अन्दाज़ इख्तियार करते—

टपक रहा है, धुँधलकोंसे रायता कम-कम

और फ़ैज अहमद 'फ़ैज़' लिखता—

तेरी अंगुश्ते-हिनाईमें[1] अगर रायता आये
अनगिनत ज़ायके यलग़ार करें मिस्ले-रक़ीब[2]

और मैं ख़ुद यूँ नज़्म करता—

बिन्नते-शबे-देगे-[3]जुनूँ रायताकी जाई हो
मेरी मग़मूम जवानीकी तवानाई[4] हो

और तुम्हें तो वाक़ई यही कहना चाहिए था—

अभी चलता हूँ ज़रा रायता खा लूँ तो चलूँ

— २२ —

"मैं मुतवातिर कई सालोंसे शेर कह रहा हूँ, और यक़ीनन कई मशहूर शाइरोंसे अच्छे शेर कहे हैं। उर्दू-शाइरीमें बे-शुमार कामियाब तजरुबे कर चुका हूँ। मेरे मुतअद्द-मंज़ूम शाहकार उर्दू-अदबमें एक तारीख़ी इज़ाफ़ेकी हैसियत रखते हैं। लेकिन उसके बावजूद जब यह नक़्क़ाद हज़रात (आलोचक) उर्दू-शाइरोंका जायज़ा लेते हैं, तो मुझे नज़रन्दाज़ कर देते हैं।"—'सलाम' मछलीशहरीने बहुत ही जज़्बाती अन्दाज़में उदास होकर मजाज़से गिला करते हुए कहा।

---

१. मेहदी लगी उँगलियोंमें, २. शत्रुओंकी तरह आक्रमण करें, ३. उन्मादी देगरूपी रात्रिकी पुत्री, ४. रंजीदा, ५. शक्ति।

'मजाज़'ने उसे ढारस देते हुए कहा—

तुम कोई ग़म न करो डीअर सलाम !

तुम्हारी एक-एक नज़्म दुनिया भरकी मुतमद्दुन ज़बानों—मिसलन रूसी, चीनी, जापानी, अँगरेज़ी और फ़्रांसीसी ज़बानमें तर्जुमा की जायेंगी और फिर"—

"और फिर?" 'मजाज़'के चेहरेपर मुस्कराहटकी झालर-सी तन गयी।

मैं "और फिर उन ज़बानोंसे तुम्हारी नज़्मोंका उर्दू-नज़्ममें तर्जुमा करूँगा और फिर यह दुनियाए-अदब और यह तमाम नक़्क़ाद तुम्हारे सही मर्तबे और तुम्हारी अज़मतको तस्लीम करेंगे।"

— २३ —

'जोश'ने 'मजाज़'से पूछा—

"मजाज़ ! क्या तुम्हारे वालिदैन तुम्हारी रिन्दाना बदएत्तदालियों (सुरापानके ऐबोंसे) परेशान नहीं होते ?"

'मजाज़'ने जवाब दिया।

"लोगोंकी औलाद सआ़दतमन्द (आज्ञाकारी) होती है जोश साहब!" "लेकिन ख़ुशक़िस्मतीसे मेरे वालिदैन बेहद सआ़दतमन्द (भाग्यशाली) हैं।"

— २४ —

'जोश', 'फ़िराक़' और 'मजाज़' एक रात तीनों कहीं हमप्याला थे। जोशने तीसरा पेग पीनेके बाद अपने मख़सूस (ख़ास) अफ़ग़ानी जलालमें आते हुए कहा—

"माशाअल्लाह हम अभी तक जवान हैं। हमारी उम्र पच्चीस-तीस सालके लगभग होगी। क्यों फ़रकुए !"

"बेशक।" फ़िराक़ने पुरज़ोरताईद करते हुए कहा—"ज़ाहरी शबाहतसे क़तअ़ मैं भी अठारह-बीस सालसे ज़्यादा उम्रका नहीं हूँ।"

"जी हाँ, जी हाँ।" जोशने मुस्कराती हुई नज़रोंसे फ़िराक़के पोपले चेहरेका जायज़ा लेते हुए कहा।

'मजाज़' निहायत मासूमियतसे 'जोश' और 'फ़िराक़' को मुतवज्जः करते हुए बोला—"और इस हिसाबसे मैं तो अभी पैदा भी नहीं हुआ।"

— २५ —

एक निहायत मशहूर ज़बानदान और पुख़्ता मश्क़ शाइर जो अपनी पीराना साली (बुढ़ापे) के बावजूद मुशाअ़रोंमें इन्तहाई शोख़ी और तर्रारीसे अपना कलाम पढ़ते हैं। एकबारगी किसी मुशाअ़रेमे अपनी ग़ज़ल सुना रहे थे कि बार-बारकी जुम्बिशसे उनके नक़ली दाँत डायसपर गिर पड़े। 'मजाज़'ने यह मंज़र देखकर बुलन्द आवाज़से कहा—

"सुनिए हज़रात! उस्ताद साहब ख़ालिस ज़बानका शेर इरशाद फ़र्मा रहे हैं।"

— २६ —

किसी मुशाअ़रेमें जब 'मजाज़' ग़ज़ल सुना रहा था तो अचानक सामईन (श्रोताओं) मे-से एक ख़ातूनकी गोदमे शीरख्वार (दूध पीता) बच्चा ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाने लगा।

'मजाज़' अपनी ग़ज़लका शेर अधूरा छोड़ते हुए हैरान होकर पूछने लगा—

नक़्शे-फ़रियादी है किसकी शोख़िए-तहरीरका

— २७ —

किसी फ़िल्मी अदीबने एन० डी० मधोकसे 'मजाज़'का तआर्रुफ़ कराते

हुए कहना शुरू किया—"आपसे मिलिए, आप ही हैं इसरारुलहक़ 'मजाज़'। उर्दूके बहुत मशहूर और मक़बूल शाइर हैं। वह नज़्म—"ऐ ग़मेदिल क्या करूँ" इन्हींकी लिखी हुई है।"

मजाज़ने मधोकसे मुखातिब होकर बहुत सादगीसे कहा—

"साहब, आप मुतलक़ इनकी बातका ऐतबार न कीजिए। शाइर तो आप ही हैं। ख़ाकसार तो उल्लूका पट्ठा है।"

— २८ —

रियासत टौंकमें एक मुशाअ़रा हो रहा था। मुक़ामी शुअ़राको पढ़वाते वक़्त मुन्तज़िम मुशाअ़राको हर बार यही कहना पड़ता था कि अब फलाँ टौंकवी साहब और अब फ़लाँ टौंकवी हज़रात अपने कलामे-बलाग़त निज़ामसे आपको महज़ूज़ फ़र्मायेंगे।

'मजाज़'ने कुछ देर तक बरदाश्त करनेके बाद झुँझलाकर कहा—

"यह मुशाअ़रा है या नौटंकी ?"

— २९ —

'मजाज़'को शराबके नशेमें धुत देखकर उनके एक अदीब दोस्तने कहा—"मजाज़ भाई ! इतना न पिया करो मर जाओगे" 'मजाज़'ने लड़खड़ाते हुए उसी वक़्त यह शेर कह दिया—

मौत भी इस लिए गवारा है—
मौत आता नहीं है, आती है

— ३० —

मजाज़ जब राँचीके दमाग़ी शिफ़ाखानेसे कुछ-माह बाद लौटा तो किसीने पूछा—"मजाज़ साहब ! क्या वाक़ई आपकी अक़्ल ज़ायल हो गयी थी ?"

'मजाज़'ने सर्द आह भरते हुए जवाब दिया—"बिरादर ! अक़्ल थी ही कहाँ जो ज़ायल होती। अक़्ल होती तो इस मुल्कमे शाइरी करते।"

'मजाज़'के स्वाभिमानने भी उसकी परेशानियोंको बहुत बढ़ाया। चाप-लूसी, जी हुज़ूरी, घौंस सहन करना तो उसके ख़मीरमें था ही नहीं। काम निकलनेके ऐसे अवसरोंपर जब कि मस्लहतन चुप रहना चाहिए या बातको नज़रन्दाज़ कर देना चाहिए, वह जान-बूझकर बने-बनाये कामको बिगाड़ देता था।

स्वाभिमानी 'मजाज़'

द्वितीय महायुद्धके दौरानमे उसके वे साहित्यिक मित्र, जो अँगरेज़ोंके विरुद्ध दिन-रात अनर्गल प्रलाप-करते हुए नहीं थकते थे। जर्मन-रूस युद्ध छिडते ही अँगरेजोके हिमायती बन गये और उनकी मुलाज़-मतोंमें चले गये तो मजाज़के सामने भी उसके मित्रोंने सरकारी मुलाज़-मत कर लेनेका प्रस्ताव रखा। लेकिन उसने बड़ी ख़ूबीसे इन्कार कर दिया। इन्कार ही नहीं किया, बल्कि मुलाज़मत करनेवाले ऐसे तरक्की-पसन्द अदीबोंकी रेडियोके मुशाअ़रेमें हिजो भी शुरू कर दी—

शाइर हूँ और अर्मी[1] हूँ उरूसे-सुख़न[2] का मैं
कर्नल नहीं हूँ, ख़ानबहादुर नहीं हूँ मैं

'मजाज़'की आवाज़ रेडियोवालोंने फ़ौरन दबा दी और सदैवके लिए रेडियोके प्रोग्राम उसके लिए वर्जित कर दिये गये। उसी 'मजाज़'के लिए, जिसने १९३५ई० मे दिल्लीमे रेडियो स्टेशन खुलनेपर कार्य्य-क्रमका प्रारम्भ इस गज़लसे किया था —

सारा आलम गोशबर आवाज़[3] है,
आज किन हाथोंमें दिलका साज़[4] है ?
हाँ ज़रा जुरअत दिखा ऐ जज़्बे-दिल[5] !
हुस्नको पर्दे पै अपने नाज़[6] है

१. रक्षक, २. कवितारूपी दुल्हनका, ३. आवाज़की आहटपर कान लगाये हुए, ४. वाद्ययन्त्र, ५. हृदयके भाव, ६. अभिमान।

हमनशीं[1] ! दिलकी हक़ीक़त[2] क्या कहूँ ?
सोज़में[3] डूबा हुआ इक साज़ है
आपकी मख़मूर[4] आखोंकी क़सम
मेरी मैख़्वारी[5] अभी तक राज़[6] है,
हँस दिये वह मेरे रोनेपर, मगर
उनके हँस देनेमें भी इक राज़[7] है
छिप गये वे साज़े-हस्ती[8] छेड़कर
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है
सारी महफ़िल जिस पै झूम उट्ठी 'मजाज़' !
वह तो आवाज़े-शिकिस्ते-साज़[9] है

दोस्तोंके बहुत दबाव डालने पर कि रेडियो अधिकारीसे अपनी ग़लतीके लिए अफ़सोस ज़ाहिर करके सुलह-सफ़ाई कर लो, तो आपने क्षमा याचनाके लिए जो नज़्म कही, उसका मतला यह था—

कर्नल सही मैं ख़ानबहादुर सही 'मजाज़' !
अब दोस्तोंकी ज़िद है तो शाइर नहीं हूँ मैं

यह तो एक घटना विदेशी शासन-कालकी है। अपनी राष्ट्रीय सरकारने भी कुछ लोगोंके सुझानेपर दो-सौ रुपये मासिककी सहायता देनेकी रज़ामन्दी ज़ाहिर कर दी थी। हितैषियोंने मासिक-सहायता-वृत्तिका फ़ार्म स्वयं ही भरकर 'मजाज़'को हस्ताक्षर करनेके लिए कहा। उसने दोस्तोंकी

---

१. मित्र, साथी, २. वास्तविकता, हालत, ३. तपिशमें, ४. नशीली, ५. मदिरापान, ६. गुप्त, ७. भेद, ८. हृदय-वीणा, ९. टूटे हुए वाद्य यन्त्रकी आवाज़।

दिल-शिकनीके ख्यालसे इन्कार तो नहीं किया, मगर दस्तखत भी नही किये। फ़ार्म लेकर अपने पास रख लिया।[1]

सन् १९३२ के क़रीब 'मजाज़'ने शाइरी प्रारम्भ की और तीन-चार वर्षोंमें ही उनकी शाइरी ख्यातिकी सीमाओंको छूनेका प्रयास करने लगी। जब वे आगरेमें एफ. ए. के विद्यार्थी थे, तब 'फ़ानी' बदायूनी भी वही क़याम फ़र्माते थे। शुरू-शुरूमे 'मजाज़'ने उन्हींसे मशवरए-सुखन लिया, किन्तु यह क्रम अधिक दिनों तक न चल सका। एक बार जब मजाज़ संशोधनके लिए पहुँचे तो उस्तादने स्पष्ट कह दिया—"मियाँ! तुम्हारी ग़ज़लोंमें निशात (आनन्द) का रंग है, मेरा ग़म तुम्हारी जवानी और निशातको रौंद डालेगा। इस लिए आइन्दा मुझसे इस्लाह न लिया करो, सिर्फ अल्फ़ाज़ और तरकीबोंका इश्तिबाह (भ्रम) दूर कर लिया करो, या एकाध मिसरा सुना दिया करो।"

इन्क़िलाबी और रोमानी शाइरी[2]

'फ़ानी'[3] और 'मजाज़'के स्वभावमें पृथ्वी-आकाश-जैसा अन्तर था। 'फ़ानी' यासयातके इमाम (निराशावादी कवियोंके नेता) और 'मजाज़' रोमानी शाइर थे। अतः निभाव अधिक सम्भव भी न था। 'फ़ानी'से छुटकारा मिलनेपर 'मजाज़'ने फिर किसीसे संशोधन लेना आवश्यक न समझा और हृदयगत भावोंको अपनी इच्छानुसार नज़्म करने लगे।

---

१. मुहम्मद रज़ा-द्वारा लिखित और 'नकूश' मार्च १९५६में प्रकाशित संस्मरणका संक्षिप्त भाव, २. अँगरेज़ीका 'रोमांस' शब्द, जिसके माइने हृदयमे उमंग और उत्साह भरना, प्रेम-साधना, प्रेममय वातावरण, प्रेमालाप आदि है, उर्दूमें 'रोमान' बनाकर अपना लिया गया है। अतः रोमानी शाइरीसे आशय है—उमंग एवं आनन्दपूर्ण शाइरी, प्रेमालापकी शाइरी, ३. 'फ़ानी' बदायूनीका विस्तृत परिचय एवं कलाम 'शेरो-सुखन'के तीसरे भागमे दिया जा चुका है।

बी. ए. करनेके लिए मजाज़ने अलीगढ़ यूनिवर्सिटीमें दाखिला लिया। वहाँ उनकी शाइरीका अच्छा विकास हुआ। वहींसे उनकी ख्यातिकी सुगन्ध फैलती गयी। अलीगढ़के रंगीन वातावरणसे उनकी रोमानी शाइरीको तो चार चाँद लगे ही, वहीं अध्ययन करनेवाले राष्ट्रीय, साम्यवादी और समाजवादी विचारधारा रखनेवाले कुछ सहपाठियोके संसर्गके कारण उनकी शाइरीमें इन्क़िलाबी (क्रान्तिकारी) भाव भी प्रस्फुटित होने लगे। यहाँ कुछ ऐसी नज़्मोंके अंश दिये जा रहे है—

इन्क़िलाब

[३४ मेंसे ११]

फेंक दे ऐ दोस्त ! अब भी फेंक दे अपना रुबाब[1]
उठने ही वाला है कोई दममें शोरे-इन्क़िलाब
आ रहे हैं जंगके बादल वह मँडलाते हुए
आग दामनमें छुपाये ख़ून बरसाते हुए
कोहो-सहरामें[2] ज़मींसे ख़ून उबलेगा अभी
रंगके बदले गुलोंसे ख़ून टपकेगा अभी
बढ़ रहे हैं, देख वह मज़दूर दर्राते हुए
इक जुनूँ-अंगेज़ लै में जाने क्या गाते हुए
सरकशीकी तुन्द आँधी दम-ब-दम चढ़ती हुई
हर तरफ़ यलग़ार[3] करती, हर तरफ़ बढ़ती हुई
भूकके मारे हुए इंसाँकी फ़रियादोंके साथ
फ़ाक़ा मस्तोंके जिलोंमें[4], ख़ानाबरबादोंके साथ

---

१. वाद्ययन्त्र, २. पर्वत और रेगिस्तानमें, ३. आक्रमण, ४. नेतृत्वमें।

ख़त्म हो जायेगा यह सरमायादारीका निज़ाम[1]
रंग लानेको है मज़दूरोंका जोशे-इन्तक़ाम[2]
गिर पड़ेंगे ख़ौफ़से ईवाने-इशरतके सतून[3]
ख़ून बन जायेगी शीशेमें शराबे-लालागूँ[4]
ख़ूनकी बू लेके जंगलसे हवाएँ आयेंगी
ख़ूँ-ही-ख़ूँ होगा निगाहें जिस तरफ़ भी जायेंगी
तोड़ कर बेड़ी निकल आयेंगे ज़िन्दाँसे असीर[5]
भूल जायेंगे इबादत[6] ख़ानक़ाहोंमें फ़क़ीर
और इस रंगे-शफ़क़में[7] बा हज़ाराँ आबो-ताब
जगमगायेगा वतनकी हुर्रियतका आफ़ताब[8]

नौजवान खातूनसे

[१२ मे-से ८]

हिजाबे-फ़ित्नापरवर[9] अब उठा लेती तो अच्छा था
खुद अपने हुस्नको पर्दा बना लेती तो अच्छा था
तेरी नीची नज़र ख़ुद तेरी इस्मतकी मुहाफ़िज़[10] है
तू इस नश्तरकी तेज़ी आज़मा लेती तो अच्छा था
दिले-मजरूहको[11] मजरूहतर करनेसे क्या हासिल
तू आँसू पोंछकर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था.

---

१. पूँजीवादी व्यवस्था, २. प्रतिशोधकी भावना, ३. भोगविलासके महलोंके स्तम्भ, ४. लालमदिरा, ५. क़ैदखानेसे कैदी, ६. नमाज़ पढ़ना, उपासना करना, ७. उषामे, ८. स्वतन्त्रता-सूर्य्य, ९. कयामत ढाने वाली शर्मो-हया, पर्दा, १०. शीलकी रक्षक, ११. घायल दिलको।

अगर खिलवतमें[1] तूने सर उठाया भी तो क्या हासिल !
भरी महफ़िलमें आकर सर झुका लेती तो अच्छा था
तेरे माथेका टीका मर्दकी क़िस्मतका तारा है
अगर तू साज़े-बेदारी[2] उठा लेती तो अच्छा था
अयाँ[3] है दुश्मनोंके ख़ंजरोंपर ख़ूनके धब्बे
उन्हें तू रंगे-आरिज़से[4] मिला लेती तो अच्छा था
सिनाएँ[5] खींच ली हैं, सरफिरे बाग़ी जवानोंने
तू सामाने-जराहत[6] अब उठा लेती तो अच्छा था
तेरे माथे पै यह आँचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन
तू इस आँचलसे इक परचम[7] बना लेती तो अच्छा था

मुझे जाना है इक दिन !

[८ में-से २]

अभी तो हुस्नके पैरों पै है जब्रे-हिनाबन्दी
अभी है इश्क़पर आईने-फ़रसूदाकी पाबन्दी
अभी हावी है, अक़्लो-रूहपर झूटी ख़ुदाबन्दी
मुझे जाना है, इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़से आख़िर

---

१. एकान्तमे, अन्तःपुरमे, २. जागरणका वाद्य, ३. प्रकट, जाहिर ४. कपोलोके रंगसे, ५. तीर, ६. सर्जरीका सामान, घायलोके लिए ज़रूरी सामान, ७. झण्डा, ८. सौन्दर्यके पाँव मेहदी लगानेको मजबूर है, ९. इश्क़, पुराने बन्धनोंमें जकड़ा हुआ है ।

अभी तो फ़ाक़ाकश[1] इंसानसे आँखें मिलाना है
अभी झुलसे हुए चहरों पै अश्के-ख़ूँ बहाना है
अभी पामाले-जौर आदमको[2] सीनेसे लगाना है
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़से आख़िर

आहंगे-नौ

ऐ जवानाने-वतन ! रूह जवाँ[3] है तो उठो
आँख इस महशरे-नौकी निगराँ[4] है तो उठो
ख़ौफ़े-बे हुरमती-ओ-फ़िक्रे ज़ियाँ[5] है तो उठो
पासे-नामूसे-निगाराने-जहाँ[6] है तो उठो
उट्ठो नक़्क़ारए-अफ़लाक[7] बजा दो उठकर
एक सोये हुए आलमको[8] जगा दो उठ कर

एक-इक सिम्तसे शबख़ूनकी[9] तैयारी है
लुत्फ़का वादा है, और मश्क़े-जफ़ाकारी[10] है
महफ़िले-ज़ीस्तपै फ़र्माने-क़ज़ा[11] जारी है
शहर तो शहर हैं गावों पै भी बमबारी है

१. भूखे, २. अत्याचारग्रसित मानवको, ३. दिल जवान, ४. नवीन प्रलयकी निरीक्षक, ५. बेइज्ज़ती और बरबादीकी चिन्ता, ६. दुनियाके सौन्दर्य्य और शीलकी रक्षा करना चाहते हो तो, ७. गगनभेदी रणभेरी, ८. विश्वको, ९. शत्रुओंके आक्रमणकी, १०. वायदे सुख-चैन (स्वराज्य) के हैं, मगर नये-नये ज़ुल्म ढाये जा रहे है, ११. ज़िन्दगीकी महफ़िलमें मौतके सन्देश आ रहे हैं।

यह फ़ज़ामें जो गरजते हुए तैयारे[1] हैं
बरसरे-दोशे-हवा मौतके हरकारे[2] हैं

उस तरफ़ हाथोंमें शमशीरें-ही शमशीरें हैं
इसतरफ़ ज़हनमें तब्दीरें-ही-तब्दीरें[3] हैं
ज़ुल्म पै ज़ुल्म हैं ताज़ीरों पै[4] ताज़ीरें हैं
सर पै तलवार है और पाँवमें ज़ंजीरें हैं

एक हो एक कि हंगामए-महशर[5] है यही !
असए-ज़ीस्तका हंगामए-अकबर[6] है यही !

अपनी सरहद पै जो अग़ियार[7] चले आते हैं
शोला-अफ़शाँ-ओ-शररबार[8] चले आते हैं
ख़ून पीते हुए सरशार[9] चले आते हैं
तुम जो उठ जाओ तो बेकार चले आते हैं

ख़ूँ जो बह निकलता है,उस ख़ूँमें बहा दो इनको
उनकी खोदी हुई ख़न्दक़में गिरा दो इनको

तुम हो ग़ैरतके अमीं तुम हो शराफ़तके अमीं
और यह ख़तरेमें हैं, एहसास तुम्हें है कि नहीं ?
यह दरिन्दे[10] यह शराफ़तके पुराने दुश्मन[11]
तुम कि हो हामिले-आदाबो–रवायाते कुहन[12]

---

१. आकाशमे वायुयान, २. हवाके कन्धोंपर मृत्युके सन्देश देनेवाले है, ३. मस्तिष्कमे उपाय सोचे जा रहे है, ४. सज़ाएँ, ५. प्रलयके दिन, ६. जीवनमे महान् युद्ध, ७. शत्रु, ८. आग बरसाते हुए, ९. मस्त, १०. हिंसक पशु, ११. भद्रताके शत्रु, १२. सभ्यता और संस्कृतिसे पूर्ण

ख़ित्तए-पाकमें[1] ज़िनहार[2] न आने पायें!
आही जायें जो यह ज़िन्दा तो न जाने पायें

मरदो-ज़न[3] पीरो[4]-जवाँ इनके मज़ालिमके[5] शिकार
ख़ूने-मासूममें डूबी हुई इनकी तलवार
यह क़यामतके हविसनाक[6] ग़ज़बके ख़ूँख़्वार
इनके इसियाँकी[7] न हद है, न जरायमका[8] शुमार
यह तरहहुमसे[9] न देखेंगे किसीकी जानिब,[10]
इनकी तोपोंका दहन[11] कर दो इन्हींकी जानिब

यह तो हैं फ़ित्नए-बेदार[12] दबा दो इनको
यह मिटा देंगे तमद्दुनको[13] मिटा दो इनको
फूँक दो इनको, झुलस दो कि जला दो इनको
शाने-शायाने-वतन[14] हो यह बता दो इनको
याद हो तुमको किन असलाफ़की[15] तुम यादें हो?
तुम तो ख़ालिदके पिसर भीमकी औलादें हो

तुम तो तनहा[16] भी नहीं हो कई दमसाज़[17] भी हैं
रूसके मर्द भी हैं, चीनके जाँबाज़ भी हैं
कुछ न कुछ साथ फिरंगिए-फ़सूँ साज़ भी हैं
और हम जैसे बहुत ज़मज़मए-परवाज़[18] भी हैं

१. पवित्र देशमें, २. कदापि, ३. पुरुष-स्त्री, ४. वृद्ध और युवक, ५. अत्याचारोंके, ६. कामी, ७. पापोंकी, ८. अपराधोंका, ९. दयादृष्टिसे, १०. तरफ़, ११. मुँह १२. उठते हुए उपद्रव, १३. सभ्यताको, १४. अपने देशकी शानके अनुरूप, १५. पुराने बुजुर्गोंकी, १६. अकेले, १७. सहयोगी, १८. शाइर।

दूर इंसानके सरसे यह मुसीबत कर दो
आग दोज़ख़की बुझा दो उसे जन्नत कर दो

तआ़र्रुफ़

[१९ मैं-से-८]

ख़ूब पहचान लो इसरार[1] हूँ मैं
जिंसे-उल्फ़तका तलबगार[2] हूँ मैं
ऐब जो हाफ़िज़ो-ख़ैय्याममें[3] था
हाँ कुछ उसका भी गुनहगार[4] हूँ मैं
ज़िन्दगी क्या है गुनाहे-आदम[5]
ज़िन्दगी है तो गुनहगार[6] हूँ मैं
दैरो-काबामें मेरे ही चर्चे
और रुसवा सरे-बाज़ार हूँ मैं
कुफ़्रो-इलहादसे[7] नफ़रत है मुझे
और मज़हबसे भी बेज़ार[8] हूँ मैं
अहले-दुनियाके लिए नंग[9] सही
रौनक़े-अंजुमने-यार[10] हूँ मैं

---

१. इसरारुलहक़, २. प्रेमका इच्छुक, ३. फ़ारसीके मशहूर शाइर हाफ़िज़ और ख़ैयाम सुरासेवी थे, ४. मै भी सुरासेवी हूँ, ५. मानव-भूल, ६. अपराधी, ७. नास्तिकता और अधार्मिकतासे, ८. परेशान, ९. बदनाम, अकर्मण्य, १०. यारोंकी महफ़िलकी शोभा ।

हूरो-ग़िलमाँका यहाँ ज़िक्र नहीं
नौए-इंसाँका परिस्तार[1] हूँ मैं
इक लपकता हुआ शोला[2] हूँ मैं
एक चलती हुई तलवार हूँ मैं

नज़रे-दिल (उनके नाम)

अपने दिलको दोनों आलमसे उठा सकता हूँ मैं
क्या समझती हो कि तुमको भी भुला सकता हूँ मैं
कौन तुमसे छीन सकता है मुझे, क्या वहम है
ख़ुद ज़ुलैखासे[3] भी तो दामन बचा सकता हूँ मैं
दिलमें तुम पैदा करो पहले मेरी-सी जुरअतें
और फिर देखो कि तुमको क्या बना सकता हूँ मैं
दफ़्न[4] कर सकता हूँ सीनेमें तुम्हारे राज़को[5]
और तुम चाहो तो अफ़साना बना सकता हूँ मैं
मैं क़सम खाता हूँ अपने नुत्क़के एजाज़की[6]
तुमको बज़्मे-माहो-अंजुममें[7] बिठा सकता हूँ मैं
सर पै रख सकता हूँ ताजे-किशवरे-नूरानियाँ[8]
महफ़िले-ख़ुर्शीदको[9] नीचा दिखा सकता हूँ मैं

---

१. नव मानवताका पुजारी, २. चिंगारी, अंगारा, ३. मिस्रकी एक मलिका थी जो अपने ज़रख़रीद ग़ुलाम यूसुफ़पर आसक्त हो गयी थी, ४. छिपा सकता हूँ, ५. भेदको, ६. वाणीके प्रभावकी, ७. चन्द्र-नक्षत्रोंकी सभामें ८. राष्ट्रका आभायुक्त मुकुट, ९. सूर्यकी सभाको।

मैं बहुत सरकश हूँ लेकिन इक तुम्हारे वास्ते
दिल बिछा सकता हूँ मैं, आँखें बिछा सकता हूँ मैं
तुम अगर रूठो तो इक तुमको मनानेके लिए
गीत गा सकता हूँ मैं, आँसू बहा सकता हूँ मैं
जज़्ब[1] है दिलमें मेरे दोनों जहाँका सोज़ो-साज़[2]
बरबते-फ़ितरतका हर नग़मा[3] सुना सकता हूँ मैं
तुम समझती हो कि हैं पर्दे बहुत-से दरमियाँ
मैं यह कहता हूँ कि हर पर्दे उठा सकता हूँ मैं
तुम कि बन सकती हो हर महफ़िलमें फ़िरदौसे-नज़र[4]
मुझको यह दावा कि हर महफ़िल पै छा सकता हूँ मैं
आओ मिलकर इन्क़िलाबे ताज़ातर पैदा करें
दहरपर[5] इस तरह छा जाएँ कि सब देखा करें

शौक़े-गुरेज़ाँ

[१५-में-से ७]

दैरो-काबाका[6] मैं नहीं क़ायल
दैरो-काबाको[7] आस्ताँ न बना
मुझमें तू रूहे-सरमदी[8] मत फूँक
रौनक़े-बज़्मे-आरेफ़ाँ[9] न बना

---

१. समाया हुआ, २. दुःख-दर्द, ३. प्रकृतिरूपी वाद्यका संगीत, ४. नेत्रोंके लिए स्वर्ग, ५. ससारपर, ६. काशी-काबेका, ७. उपासना-स्थल, निवासस्थान, ८. अमर प्राण, ९. ब्रह्मज्ञानियोंकी गोष्ठीकी शोभा बढ़ानेवाला।

दस्ते-ज़ुल्मातमें[1] भटकने दे
मेरी राहोंको कहकशाँ[2] न बना
बिजलियोंसे जहाँ न हो चश्मक[3]
उस गुलिस्ताँमें आशियाँ न बना
जिसको अपनी ख़बर नहीं रहती
उसको सालारे-कारवाँ[4] न बना
मेरी जानिब निगाहे-लुत्फ़[5] न कर
ग़मको इस दर्जा कामराँ[6] न बना
इस ज़मींको ज़मीं ही रहने दे
इस ज़मींको तू आसमाँ न बना

मुसाफ़िर

[६ मैं-से २]

क़दामत[7] हदें खींचती ही रहेंगी
क़दामतकी बुनियाद ढाता चला जा
जो परचम[8] उठा ही लिया सरकशीका
इसे आसमाँ तक उड़ाये चला जा

---

१. अँधेरे मार्गमे, २. प्रकाशवान, ३. संघर्ष, लाग-डाट, ४. यात्री-दलका नेता, ५. कृपा-दृष्टि, ६. कामयाब, सफल, ७. दकियानूसी बातें, ८. झंडा।

अँधेरी रातका मुसाफ़िर

[१२ में-से ४ बन्द]

जवानीकी अँधेरी रात है, ज़ुल्मतका तूफ़ाँ[1] है
मेरी राहोंसे नूरे-माहो-अंजुम तक गुरेज़ाँ[2] है
ख़ुदा सोया हुआ है, अहरमन महशर-बदामाँ[3] है
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

ग़मो-हिरमाँकी यूरिशें[4] है, मसाइबकी[5] घटाएँ हैं
जुनूँकी फ़ित्नः ख़ेज़ी[6] हुस्नकी ख़ूनी अदाएँ हैं
बड़ी पुरज़ोर आँधी है, बड़ी काफ़िर बलाएँ हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

तलातुमख़ेज़[7] दरिया, आगके मैदान हाइल हैं
गरजती आँधियाँ, बिफरे हुए तूफ़ान हाइल हैं
तबाहीके फ़रिश्ते, जब्रके शैतान हाइल हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

हुकूमतके मज़ाहिर[8] जंगके पुरहौल[9] नक़्शे हैं
कुदालोंके मुक़ाबिल, तोप-बन्दूक़ें हैं, नेज़े हैं
सलासल[10], ताज़यानें[11], बेड़ियाँ, फाँसीके तख़्ते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

---

१. अन्धकारका साम्राज्य, २. चन्द्रमा और नक्षत्रतकका प्रकाश उपेक्षा करता है, ३. शैतान तूफान उठाये हुए हैं, ४. रंज और निराशाके आक्रमण, ५. मुसीबतोंकी, ६. उन्मादके उपद्रव, ७. बाढ़से परिपूर्ण दरिया, ८. शासनके दृश्य, ९. युद्धके भयानक, १०. ज़ंजीर, ११. हण्टर।

नौजवानसे

[१४ में-से ७]

जलाले-आतिशो-बर्क़ो-सहाब[1] पैदा कर
अजल[2] भी काँप उठे वह शबाब[3] पैदा कर
तेरे ख़रामें[4] है ज़लज़लोंका राज़ निहाँ[5]
हर-एक गामपर[6] इक इन्क़िलाब पैदा कर
सदाए-तैशए-मज़दूर[7] है, तेरा नग़्मा[8]
तू संगो-ख़िश्तसे[9] चंगो-रबाब[10] पैदा कर
बहुत लतीफ़[11] है, ऐ दोस्त ! तेरा बोसा[12]
यही है जाने-जहाँ[13] इसमें आब[14] पैदा कर
तेरा शबाब अमानत[15] है, सारी दुनियाकी
तू ख़ार-ज़ारे-जहाँमें[16] गुलाब पैदा कर
शराब खींची है सबने ग़रीबके ख़ूँसे
तू अब अमीरके ख़ूँसे शराब पैदा कर
तू इन्क़िलाबकी आमदका इन्तज़ार न कर ?
जो हो सके तो अभी इन्क़िलाब पैदा कर

---

१. आग, बिजली और बादलों-जैसा तेज, २. मृत्यु, ३. यौवन, सौन्दर्य्य, ४. चालमे, चलनेमे, ५. तूफ़ानोंके भेद छिपे हुए, ६. क़दमपर, ७. मज़दूरके कुल्हाड़ेकी आवाज़, ८. गीत, ९. पत्थरों और ईंटोंसे, १०. डफ और वायलिन, ११. आनन्ददायक, कोमल, १२. तलवारका चुम्बन, १३. संसारकी जान, १४. आभा, १५. धरोहर, १६. कण्टकाकीर्ण संसारमें ।

पर्दा और इस्मत

[८ में-से ४]

जो ज़ाहिर न हो, वह लताफ़त[1] नहीं है
जो पिन्हाँ[2] रहे वह सदाक़त[3] नहीं है
यह फ़ितरत[4] नहीं है, मशीयत[5] नहीं है
कोई और शै है यह इस्मत[6] नहीं है

सरे-रहगुज़र[7] छुप-छुपाकर गुज़रना
ख़ुद अपने ही जज़्बातका[8] ख़ून करना
हिजाबोंमें[9] जीना, हिजाबोंमें मरना
कोई और शै है यह इस्मत नहीं है

क़सम अंजुमे-शबके जौक़े-सफ़रकी[10]
क़सम ताज़गीए-नसीमे-सहरकी[11]
क़सम आस्मानोंके शम्सो-क़मरकी[12]
कोई और शै है यह इस्मत नहीं है

क़सम शोख़िए-इश्क़े-'संजोगता'की[13]
क़सम 'जौन'के अज़्मे—सब्र आज़माकी[14]

---

१. कोमलता, सौन्दर्य्य, २. छुपा हुआ, ३. सचाई, वास्तविकता, ४. प्राकृतिक स्वभाव, ५. ईश्वरेच्छा, ६. शील, ७. मार्गमे, ८. भावनाओंका, ९. लाज-शर्म, परदेमें, १०. नक्षत्रोंके परिभ्रमणकी सौगन्ध, ११. प्रातः-कालीन स्वच्छ वायुकी सौगन्ध, १२. सूर्य्य-चन्द्रकी, १३. पृथ्वीराज-संयोगिताके प्रेमकी, १४. देवी जौनके धैर्य्यकी।

क़सम 'ताहिरा'की, क़सम 'ख़ालिदा'की[1]
कोई और शै है यह इस्मत नहीं है

ग़द्दार

[६ में-से ३]

यार ! बचकर चल कि यह ग़द्दार है
तू समझता है कि यह भी यार है
आँस्तींमें इसकी इक तलवार है
यार ! बचकर चल कि यह ग़द्दार है

नेकबख़्तो-नेकसीरत, नेकख़ू
नर्म लहजा और मीठी गुफ़्तगू
कल यही पी जायेगा तेरा लहू
यार ! बचकर चल कि यह ग़द्दार है

जब लड़ाईका बिगुल बज जायगा
जब ज़मीं क्या आस्माँ थर्रायगा
तू इसे अपने मुक़ाबिल पायगा
यार ! बचकर चल कि यह ग़द्दार है

---

१. पवित्र नारियोंकी ।

ख़्वाबे-सहर

महर[1] सदियोंसे चमकता ही रहा अफ़लाकपर[2]
रात ही तारी[3] रही, इंसानके इदराकपर[4]
अक़्लके मैदानमें, ज़ुल्मतका[5] डेरा ही रहा
दिलमें तारीकी[6], दमाग़ोंमें अँधेरा ही रहा
इक-न-इक मज़हबकी सईए-ख़ाम[7] भी होती रही
अहले-दिलपर बारिशे-इल्हाम[8] भी होती रही
आस्मानोंसे फ़रिश्ते भी उतरते ही रहे
नेक बन्दे भी ख़ुदाका काम करते ही रहे
इब्ने-मरियम[9] भी उठे, [10]'मूसा'-ए उमरा भी उठे
'रामो' 'गौतम' भी उठे, 'फ़रहूनो'[11], 'हामाँ'[12] भी उठे
हुक्मराँ[13] दिलपर रहे सदियोंतलक असनाम[14] भी
अब्रे-रहमत[15] बनके छाया दहरपर[16] इस्लाम भी
मस्जिदोंमें मौलवी, ख़ुत्बे[17] सुनाते ही रहे
मन्दिरोंमें बिरहमन श्लोक गाते ही रहे
आदमी मिन्नतकशे-अरबाबे-इरफ़ाँ[18] ही रहा
दर्दे-इंसानी मगर महरूमे दरमाँ[19] ही रहा

---

१. चन्द्रमा, २. आकाशपर, ३. छाई, ४. बुद्धिपर, ५. अन्धकारका ६. अज्ञानता, अन्धेरापन, ७. व्यर्थ प्रयास, ८. ईश्वरीय सन्देश उतरते रहे, ९. ईसा, १०. एक पैग़म्बरका नाम, ११. मिश्रका एक शरारती बादशाह, १२. फ़रहूनका वज़ीर, १३.-१४. मूर्ति-पूजाका प्रचलन, १५. ख़ुदाका रहम, ईश्वरीय कृपा, १६. संसारपर, १७. भाषण, १८. ज्ञानियोंके आधीन, १९. इलाजसे वञ्चित ।

इक-न-इक दरपर जबीने-शौक़[1] घिसती ही रही
आदमीयत ज़ुल्मकी चक्कीमें पिसती ही रही
रहबरी[2] जारी रही, पैग़म्बरी जारी रही
दीनके पर्दोंमें जंगे-ज़र-गरी[3] जारी रही
यह मुसलसल[4] आफ़तें, यह यूरिशें,[5] यह क़त्ले-आम
आदमी कबतक रहे, ओहामे-बातिलका[6] ग़ुलाम ?
ज़हने–इंसानीने[7] अब औहामके ज़ुल्मातमें[8]
ज़िन्दगीकी सख़्त तूफ़ानी अँधेरी रातमें
कुछ नहीं तो कमसे-कम ख़्वाबे-सहर[9] देखा तो है
जिस तरफ़ देखा न था अबतक, उधर देखा तो है

आज भी

[१२ मैं-से २]

आज भी ख़ारज़ारे-ग़म[10] ख़ुल्दे-बरीं[11] मेरे लिए
आज भी रहगुज़ारे-इश्क़[12] मेरे लिए है कहकशाँ[13]

आज भी है जुनूँ[14] मेरा दैरो-हरम पै ख़न्दाज़न[15]
आज भी मुझसे बद हवास[16] दैरो-हरमके पासबाँ[17]

---

१. मस्तक, २. नेतागिरी, ३. धनलोलुपताका युद्ध धर्मके नामपर होता रहा, ४. लगातार, ५. हमले, आक्रमण, ६. झूठे विश्वासोंका, अन्धविश्वासोंका, ७. मानव-बुद्धिने, ८. अन्धविश्वासके अँधेरोंमे, ९. प्रातः-कालका स्वप्न, १०. दुःखरूपी काँटे, ११. जन्नत, १२. प्रेम-मार्ग, १३. छाया-पथ, १४.उन्माद, १५. मन्दिर-मस्जिदका उपहास करनेवाला, मज़ाक़ उड़ानेवाला, १६.भयभीत,परेशान, १७.मन्दिर-मस्जिदके हिमायती।

इशरते-तनहाई

[७ में-से १ बन्द]

अब यह अरमाँ कि बदल जाये जहाँका दस्तूर
एक इक आँखमें हो ऐशो-फ़राग़तका सरूर[1]
एक-इक जिस्म पै हो अतलसो-कमख़्वाबो-समूर[2]
अब यह बात और है ख़ुद चाके-गरेबाँ[3] हूँ मैं

फ़ैज़अहमद 'फ़ैज' के शब्दोंमें—"मजाज़की इन्क़िलाबियत (क्रान्तिकारीपन) आम इन्क़िलाबी शाइरोंसे मुख्तलिफ (भिन्न) है। आम इन्क़िलाबी शाइर इन्क़िलाबके मुताल्लिक़ (क्रान्तिके सम्बन्धमे) गरजते है, ललकारते है, सीना कूटते है। इन्क़िलाबके मुताल्लिक़ गा नहीं सकते। उनके ज़हन (मस्तिष्क) मे आमदे-इन्क़िलाबका तसव्वुर तूफ़ाने-बर्क़-ओ-रादसे मुरक्कब है[4]। नग़मए-हज़ार और रगीनिए-बहारसे इबारत नहीं[5]। वे सिर्फ़ इन्क़िलाबकी हौलनाकी (भयानकता) को देखते है। उसके हुस्नको नहीं पहचानते। यह इन्क़िलाबका तरक़्क़ी-पसन्द नहीं, रजतपसन्द तसव्वुर (प्रगतिशील न होकर पुरातन एवं प्रतिक्रियावादी विचारधारा) है। यह बर्क़ो-रादका दौर मजाज़पर भी गुजर चुका है लेकिन अब मजाज़की ग़नायत पसन्दी (आनन्दी स्वभाव, रोमानी शाइरी) उसे अपना चुकी है—

---

१. सुख-चैन और निश्चिन्तताका नशा, २. अतलस, कमख़्वाब और समूर (एक जानवर जिसका चमड़ा बहुत नर्म होता है) के लिबास, ३. स्वयं फटेहाल हूँ, ४. क्रान्तिकारी भावोंको प्रकट करनेके लिए—बिजली, मेघनाद, तूफ़ान, बग़ावत आदिके शब्दोंका नज़्म करना आवश्यक समझते है, ५. संगीत और बहारके गीत क्रान्तिके लिए उपयुक्त नहीं समझते, बहारों एवं नग़मोंसे उनका कोई सरोकार नहीं।

तेरे माथे पै यह आँचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन
तू उस आँचलसे इक परचम बना लेती तो अच्छा था

'मजाज'की 'ख़्वाबे-सहर' और 'नौजवान खातूनसे खिताब' इस दौरकी सबसे मुकम्मिल और सबसे कामयाब तरक़्क़ी-पसन्द नज़्मोमे-से हैं। मजाज़-इन्क़िलाबका ढिंढोरची नही, इन्क़िलाबका मुतरिब (क्रान्तिगीतोंका गायक) है। उसके नग़्मेमे बरसातके दिनकी-सी सकून-बख्श खुनकी (शान्ति-प्रद शीतलता) है और बहारकी रातकी-सी गरमजोश तासीर आफ़रीनी[1] (शीतहरण उष्णता)।"

साम्यवादी विचारधारा रखनेवाले सहपाठियों एवं मित्रोके संसर्गके परिणामस्वरूप 'मजाज' भी प्रगतिशील लेखक-सघ (अंजुमने-तरक्की पसन्द मुसन्नफ़ीन) के सदस्य थे। उन्होंने प्रगतिशील ढंगकी, साम्यवादी विचारधारा (तरक़्क़ी-पसन्द खयालात) की नज़्मे भी कहीं, किन्तु वे स्वभावतः रोमानी शाइर थे। किसी भी दल-विशेषके प्रतिबन्धमे रहना, उनके स्वभावके विरुद्ध था। साम्यवादियों-द्वारा निर्द्धारित नीतिके वे पूर्ण समर्थक नही थे। लकीरके फ़कीर रहना उन्हे पसन्द न था। अपनी इन्क़िलाबी नज़्मे तरक़्क़ी-पसन्द खयालातकी सोलहो आने तर्जुमानी करें, 'मजाज़' इसके क़ायल न थे। किसी भी दल-विशेषका वे अंकुश सहन करनेको कभी राजी न हुए। यहाँतक कि मुलाजमतमे भी अनुशासनमे रहना उन्हें रुचिकर न हुआ। वे अपने मनोगत भाव स्वच्छन्द होकर व्यक्त करते थे। एक बार तरक़्क़ी-पसन्दोंकी कान्फ्रेन्समे आग्रह किये जानेपर 'मजाज़'ने अपने भाषणमे यह भी कह दिया—

"अबतक लोग झोंपड़ोंमें रहकर महलोंके ख़्वाब देखते थे।
अब हम लोग महलोंमें रहकर झोपड़ोंके ख़्वाब देखते हैं।"

---

१. दीबाचए-आहंग पृ० ११।

उक्त वाक्य तरक़्क़ी-पसन्दोंपर कितना तीव्र, किन्तु सत्य व्यंग्य है ? विशेषतः उन छद्मवेषी शाइरोंपर जो अमली तौरपर साम्यवादसे दूरका भी वास्ता नही रखते, किन्तु किसानों, मज़दूरों और ग़रीबोंकी हिमायतका झण्डा उठाये फिरते है । अपने कलामपर झोंपडी, हँसुआ-दराँतीकी मुहर लगाकर उसे सिक्केबन्द माल साबित करना चाहते है । अपने इस छद्मवेष और आत्म-विज्ञापनके फलस्वरूप जो कारोंमें घूमते है । होटलोंमे हसीनाओं और शराबके मजे लूटते है, महलोंमें रहते हैं । फिर भी ग़रीबों और मज़दूरोंके ग़मसे घुल-घुलकर हाथी हुए जा रहे है । बक़ौल किसीके—

हल करता है इफ़लासके उक़्दे वह सुख़नवर
जो हाथमें थामे हुए सोनेका क़लम है[1]

रईस अमरोहवीने क्या खूब क़ता कहा है—

इक मुहतरिम वज़ीरने जल्सेमें यह कहा—
तकलीफ़ सख़्त मैंने उठायी तमाम रात
हिन्दोस्ताँके ख़ाक-नशीनोंकी यादमें
सोफ़ों पै मुझको नींद न आयी तमाम रात

यूँ तो 'मजाज़'के कलाममे शमशीर-ओ-सिना रूबाब-ओ-साज़ और साक़ी-ओ-जाम सभीकी झलक है । लेकिन वे स्वभावतः रोमानी शाइर (प्रेमपूर्ण गीतोके कवि) थे । उनके कलाममे न तो ख़ौफ़नाक घन गरज है, न मौलवियाना नसीहतें है, न काम-पिपासा है, और न कहीं अश्लीलता है । उनके कलाममे दरिद्रोके प्रति सहानुभूति, बे-रोज़गारोंकी करुणाजनक स्थिति, पूँजीवादके अभिशापका रोमाचकारी चित्रण, प्रेमी-

---

१. अर्थाभावकी समस्याएँ वह शाइर सुलझा रहा है, जिसके हाथमें सोनेका क़लम है !

प्रेमिकाओंकी हृदयगत भावनाएँ और स्फूर्तिदायक विचार बहुत नपे-तुले शब्दोंमें पाये जाते है। अब हम उनकी तीन नज्म और तीन कते और गजलोंके चन्द अशआर देकर इस निबन्धको समाप्त करते है।

नूरा

[३१ में-से २५ शेर]

वह इक नर्स थी चारःगर[1] जिसको कहिए
मदावाए-दर्दे-जिगर[2] जिसको कहिए
जवानीसे तिफ़्ली[3] गले मिल रही थी
हवा चल रही थी कली खिल रही थी
वह पुर रौब तेवर वह शादाब[4] चेहरा
मताए-जवानी पै[5] फ़ितरतका पहरा
"मेरी हुक्मरानी है अहले-ज़मींपर"
यह तहरीर[6] था साफ़ उसकी ज़बींपर[7]
सफ़ेद और शफ़्फ़ाफ़[8] कपड़े पहनकर
मेरे पास आती थी इक हूर बनकर
वह इक आसमानी फ़रिश्ता थी गोया
कि अन्दाज़ था उसमें जिबरीलका[9]-सा
वह तस्कीने-दिल[10] थी, सकूने-नज़र थी
निगारे-शफ़क़[11] थी, जमाले-सहर[12] थी

---

१. चिकित्सक, २. दर्दे-जिगरका इलाज, ३. बचपन (किशोरावस्थासे आशय है), ४. प्रफुल्ल, ५. जवानीकी दौलतपर, ६. अंकित, ७. मस्तकपर, ८. स्वच्छ, ९. एक फ़रिश्तेका नाम, १०. दिलको चैन देनेवाली, ११. उषाका शृंगार, १२. सुबहका रूप।

कभी उसकी शोख़ीमें संजीदगी थी
कभी उसकी संजीदगीमें भी शोख़ी
घड़ी चुप घड़ी करने लगती थी बातें
सिरहाने मेरे काट देती थी रातें
वह अंजील पढ़कर सुनाती थी मुझको
हँसाती थी मुझको रुलाती थी मुझको
दवा अपने हाथोंसे मुझको पिलाती
'अब अच्छे हो' हर रोज मुज़्दः[1] सुनाती
सिरहाने मेरे एक दिन सर झुकाये
वह बैठी थी तकिये पै कुहनी लगाये
ख़यालाते-पैहममें खोयी हुई-सी
न जागी हुई-सी न सोयी हुई-सी
झपकती हुई बार-बार उसकी पलकें
जबींपर शिकन[2] बेक़रार उसकी पलकें
वह आँखोंके साग़र छलकते हुए-से
वह आरिज़के[3] शोले[4] भड़कते हुए-से
महक गेसुओंसे[5] चली आ रही थी
मेरे हर नफ़समें[6] बसी जा रही थी
मुझे लेटे-लेटे शरारतकी सूझी
जो सूझी भी तो किस क़यामतकी सूझी

---

१. शुभ समाचार, २. मस्तकपर बल, ३. कपोलोके, ४. अंगारे, ५. बालोंसे, ६. साँसमे ।

ज़रा बढ़के कुछ और गर्दन झुका ली
लबे-लाल अफ़शाँसे[1] इक शै चुरा ली
वह शै जिसको अब क्या कहूँ क्या समझिए
बहिश्ते-जवानीका तोहफ़ा समझिए
मैं समझा था शायद बिगड़ जायेगी वह
हवाओंसे लड़ती है लड़ जायेगी वह
मै देखूँगा उसके बिफरनेका आलम
जवानीका ग़ुस्सा बिखरनेका आलम
इधर दिलमें इक शोरे-महशर बपा था
मगर उस तरफ़ रंग ही दूसरा था
हँसी और हँसी इस तरह खिलखिलाकर
कि शमए-हया रह गयी झिलमिलाकर
नहीं जानती है मेरा नाम तक वह
मगर भेज देती है, पैग़ाम तक वह
यह पैग़ाम आते ही रहते हैं अक्सर
कि 'किस रोज़ आओगे बीमार होकर'

रात और रेल

[४० में-से २० शेर]

फिर चली है रेल स्टेशनसे लहराती हुई
नीम[2] शबकी ख़ामुशीमें ज़ेरे-लब[3] गाती हुई

---

१. रंगीन लाल ओठोंसे, २. आधी रातकी, ३. ओठोंमें ।

डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती
वादिओ-कुहसारकी[1] ठण्डी हवा खाती हुई
नौनिहालोंको सुनाती मीठी-मीठी लोरियाँ
नाज़नीनोंको सुनहरे ख़्वाब दिखलाती हुई

ठोकरें खाकर लचकती, गुनगुनाती झूमती
सर-ख़ुशीमें घुँगरुओंकी तालपर गाती हुई
नाज़से हर मोड़पर खाती हुई सौ पेचो-ख़म
इक दुल्हन अपनी अदासे आप शर्माती हुई

रातकी तारीकियोंमें झिलमिलाती काँपती
पटरियोंपर दूर तक सीमाब[2] झलकाती हुई
जैसे आधी रातको निकली हो इक शाही बरात
शादियानोंकी सदासे वज्दमें आती हुई

मुन्तशिर[3] करके फ़ज़ामें[4] जा बजा चिनगारियाँ
दामने-मौजे-हवामें फूल बरसाती हुई
तेज़ तर होती हुई मंज़िल-ब-मंज़िल दम-ब-दम
रफ़्ता-रफ़्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई

सीनए-कुहसारपर[5] चढ़ती हुई बे-इख़्तियार
एक नागिन जिस तरह मस्तीमें लहराती हुई
जुस्तजूमें[6] मंज़िले-मक़सूदकी[7] दीवाना वार
अपना सर धुनती फ़ज़ामें बाल बिखराती हुई

---

१. घाटियो-पर्वतोंकी, २. प्रकाश, पारा, ३. बखेरकर, ४. वातावरणमे, ५. पर्वतके सीनेपर, ६. तलाशमें, ७. लक्ष्यकी ओर।

रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती हाँपती
अपने दिलकी आतिशे-पिन्हाँको[1] भड़काती हुई
ख़ुद-ब-ख़ुद रूठी हुई, बिफ़री हुई, बिखरी हुई
शोरे-पैहमसे[2] दिले-गेतीको[3] धड़काती हुई

पुल पै दरियाके दमा-दम कौंदती, ललकारती
अपनी इस तूफ़ान अंगेज़ी पै इतराती हुई
पेश करती बीच नद्दीमें [4]चराग़ाँका समाँ
साहिलोंपर[5] रेतके ज़र्रोंको[6] चमकाती हुई

मुँहमें घुसती है, सुरंगोंके यका-यक दौड़कर
दनदनाती चीख़ती, चिंघाड़ती, गाती हुई
एक मुजरिमकी तरह सहमी हुई सिमटी हुई
एक मुफ़लिसकी तरह सर्दीमें थर्राती हुई

दामने-तारीकिए-शबकी[7] उड़ाती धज्जियाँ
क़िस्से-ज़ुल्मतपर[8] मुसलसल[9] तीर बरसाती हुई
एक इक हरक़तसे अन्दाज़े-बग़ावत आशकार[10]
अज़मते-इन्सानियतके ज़मज़मे[11] गाती हुई

हर क़दमपर तोपकी-सी घन गरजके साथ-साथ
गोलियोंकी सन-सनाहटकी सदा आती हुई

---

१. छिपी हुई आगको, २. लगातारके शोरसे, ३. विश्वहृदयको, ४. दीपमालाका, ५. दरिया-किनारोपर, ६. कणोको, ७. रातके अँधेरेपन रूपी वस्त्रोंकी, ८. अत्याचारोके गढोंपर, ९. लगातार, १०. विद्रोही भावनाएँ प्रकट, ११. मानवताकी महत्ताके गीत ।

अयादत

[१२में-से १०]

यह कौन आ गया रुख़े-ख़न्दाँ[1] लिये हुए
आरिज़ पै[2] रंगो-नूरका तूफ़ाँ लिये हुए
बीमारके क़रीब बसद शाने-एहतियात[3]
दिल-दारिए-नसीमे-बहाराँ[4] लिये हुए
रुख़सारपर[5] लतीफ़-सी[6] इक मौजे-सर ख़ुशी[7]
लबपर हँसीका नर्म-सा तूफ़ाँ लिये हुए
पेशानिए-जमील पै[8] अनवारे-तमकनत[9]
ता-बन्दगीए-सुबहे-दरख़्शाँ[10] लिये हुए
जुल्फ़ोंके पेचो-ख़ममें बहारें छुपी हुई
इक कारवाने-निगहते-बस्ताँ[11] लिये हुए
आ ही गया वह मेरा निगारे-नज़र-नवाज़[12]
ज़ुल्मतकदेमें[13] शमए-फ़रोज़ाँ[14] लिये हुए
इक-इक अदामें सैकड़ों पहलूए-दिलदही[15]
इक-इक नज़रमें पुरसिशे-पिन्हा[16] लिये हुए

---

१. प्रफुल्लमुख, २. कपोलपर, ३. सावधानीपूर्वक, ४. बहारोंकी मित्रतापूर्ण हवा, ५. कपोलोंपर, ६. नाजुक-सी, ७. प्रसन्नताकी लहर, ८. सुन्दर मस्तकपर, ९. गर्वरेखा, १०. प्रकाशमान प्रातःकालकी चमक, ११. उद्यानकी सुगन्धका दल, १२. आँखोंको सुख देनेवाली सुन्दरी, १३. अँधेरेमे, १४. जलता दीप, १५. दिल लेनेके ढंग, १६. छिपी हुई खबरगीरी ।

आँखोंसे एक रौ-सी निकलती हुई हर आन
ग़रक़ाबिए-हयातका [1]सामाँ लिये हुए
मिलती हुई निगाहमें बिजली भरी हुई
खुलते हुए लबोंमें गुलिस्ताँ लिये हुए
यह कौन है 'मजाज़'से सरगर्मे-गुफ़्तगू[2]
दोनों हथेलियों पै ज़ानख़दाँ[3] लिये हुए

क़तआत

ख़िरमने-दिल[4] जला रहा हूँ मैं
नक़्शे-हस्ती[5] मिटा रहा हूँ मैं
तू न मग़मूम[6] हो, मगर ऐ दोस्त !
तेरी ही सिम्त[7] आ रहा हूँ मैं

कुफ़्र[8] क्या, तसलीस[9] क्या, इलहाद[10] क्या, इस्लाम क्या
तू ब-हरसूरत किसी ज़ंजीरमें जकड़ा हुआ
तोड़ सकता हो तो पहले तोड़ दे यह क़ैदो-बन्द
बेड़ियोंके साज़पर नग़माते-आज़ादी[11] न गा

वक़्तकी सईए-मुसलसल[12] कारगर[13] होती गयी
ज़िन्दगी लहज़ा-ब-लहज़ा मुख़्तसर होती गयी

---

१. मर मिटनेका सामान, २. वार्तालापमें लीन, ३. चिबुक, ठोड़ी, ४. दिलरूपी खलिहान, ५. अपना अस्तित्व, ६. सन्तप्त, दुःखी, ७. तरफ़, ८. गैर इस्लामीपन, नास्तिकता, ९.ईसाईपन, १०. अधार्मिकता, ११. स्वतन्त्रताके गीत, १२. लगातार प्रयत्न, १३. सफल, कामयाब ।

साँसके पर्दोंमें बजता ही रहा साज़े-हयात[1]
मौतके क़दमोंकी आहट तेज़तर होती गयी

ग़ज़ल

यह तो क्या कहिए चला था मैं कहाँसे हमदम !
मुझको यह भी नहीं मालूम किधर जाना था
हुस्न और इश्क़को दे तानए-बेदाद[2] 'मजाज़' !
तुमको तो सिर्फ़ इसी बात पै मरजाना था

मेरी निगाहमें जल्वे हैं, जल्वे-ही-जल्वे
यहाँ हिजाब नहीं है, यहाँ नक़ाब नहीं
जुँनू भी हदसे सिवा, शौक़ भी है हदसे सिवा
यह बात क्या है, कि मैं मौरिदे-अताब[3] नहीं
न पूछिए मेरी दुनियाको मेरी दुनियामें
ख़ुद आफ़ताब भी ज़र्रा है आफ़ताब नहीं

तुझे ढूँढ़ता हूँ तेरी जुस्तजू[4] है
मज़ा है कि ख़ुद गुम हुआ चाहता हूँ
यह मौजोंकी बेताबियाँ[5] कौन देखे
मैं साहिलसे[6] अब लौटना चाहता हूँ

१. जीवन-संगीत, २. ज़ुल्मका उलाहना, ३. क्रोध-भाजन, ४. खोज, तलाश, ५. लहरोंकी बेचैनी, ६. किनारेसे ।

आँखसे आँख जब नहीं मिलती
दिलसे दिल हमकलाम होता है

बारहा[1] ऐसा हुआ है याद तक दिलमें न थी
बारहा मस्तीमें लबपर उसका नाम आ ही गया
खुल गयी थी साफ़ गर्दूं[2] की हक़ीक़त ऐ 'मजाज़' !
ख़ैरियत गुज़री कि शाहीं[3] ज़ेरे दाम[4] आ ही गया

आस्माँ तक जो नाला पहुँचा है
दिलकी गहराइयोंसे निकला है
मेरी नज़रोंमें हश्र[5] भी क्या है
मैंने उसका जलाल देखा है
जल्वए-तूर ख़्वाबे-मूसा[6] है
किसने देखा है, किसको देखा है
हाय अञ्जाम[7] उस सफ़ीनेका[8]
ना-ख़ुदाने[9] जिसे डुबोया है
वह जवानी कि थी हरीफ़े-तरब[10]
आज बरबादे-जामो-सहबा[11] है
कौन उठकर चला है, पहलूसे ?
जिस तरफ़ देखिए अँधेरा है

---

१. अक्सर, २. आकाशकी वास्तविकता, ३. बाज़ पक्षी, ४. जालमे, ५. प्रलय, क़यामत, ६. मूसाने तूर पर्वतपर खुदाका जल्वा देखा यह स्वप्नकी बातें हैं, कल्पित हैं, ७. परिणाम, ८. नावका, ९. मल्लाहने, १०. ईर्ष्या योग्य, ११. शराबके कारण बरबाद।

फिर मेरी आँख हो गयी नम नाक
फिर किसीने मिज़ाज पूछा है
इन दिनों तो मजाज़ की दुनिया
हुस्न-ही- हुस्नके सिवा क्या है ?

इश्क़का ज़ौक़े-नज़ारा[1] मुफ़्तमें बदनाम है
हुस्न-ख़ुद बेताब[2] है, जल्वे[3] दिखानेके लिए

रूदादे-ग़मे-उल्फ़त[4] उनसे हम क्या कहते,क्यों कर कहते ?
इक हर्फ़ न निकला होंटोंसे और आँखमें आँसू आ भी गये

होगी मेरी बातोंसे उन्हें और भी हैरत
आयेगा उन्हें मुझसे हिजाब[5] और ज़ियादा

वह आ भी जाते, वह हो भी जाते
चश्मे-तमन्ना फिर भी तरसती

कुछ तुझको ख़बर है हम क्या-क्या ऐ शोरिशे-दौराँ[6] ! भूल गये
वह ज़ुल्फ़े-परेशाँ भूल गये, वह दीदए-गिरियाँ[7] भूल गये
ऐ शौक़े-नज़ारा क्या कहिए, नज़रोंमें कोई सूरत ही नहीं
ऐ ज़ौक़े-तसव्वुर क्या कीजे, हम सूरते-जानाँ भूल गये
अब गुलसे नज़र मिलती ही नहीं, अब दिलकी कली खिलती ही नहीं
ऐ फ़स्ले-बहाराँ ! रुख़सत हो, हम लुत्फ़े-बहाराँ भूल गये

---

१. देखनेका शौक़, २. आतुर, ३. रूप, शोभा, ४. प्रेम-कष्टकी कहानी, ५. लाज, शर्म, ६. मौजूदा दौरके इन्क़िलाब !, ७. अश्रूपूर्ण नेत्र ।

सबका तो मदावा[1] कर डाला, अपना ही मदावा कर न सके
सबके तो गरेबाँसी डाले, अपना ही गरेबाँ भूल गये
यह अपनी वफ़ाका आलम है, अब उनकी जफ़ाको क्या कहिए
इक नश्तरे-ज़हर आगीं रख कर नज़दीके-रगे-जाँ भूल गये,

—शबेताबसे

ख़िज़ाँकी लूटसे बरबादिए चमन तो हुई
यक़ीन आमदे-फ़स्लेबहार कम न हुआ

बहुत कुछ और भी है इस जहाँमें
यह दुनिया महज़ ग़म-ही-ग़म नहीं है
मेरी बरबादियोंका हमनशीनों
तुम्हें क्या ख़ुद मुझे भी ग़म नहीं है

—माहेनौ पाकिस्तान फरवरी १९५१

यह आना कोई आना है कि बस रसमन चले आये
यह मिलना ख़ाक मिलना है कि दिलसे दिल नहीं मिलता
कभी साहिलपै[2] रहकर शौक़ तूफ़ानोंसे टकरायें
कभी तूफ़ाँमें घिरकर फ़िक्र है साहिल नहीं मिलता
वहाँ कितनोंको तख़्तो-ताजका अरमा है क्या कहिए
जहाँ साइलको[3] अक्सर कासए-साइल[4] नहीं मिलता
यह क़त्ले-आम और बे-इज़्ने-क़त्ले-आम क्या मानी
यह बिस्मिल कैसे बिस्मिल हैं, जिन्हें क़ातिल नहीं मिलता

—बहतरीन अदब १९४९

१. इलाज, २. किनारेपर, ३. भिक्षुकको, ४. भिक्षापात्र।

आहंगे-जुँनू

मस्तिष्क विकृत हो जानेपर भी 'मजाज़' शेर कहते रहते थे। उनकी मृत्युके बाद उनके मित्र डॉक्टर मुहम्मद हसनने ऐसी सात नज़्म मार्च १९५६ के 'नक़ूश' मे प्रकाशित करायी थी। उनमे-से एक नज़्म यहाँ दी जा रही है—

न छेड़ ऐ हमनशीं[1]! फिर मुज़तरब[2] हैं बिजलियाँ दिलमें
मेरे आते ही अक्सर आग लग जाती है महफ़िलमें
मेरे हाथोंमें जब इश्क़ो-जुनूँका साज़[3] होता है
ज़मीं क्या आस्माँ तक गोशबर-आवाज़[4] होता है
मेरी मिज़राब[5] अक्सर छेड़ देती है रगे-जाँको
मेरी शोला-नवाई[6] फूँक देती है गुलिस्ताँको[7]
गुलिस्ताँ मेरा घर है, नाज़-परवर्दा[8] हूँ फ़ितरतका
कोई टुकरा नहीं सकता कि आवर्दा[9] हूँ फ़ितरतका
मेरी आँखोंमें फ़र्ते-ग़मसे[10] जब भी अश्क[11] आये हैं
चमनकी हर कलीने ख़ूनके आँसू बहाये हैं
हवाके सर्द झोंके सिसकियाँ भरते नज़र आये
महो-अंजुम[12] मुझे सरगोशियाँ[13] करते नज़र आये

---

१. साथी, पड़ोसी, २. बेचैन, ३. प्रेम और उन्मादकी वीणा, ४.सुननेको लालायित ५. सितार बजानेका छल्ला, ६. आग्नेय स्वरलहरी, ७. उपवनको, ८. लाड़-प्यारसे प्रकृति-द्वारा पाला हुआ, ९. प्रकृति-द्वारा मेरी सिफ़ारिश की गयी है, १०. दुःखकी अधिकतासे, ११. आँसू, १२. चन्द्रमा और नक्षत्र, १३. कानाफूसी।

सरापा[1] दर्द हूँ मैं दुःख-भरी गोदोंका पाला हूँ
मैं हर महफ़िलकी ज़ीनत[2] हूँ, मैं हर घरका उजाला हूँ
न वाइज़[3] हूँ, न नासह[4] हूँ, न हादी[5] हूँ, न रहबर[6] हूँ
मुहब्बत मेरा क़ुरआँ है, जवानीका पयम्बर हूँ
जहाँ मैं हूँ वहाँ इक लनतरानीकी ख़ुदाई है
मेरे नज़दीक दुनियापर जवानीकी ख़ुदाई है
वफ़ा-दुश्मन जवानीको वफ़ाका दर्स[7] देता हूँ
सरक जाते हैं आँचल सरसे जब मैं देख लेता हूँ
न नाकामीका अन्देशा, न ग़मकी सरगरानी[8] है
जुनूँ-ज़ारे-मुहब्बतमें[9] जवानी ही जवानी है
जवानीकी निगाहें देखती हैं ऐन मस्तीमें
अजलका वहशयाना रक़्स[10] अर्सा-गाहे-हस्तीमें[11]
ज़ईफ़ी[12] महफ़िले-इशरतमें[13] ख़िरक़ापोश[14] आती है
जवानी जब भी आती है कफ़न बरदोश[15] आती है

दूसरा हिस्सा

बग़ावतका[16] अलमबरदार[17] हूँ, महशर[18] बदामाँ हूँ
फ़रिश्तोंने जिसे सज्दे किये हैं मैं वह इंसाँ हूँ

१. दुःखसे परिपूर्ण। २. शोभा, ३. व्याख्यानदाता, ४. नसीहतकार, ५. हिदायतकार, ६. पथप्रदर्शक, ७ पाठ, ८. अप्रसन्नता, ९. प्रेमोन्मादमें, १०. मृत्युका जंगली नाच, ११. जीवन-क्षेत्रमें, १२. वृद्धावस्था, १३. भोग-विलासमें, १४. गुदडी ओढे हुए, १५. कफ़न लिये हुए, १६. विद्रोहका, १७. झण्डा उठानेवाला, १८. प्रलयंकर।

पुरानी दुश्मनी है अहले-ज़रके आस्तानोंसे[1]
मैं बिजली हूँ गिरा करता हूँ अक्सर आस्मानोंसे
बढ़ा हूँ जब भी मैदाँमें बग़ावतका अलम खोले
फ़रिश्तेने अजलके आस्माँपर हँसके पर तोले
जिसे ज़ख़्मी किया मैंने वह हरगिज़ जी नहीं सकता
मेरे ख़ंजरका मारा उठके पानी पी नहीं सकता
'सियह काराने-ज़र'को,[2] फ़ित्ना परदाज़ाने-मज़हबको[3]
जकड़ रक्खा है मैंने साज़िशोंके जालमें सबको
मैं बादल बनके सहराओंमें[4] मँडलाया किया बरसों
मैं बिजली बनके काशानों[5] पै लहराया किया बरसों

मेरे ही दम-क़दमसे बज़्मे-फ़ितरतमें[6] उजाला है
मुझे आँधीने लोरी दी है, तूफ़ानोंने पाला है
जलाले-अबरुए-सरकश[7] जमाले-रुख़का आईना[8]
ख़ुदाका राज़दाँ[9], इबलीसका इक यारे-देरीना[10]
जुनूँके राग गाता हूँ, लहूके अश्क रोता हूँ
हमेशा कुश्तगाने-ग़मकी[11] पहली सफ़में[12] होता हूँ
नज़र आने लगी हैं फिर मेरे ख़्वाबोंकी ताबीरें
मेरे पाए-जुनूँपर लोटती फिरती हैं तक़दीरें

---

१. धनिकोंसे, २. पूँजीपतियोंको, ३. उत्पाती मज़हबियोंको, ४. रेगिस्तानोंमे, ५. महलों पै, ६. प्रकृतिमें, ७. सरकशोंकी भौहोंकी आभा, ८. कपोलोंके सौन्दर्यका दर्पण, ९. भेदी, १०. शैतानका पुराना मित्र, ११. दुःखोंमें मरनेवालोंकी, १२. पंक्तिमें।

मेरे सीनेमें मुस्तक़बिलके जलवे मुस्कराते हैं
मेरी गुफ़्तार सुनकर अहले-दौलत काँप जाते हैं

बस इस तक़्सीरपर अपने मुक़द्दरमें है मर जाना
तबस्सुमको तबस्सुम क्यों, नज़रको क्यों नज़र जाना
ख़िरदवालोंसे हुस्नो-इश्क़की तनक़ीद क्या होगी
न अफ़सूने निगह समझा न अन्दाज़े-नज़र जाना
मए-गुलफ़ाम भी है, साज़े-इशरत भी है, साक़ी भी
मगर मुश्किल है आशोबे-हक़ीक़तसे गुज़र जाना
ग़मे-दौराँमें गुज़री जिस क़दर गुज़री जहाँ गुज़री
और इसपर लुत्फ़ ये है ज़िन्दगीको मुख़्तसर जाना

२ मार्च १९६२ ई०

—नक़ूशकिराँची
मार्च १९५६ ई०

●

फ़ैज़

फ़ैज़

परिचय

फैज अहमद 'फ़ैज' वर्त्तमान पाकिस्तानके जिला स्यालकोटमे सन् १९११ ई० में पैदा हुए। आपके पिता सुलतान मुहम्मदखाँ वहाँ बैरिस्टर थे। फैजने बी० ए० तक वहीं शिक्षा प्राप्त की। लाहौरसे अँगरेजी और अरबीमे एम० ए० किया। सन् १९३६ ई०मे अमृतसर कॉलेजमे लेक्चरर नियुक्त हुए। १९४१मे हेली कॉलेजमे लाहौर चले गये। १९४२ से १९४७ ई० तक सैनिक-विभागमें कर्नलके ओहदे तक पहुँचे। पाकिस्तान बननेके बाद सैनिक-विभाग छोड़कर 'पाकिस्तान टाइम्स' के सम्पादक हो गये। प्रारम्भसे ही साम्यवादी विचारधारामे प्रभावित रहे और प्रगतिशील विचारोके प्रसारमें मुख्य भाग लेने लगे। साहित्यिक कार्य्योंके अतिरिक्त मजदूर आन्दोलनमें भी बहुत दिलचस्पी ली। जनवरी १९५१ ई० में रावलपिण्डो षड्यन्त्रके अभियोगमे बन्दी कर लिये गये और ५ वर्षके करीब हैदराबाद-सिन्ध, लायलपुर, सरगोधा और मौण्ट-गुमरी जेलोंमे रहे। वर्त्तमानमें आप 'पाकिस्तान टाइम्स' और 'इमरोज' के प्रधान सम्पादक है।

फ़ैज साहबकी बेपरवाही, उदारता, सहनशीलता, क्षमाशीलता, दुःख-सहनकी क्षमता, प्रेमपूर्ण दाम्पत्य-जीवन और वे कब और किस वातावरणमें शेर कहते है, यह सब उनकी यूरोपियन सहधर्मिणीके मुखारविन्द-से सुनिए—

"फ़नकार (कलाकार) की बाज कोताहियों (असावधानियों एवं भूलों) से हर शख्सको साबका पड़ता रहता है। वह लोगोसे मिलनेके वायदे करके भूल जाता है। उसे अपने जेब और गरेबानका होश नहीं

रहता। कहीं जाना हो तो ट्रेन रवाना होनेके बाद स्टेशन पहुँचता है। रुपयेका बटुवा कहीं रखकर भूल जाता है और इसके लिए सारा घर छान मारता है। लेकिन मुमकिन है वह उसकी जेब ही में मौजूद हो। उसका फाउण्टेनपेन हमेशा चोरी हो जाता है। उसके अजीज़ों (परिवार) को यह तमाम बातें बर्दाश्त करनी होती है। बल्कि दिन-भरकी मुसलसल (लगातार) उलझनोंका नतीजा किसी नज़्म, किसी शबीह (चित्र) या किसी और शाहकार (अत्युत्तम कृति) की शक्लमें जाहिर हो जाये तो उन्हे अपनी किस्मतपर शाकिर (धन्यवादी) होना चाहिए।

"कई साल उधरकी बात है कि मुझे एक कोटकी गुमशुदगीका पहला तजुर्बा हुआ। हमारी नयी-नयी शादी हुई थी और हमारी आमदनी बहुत कम थी। जंग छिड़ चुकी थी और क़ीमतें तेजीसे चढ़ रही थी, और तन-ख्वाह उतनी ही थी—जितनी जंगसे पहले मिलती थी। फिर भी हमने एक सूट बनवा ही डाला। नया सूट बनवाना उस जमानेमें एक ऐय्याशीसे कम न था। फ़ौज उसे लेनेके लिए अमृतसर गये और रात गये लाहौर वापिस आये। उन दिनों हम नहरके क़रीब एक दूर-दराज़ अलग-थलग मकानमें रहते थे। उस वक्त कोई तांगेवाला वहाँतक जानेको तैयार नहीं होता था। बड़ी मुश्किलसे एक तांगेवाला इसपर राज़ी हो गया कि वह उन्हे कुछ दूर तक पहुँचा देगा। तांगेवालेने फ़ौजको जिस जगह उतार दिया, वहाँसे हमारा घर क़रीबन एक मील था और उन्हे यह सफ़र पैदल तय करना पड़ा। क़ीमती बण्डल उनकी बग़लमें दबा हुआ था। घर पहुँच-कर, फ़ौज़ने मुझे जगाया और वह बण्डल मैंने उनसे ले लिया। लेकिन उसे हाथमें लेते ही मेरा माथा ठनका, क्योंकि बण्डल बहुत हलका था। उसमें कोट नदारद था। मेरी जिदपर वे टार्च लेकर तलाश करने एक मील तक गये मगर कोट नहीं मिला।

"चन्द महीने बाद कपड़ोंसे भरा हुआ एक सूट केस ग़ायब हो गया।.....१९४७ ई० में मेरे तमाम जेवरात चोरी हो गये। मेरे चेहरे-

पर एहसासे-महरूमी (चोरी हो जानेकी खिन्नता) की झलक देखकर फ़ैज कहने लगे—"तुमने शाइरका यह मिसरा नहीं सुना—

रहा खटका न चोरीका दुआ देता हूँ रहज़नको

और मैं अचानक यह महसूस (अनुभव) करने लगी कि मेरे एहसासे-महरूमी (चोरी होनेकी खिन्नता) मे एक तरहका एहसासे-मुखलिसी (सद्भाव) भी शामिल हो गया है ।

"जून १९५३ मे फ़ैज़ जब हैदराबाद जेलमे थे, तो मैंने उन्हे एक खतमें लिखा था कि—"इन बच्चोंके बयक वक्त माँ और बापके फ़राइज अंजाम देना (कर्तव्य पालन) मेरे लिए कितना मुश्किल है ?" इसके जवाबमें उन्होने लिखा—"मेरे बच्चोंको तुमसे अच्छी माँ नही मिल सकती, कितने खुशनसीब है वे ?"

"बाज दोस्त मुझसे सवाल करते हैं कि तुमने कभी फ़ैज़को गुस्सेके आलममे भी देखा । फ़ैज़ अपनी नरममिज़ाजीके लिए मशहूर है और हर शख़्सको मालूम है कि गुस्सा उन्हे कभी आता ही नही । मै अपने दोस्तोंको यक़ीन दिलाना चाहती हूँ कि घरेलू ज़िन्दगीमे भी उन्होने कभी किसी आबगीने (बोतल, नाजुक शीशे) को ठेस नही लगायी ।·····हमारी खानगी (घरेलू) ज़िन्दगीके बारेमे एक बार 'जोश' साहबने सवाल किया—'आप और फ़ैजमें लड़ाई भी होती है या नही ।' मेरा जवाब नफ़ी (नहीं) में सुनकर उन्होंने अफ़सोसके साथ अपना सिर हिलाते हुए कहा—'कितने अफ़सोसकी बात है ? फिर आप लोगोंमें मुहब्बत कैसे हो सकती है' ? मै नहीं कह सकती कि जोश साहब ने यह नतीजा कैसे अख़्ज (ग्रहण) किया ? लेकिन मैं आज तक उनसे इत्तफ़ाक़ राय न कर (सहमत न हो) सकी ।

"हमारी ज़िन्दगीमें दुःख-दर्द, रंज और मलालके मौके भी आये है । मैंने फ़ैज़को एक प्यारी बहन, एक भाई, और बहुत-से अज़ीज़ और महबूब

दोस्तोंसे महरूम होते देखा है। लेकिन वे जैसे इन गमोंको बर्दाश्त करनेके आदी हो गये है।.....इन्सानकी फ़ितरती शराफ़तपर उनका अकीदा बहुत रासिख (दृढ विश्वास) है। यह शराफत ना-साजगार हालात- (प्रतिकूल परिस्थितियों) मे मस्ख (विकृत) तो हो जाती है, लेकिन उसका वजूद (अस्तित्व) खत्म कभी नहीं होता। वे कहते है कि— "इन्सानी फितरतका जाइजः लेते (मनुष्य स्वभावका परीक्षण करते) हुए हम उसकी खामियों (कमजोरियों) पर ही क्यों अंगुश्त-नुमाई करें (उँगली उठायें) ? हम उसकी खूबियोंकी बात क्यों न करे ?"

"लोग मुझसे पूछते थे कि 'शादीके बाद फ़ैजने शाइरी क्यों तर्क कर दी ?' लेकिन यह दुरुस्त नहीं। १९५०ई० तक वे कभी-कभी कुछ-न-कुछ लिखते रहे और इस दौरानमे भी उन्होंने बाज नज्मे और ग़जलें बड़ी मार्कातुलआरा (महत्त्वपूर्ण एवं ध्यान देने योग्य) कही हैं। लेकिन यह दुरुस्त है कि उन्होंने ज्यादा नहीं लिखा। फ़ैज इसका यह जवाब देते थे कि—"शायद अब मैं बहुत ज़्यादा आसूदः खातिर (परितृप्त) हो गया हूँ और मेरी बहुत ज़्यादा खबरगीरी की जाती है। लेकिन अच्छी शाइरीके लिए शायद तकलीफ़ और ग़म ज़रूरी है।"

"जब आस्मानपर बादल छा जाते है और हवा तेज़ चलने लगती है तो शाइरकी रगे-एहसास (भावतन्त्री) भी फड़क उठती है। उसकी शाइरी उसके दिलमें करवटें बदलकर बेदार (जागृत) हो जाती है और वह सवाल करता है—"क्या मै दिनका बाक़ी हिस्सा बाग़में गुजार सकता हूँ, मुमकिन है मैं कोई नज्म कहनेमें कामयाब हो जाऊँ ? कई घण्टेके बाद वे वापिस आते है तो मैं उनकी आहट सुनकर अन्दाज़ा कर लेती हूँ कि उन्हें कामयाबी हुई कि नही"।[1]

---

१. नक़ूश शख्सियात नं० १, जनवरी १९५६ पृ० ४७४-७८।

उर्दूके ख्यातिप्राप्त साहित्यिक सैय्यद सज्जाद जहीर जो कि स्वयं भी रावलपिण्डी षड्यन्त्र केसमे बन्दी थे, लिखते है—"एक दिन यह इत्तिला मिली कि 'दस्ते-सबा' शाया (प्रकाशित) हो गयी। गो हम उसकी तमाम चीजे फैजके मुँहसे सुन चुके थे। लेकिन इस खबरसे हममे-से तमाम उन क़ैदियोंको जो अदबसे मस (साहित्यसे दिलचस्पी) रखते थे। एक गैर मामूली मसर्रत हुई। जेलके हुक्कामसे इजाजत लेकर हमने एक पार्टी भी कर डाली, जिसमे हम तमाम कैदियोने मिलकर फैजको दस्ते-सबाकी इशाअतपर मुबारकबाद दी। इस मौकेपर और बातोके अलावा मैने यह भी कहा—"बहुत अर्सा गुजर जानेके बाद जब लोग रावलपिण्डी साजिशके मुकदमेको भूल जायेंगे और पाकिस्तानका मौरिख (इतिहास-लेखक) १९५२ई० के अहम वाकयात (महत्त्वपूर्ण घटनाओ) पर नजर डालेगा तो गालिबन उस सालका सबसे अहम तारीखी वाकया (महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक-घटना) नज़्मोंकी इस छोटी-सी किताबकी इशाअत (प्रकाशन) को ही क़रार दिया जायेगा"।[1]

अमर कृति

केवल ९३ पृष्ठकी 'नक्शे-फ़रियादी' प्रकाशित होते ही, जो कि 'फैज'की चन्द छोटी-छोटी नज़्मों एवं ग़ज़लोंका सकलन है, उर्दू-संसारमे इन्किलाब-सा आ गया। इस छोटी-सी कृतिके कारण जो प्रतिष्ठा एवं ख्याति फैजको प्राप्त हुई, इससे पूर्व किसी भी उर्दू-शाइरको इतनी अल्प कविता-निधिपर और इतनी शीघ्र प्रसिद्धि नसीब नही हो पायी। मिर्ज़ा गालिबका भी दीवान अन्य शाइरोंकी तुलनामें बहुत सक्षिप्त है और उनका स्थान शाइरोमे सर्वोपरि समझा जाता है, किन्तु यह प्राथमिकता एवं यश उन्हे उनके जीवन-कालमें न मिलकर ३०-४० वर्षके उपरान्त प्राप्त हुआ। 'फ़ैज़'-

शाइराना मर्त्तबा

---

१. सरे-आग़ाज़ ज़िन्दानामा पृ० ६।

को केवल अपनी इस संक्षिप्त कृतिके बलपर प्रगतिशील (तरक़्क़ी-पसन्द) शाइरोमें सर्वोच्चस्थान प्राप्त हुआ। बुजुर्ग शाइरोने उनकी मुक्त हृदयसे सराहना की। समवयस्कोंने उन्हे प्यार किया। उदीयमान शाइरोंने उन्हे आदर दिया और अपना पथ-प्रदर्शक समझा। फ़ैज़का व्यक्तित्व कितना उच्च एवं शालीन है, वे कितने कोमल और संकोची है। उनके जेलके साथी उनकी सुख-सुविधाका कितना ध्यान रखते थे और कितना आदर देते थे ? यह फ़ैज़ साहबके साथी रावलपिण्डी अभियोगके बन्दी मेजर मुहम्मद-इसहाक़को जबाने-मुबारकसे सुनें—

"सैय्यद सज्जाद ज़हीरवाले अहातेमे हम छुट्टीके दिन सुबहको जाया करते थे, जहाँ काफ़ी और बिस्कुटसे तवाज़अ (ख़ातिर) होती थी। मिर्ज़ा सौदाके गुंचेकी तरह 'फ़ैज़' साहबकी बियाज़ बरदारी (शाइरीकी नोटबुक उठाकर ले चलने)का काम मेरे सुपुर्द था। जब वे मजिलसे-मुशाअ़रेकी तरफ़ या सज्जाद ज़हीरके यहाँ जाते तो मै नोटबुक उठाये पीछे-पीछे होता। दूसरे रफ़ीक़ (मित्र-साथी) जब हमे इस तरह जुलूसमे चलता देखते तो चारों तरफ़ खुशीकी लहर दौड़ जाती। इसलिए कि जेल-मे फ़ैज़ साहबके ताज़ा कलामका वुरूद, मसऊद-ओ-जश्न (नवीन नज्म या ग़ज़लका रचा जाना कल्याणप्रद उत्सव) से कम नहीं होता था और फिर जिस अदासे हम चलते थे, वह भी खुशतबई (आनन्दी स्वभाव) की एक अच्छी खासी मज़ाहिया (मनोरंजक) सूरत होती थी। 'फ़ैज़' साहब ख़रामाँ-ख़रामाँ मुस्कराते हुए, घबराये-से शर्माये-से चलते और मैं एक लट्ठबन्द जाटकी तरह गरदन अकड़ाये, नाक आस्मानकी तरफ़ उठाये चलता था और फ़ैज़ साहबके तशरीफ़ रखनेपर निहायत बाअदब, लेकिन बा विक़ार अन्दाजमे जबतक बियाज़ उनकी ख़िदमतमे पेश नही कर लेता था, मुस्कराता तक नही था।.....

"शेरका आलम तारी होता था तो 'फ़ैज' साहब खामोश हो जाया करते थे। अलबत्ता उठते-बैठते गुनगुनाते ज़रूर रहते थे। कुछ अर्सा

गुनगुना चुकनेके बाद इधर-उधर देखने लगते। हम भाँप लेते थे कि सामईन (श्रोताओं) की ज़रूरत है। चुनांचे हम हुज़ूरे-शाइर पहुँच जाते थे और इधर-उधरकी हाँकनेके बाद ग़ज़ल या नज़्मका मुतालबा (सुनानेकी प्रार्थना) कर दिया करते थे कि अब बहुत अर्सा हो गया है और लोग क्या कहेंगे ? वग़ैरह-वग़ैरह। अगर नज़्म या ग़ज़ल तैयार होती थी तो एक-आध-शेर सुना दिया करते थे, वर्ना हुक्म होता था कि भाग जाओ।

उनके आस-पासमें शार-ओ-ग़ोगा (कोलाहल, हुल्लड़) दंगा-फ़साद, लड़ाई-झगड़ा बन्द कर दिया जाता था। 'फ़ैज़' साहबने बहुत नाज़ुक तबीयत पायी है। हमसाये (पड़ोस) में तू-तू, मैं-मैं हो रही हो, दोस्तोंमें तल्ख़कलामी (कटु वार्तालाप) हो, या यूँ ही किसीने त्योरी चढ़ा रखी हो, उनकी तबीयत ज़रूर ख़राब हो जाती है।

"सरगोधा और लायलपुरकी जेलोंमें तीन महीनोंकी क़ैदे-तनहाईके दिन बहुत मुश्किल दिन थे। काग़ज़-क़लम, दावात-किताबें, अख़बार ख़तूत सब चीज़ें ममनूअ़ (वर्जित) थीं। उन्होंने इस तरफ़ इशारा भी किया है—

मताए-लोहो-क़लम[1] छिन गयी तो क्या ग़म है
कि ख़ूने-दिलमें डुबो ली हैं उँगलियाँ मैंने
ज़बाँ पै मुहर लगी है तो क्या, कि रख दी है
हर-एक हलकए-ज़ंजीरमें[2] ज़बाँ मैंने*

---

१. लिखनेके लिए पट्टी और क़लमरूपी निधि, लिखने-पढ़नेके साधन। २. जंजीरकी हरएक कड़ीमें मूकवाणी (भाव यह है कि भाषण देने और लिखनेपर पाबन्दी लगा देनेसे क्या होता है ? मेरे पाँव-हाथमें पड़ी हुई बेड़ियाँ मेरे हृदयोद्गार प्रकट करनेको मुखरित हो उठेंगी,

*. रूदादे- क़फ़स 'ज़िन्दानामा' पृ० २९-३३।

उन्हीं दिनों 'फैज'पर १२४ पंक्तियोंकी नज़्म अली सरदार जाफ़रीने कही थी। यहाँ उसकी ५८ पंक्तियाँ दी जा रही हैं--

तेरे नग़्मे साथ थे मेरे

और तेरी आवाज़की शबनम[1]
घासके लब[2] तर कर जाती थी
गुलके कटोरे भर जाती थी
शामकी रंगत बनकर अक्सर
रूए-जहाँपर[3] छा जाती थी
चाँदनीका मलबूँस[4] पहन कर
आम और इमलीके पेड़ोंपर
थक कर जैसे सो जाती थी
और मैं तेरे नाज़ुक मीठे
प्यारे गीतोंका गुलदस्तः
अपने धड़कते दिलसे लगाये
ख़्वाबोंकी नीली वादीमें[5]
आहिस्ता-आहिस्ता चलता
जेलसे बाहर आ जाता था
ज़ुल्मके दिलपर छा जाता था

---

१. ओस, २. ओठ, ३. संसारपर, ४. वस्त्र, ५. स्वप्नोंकी घाटीमें।

आज मगर तू क़ैद है साथी
कैसी है यह क़ैदकी दुनिया ?
क़ल्बो-नज़रकी महरूमी[1] है
तारीकी[2] और तनहाईमें
पत्थरकी ख़ामोश हँसी है
आज है जब तू जेलमें तनहा
मैं अपनी आवाज़का शोला[3]
और अपनी ललकारकी बिजली
गीतोंके रेशममें रख कर
तेरी ख़ातिर भेज रहा हूँ

मेरी ज़बाँसे बोल रहे हैं,
हिन्दके सारे लिखने वाले
अपनी मुहब्बतके गुलदस्ते
तेरी जानिब भेज रहे हैं
जलती हुई यह शाख़ उठा ले
देख इसमें क्या फूल खिले हैं
शोला, बिजली, नग़मा[4] बन कर
बिछुड़े साथी आन मिले हैं
दूर है जो लाहौरकी बस्ती
ऊँची ज़िन्दाँकी[5] दीवारें

---

१. दिल जो महसूस करता है, आँख जो कुछ देखती है, उन्हे प्रकट करनेपर रोक लगी हुई है, २. अँधेरेमे, ३. आग्नेय वाणी, ४. गीत, ५. कारागारकी ।

इक झूटे आईनकी[1] सरहद[2]
तपता जंगल, जलता पर्वत
दिल और रूहके[3] बीचमें हायल[4]
फिर भी कोई दीवार नहीं, जो
ज़ख़्मोंको तक़्सीम[5] करेगी

ज़ुल्मसे लेकिन डरना कैसा !
मौतसे पहले मरना कैसा !
बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल ज़बाँ अबतक तेरी है
बोल कि किस क़ातिलका दामन
ख़ूने-बहाराँसे रंगीं है
किसकी गरदनमें डालर के
सोनेकी ज़ंजीर पड़ी है
किसने अमरीकाके हाथों
ख़ाके-वतनको बेच दिया है
बेटी और बहनके आँचल
माँके कफ़नको बेच दिया है
कौन है जो जंगी शोलोंमें
पाकिस्तानको झोंक रहा है
कौन है जो इक़बालके दिलमें
ज़ुल्मकी कीलें ठोंक रहा है

---

१. क़ानूनकी, २. सीमा, ३. आत्माके, ४. उपस्थित, ५. बटवारा।

शाइरकी आवाज़को किसका ख़ूनी पंजा घोंट रहा है

"कई दफ़ा ऐसा हुआ कि सिगरेट ख़त्म हो गये, लेकिन बजाय इसके कि साथियोसे माँग लें, बेकरारी दूर करनेके लिए अहातेके चक्कर काटने शुरू कर दिये। इस बेक़रारीकी तशख़ीस (निदान) मे हमे काफ़ी अर्सा लगा। उनको छिपकलियोसे बहुत घिन आती थी। मेरे ख़याल-मे ख़ौफ़ भी खाते थे। एक दिन हम सब बरा-मदेमें चारपाइयाँ डालकर सोनेकी तैयारीमे थे कि 'फ़ैज' साहबने दफ़अतन उठकर इधर-उधर चक्कर काटने शुरू कर दिये। अताकी चारपाई पास ही थी। उसने सोचा कि दालमे कुछ काला है। हाथकी तरफ़ देखा तो सिग-रेट सुलग रहा था। फ़ैज़ साहबकी नज़रोंका पीछा किया। देखा कि उनकी नज़रें बार-बार छतकी तरफ़ उठ रही थीं। वे चारपाईके पास आते थे, ऊपर देखते थे और आगे निकल जाते थे। फिर घूमकर यही अमल दुह-राते थे। अताने छिपकलीको देख लिया और उठकर 'फ़ैज़' साहबकी चार-पाई खींचकर एक तरफ़ कर दी"।[1]

संकोच-शील स्वभाव

'फ़ैज'के भाई हैदराबाद जेलमे उनसे मिलने आये थे कि १८ जुलाई १९५२ ई० को सुबहको नमाज़ पढ़ते हुए अचानक अल्लाहको प्यारे हो गये। भाईके निधनसे 'फ़ैज'को इतना अधिक क्लेश पहुँचा कि कई महीने अर्द्ध मृतक-से रहे। एक रोज़ तो चारपाईसे उठते हुए बेहोश होकर फ़र्शपर गिर पड़े। उसी शोक-सन्तप्त परिस्थितिमे उन्होंने भाईकी स्मृतिमे यह नौहा कहा—

भाईकी मौत

---

१. रूदादे-क़फ़स 'ज़िन्दानामा' पृ० ४०।

मुझको शिकवा[1] है मेरे भाई कि तुम जाते हुए
ले गये साथ मेरी उम्रे-गुज़िस्तः की[2] किताब
इसमें तो मेरी बहुत क़ीमती तसवीरें थीं
उसमें बचपन था मेरा, और मेरा अहदे-शबाब[3]
इसके बदलेमें मुझे तुम दे गये जाते-जाते
अपने ग़मका यह दमकता हुआ ख़ूँरंग[4] गुलाब
क्या करूँ भाई ! यह एज़ाज़[5] मैं क्यों कर पहनूँ ?
मुझसे ले ले मेरी सब चाक[6] क़मीज़ोंका हिसाब
आख़िरी बार है लो मान लो इक यह भी सवाल
आज तक तुमसे मैं लौटा नहीं मायूस[7] जवाब
आके ले जाओ तुम अपना यह दहकता हुआ फूल
मुझको लौटा दो मेरी उम्रे-गुज़िश्तः की किताब

जाहिरामे तो उक्त नौहा, नौहा नहीं, शिकायतनामा मालूम होता है कि--"तुम मेरी उम्रे-गुजिस्तःकी किताब ले गये, जिसमे मेरे बचपन और युवावस्थाके चित्र थे, और बदलेमे खूनसे सना हुआ गुलाबका फूल दे गये।" मगर यही सिर्फ़ ६ शेरका नौहानामा हज़ारों अशआ़रमें कहे गये सैकड़ों नौहानामोंपर भारी और करुण है। नौहेका एक-एक मिसरा दिलको मसोसकर रख देता है, हृदयमे टीस-सी उठने लगती है। 'फ़ैज'ने अपनी तूलिकासे सभी कुछ तो चित्रित कर दिया, स्पष्ट करनेको शेष बचा भी क्या ? भाईके साथ-साथ बचपन और जवानीके दिन जो बिताये थे, वे आनन्दपूर्ण बातें उसके निधन होते ही समाप्त हो गयीं। केवल स्मृतियाँ शेष रह गयी।

---

१. शिकायत, २. व्यतीत हुए जीवनको, ३. यौवनके चित्र, ४. रक्त मिश्रित गुलाब, ५. सम्मानपूर्ण वस्तु, ६. फटी हुई, ७. निराश।

फ़ैजकी शाइरीमे रोमानी और इन्क़िलाबी भावोका उसी प्रकार सुरुचिपूर्ण मिश्रण है, जिस प्रकार कि फूलोमे रूप और सुगन्धका होता है कि प्रयास करनेपर भी एकको दूसरेसे पृथक् नहीं किया जा सकता। कुछ शाइर केवल हुस्नो-इश्क़के नग़मे गाते है, कुछ शाइर सिर्फ इन्क़िलाबी नारे लगाते है, और कुछ शाइर दोनों रगोसे फाग खेलते हैं। उन सबसे फ़ैज़की डगर बिलकुल निराली और स्वयं उनकी आविष्कृत है। उनके यहाँ न तो हुस्नो-इश्कको ऐसी भरमार है कि—

फ़ैज़की शाइरी

अल्लाह-अल्लाह हुस्नकी सप्लाइयाँ
इश्क़को आने लगीं उबकाइयाँ

और न इन्क़िलाबकी ऐसी चीख़-पुकार है कि तोपोंकी गर्जनाएँ भी जिसके समक्ष नक़्क़ारखानेमे तूतीकी आवाज़ मालूम होने लगे और साम्यवादी लाल झण्डे-जैसी प्रत्येक वस्तु लाल-लाल दिखायी देने लगे—

सुर्ख़ कलियाँ, सुर्ख़ पत्ते, सुर्ख़ फूल
सुर्ख़ तूफ़ाँ, सुर्ख़ आँधी, सुर्ख़ धूल
और हर सुर्ख़ीमें सुर्ख़ीए-शराब
इन्क़िलाबो-इन्क़िलाबो-इन्क़िलाब

—अम्न लखनवी

फ़ैज़के यहाँ न तो शर्बत-जैसी मिठास है, न नीबू-जैसी खटास। उनकी शाइरीमे सन्तरे-जैसा खट-मिट्ठापन है। उनके यहाँ इश्क़की वह आग नही जो आशिक़के दिल और जिगरको जलाकर भस्मीभूत कर दे। बक़ौले-मिर्ज़ा दाग़—

इश्क़ दरपर्दा फूँकता है आग
यह जलाना नज़र नहीं आता

तेरी उल्फ़तकी चिन्गारीने ज़ालिम ! इक जहाँ फूँका
इधर चमकी, उधर सुलगी, यहाँ फूँका वहाँ फूँका

अपितु फ़ैज़के यहाँ वह प्रेम-अग्नि है जो अपनी धीमी-धीमी तपिशसे दिल और जिगरके दर्दको सेंक देती है। उनके यहाँ क्रान्तिका वह एटम बम नहीं जो संसारको विध्वंस कर दे, उनके यहाँ तो क्रान्तिकी वह ज्योति है जो साम्राज्यवादके अन्धकारको दूर कर सकनेकी क्षमता रखती है।

फ़ैज़ भी युवा रहे हैं, उनका हृदय भी किसीके नैन-बाणोंसे घायल हुआ है। वे भी अपना विरह-ताप मिटानेको लालायित रहे हैं। वे भी प्रेमकी पेंगें बढ़ाते रहे है, किन्तु वे आपा नहीं खो सके। संयोगितामें लीन पृथ्वीराज चौहानकी तरह पराजयका मुख देखना फ़ैज़ मर्दानगी नहीं समझते और जहाँगीरके समान नूरजहाँके इशारोंपर नाचनेके भी वे क़ायल नही। प्रेमीके अतिरिक्त वे मनुष्य भी हैं। मनुष्यताके नाते दीन-दरिद्रोंकी सेवा करना, मानवतापर होते हुए अत्याचारोंको दूर करनेका प्रयास करना भी वे अपना कर्तव्य समझते हैं।

प्रियतमासे एकान्त-मिलनके सुनहरे अवसरपर भी प्रियामे लीन होनेके एवज़ उनके हृदयमे एक फाँस-सी खटकती रहती है। इस आत्म-लीनताके अभावको, उपेक्षा भावको प्रियतमा ताड़ जाती है। उसके उपालम्भ देनेपर फ़ैज़ने उस समयकी अपने मनकी स्थितिको यूँ स्पष्ट किया है—

मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब[1] न माँग

मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख़्शाँ[2] है हयात[3]
तेरा ग़म[4] है तो ग़मे-दहरका झगड़ा क्या[5] है
तेरी सूरतसे है आलममें[6] बहारोंको सबात[7]
तेरी आँखोंके सिवा दुनियामें रक्खा क्या है

तू जो मिल जाय तो तक़दीर निगूँ[8] हो जाये
यूँ न था मैंने फ़क़त चाहा था यूँ हो जाये
और भी दुःख हैं ज़मानेमें मुहब्बतके सिवा
राहतें[9] और भी हैं वस्लकी राहतके सिवा[10]
अनगिनत सदियोंके तारीक बहीमाना तिलिस्म[11]
रेशमो-अतलसो-कमख़्वाबमें बनवाये हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाज़ारमें जिस्म
ख़ाकमें लिथड़े हुए, ख़ूनमें नहलाये हुए

जिस्म-निकले हुए अमराज़के तन्नूरों-से[12]
पीप बहती हुई, गलते हुए नासूरों-से

---

१. प्रेम-पात्र, माशूक, २. प्रकाशमान, प्रभायुक्त, ३. जीवन, ४. इश्क़, ५. सांसारिक चिन्ताएँ किस खेतकी मूली ?, ६. विश्वमें, दुनियामें, ७. स्थायित्व, ८. भाग्य परिवर्तन हो जाये, तक़दीर सिर झुका ले, ९. सुख-भोग, १०. मिलन-सुखके अतिरिक्त, ११. प्राचीन युगसे प्रचलित अज्ञान-पूर्ण और अन्धविश्वास रूपी तिलिस्म, १२. रोगोंके कारण शरीर तन्दूरकी तरह निकले हुए।

लौट जाती है उधरको भी नज़र क्या कीजे
अब भी दिलकश[1] है तेरा हुस्न[2] मगर क्या कीजे
और भी दुःख हैं ज़मानेमें मुहब्बतके सिवा
राहतें और भी हैं, वस्लकी राहतके सिवा
मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरे महबूब न माँग

फैज़की उक्त नज़्मपर हमें एक घटना स्मरण हो आयी। द्वितीय महा-युद्धके दिनोंमें एक हमारे मित्र विरह-तापसे काफ़ी झुलसनेके बाद अपनी प्रियतमासे मिलनेके लिए कलकत्तेसे दिल्ली पहुँचनेका अवसर जुटा पाये। अनेक विघ्न-बाधाओंको पार करके किसी तरह दोनोंका मिलन हुआ। सहेलीके विवाहमें रात-भर रहनेका बहाना करके प्रेयसी आयी थी। एक जीर्ण-शीर्ण-सी धर्मशालामें बहुत मिन्नतें करनेके बाद चपरासीकी कोठरीमें जगह मिली थी। कोठरीका कच्चा फ़र्श गीला, दीवारें और छत काली-कलूटी, जालोंकी भरमार, जिसमें छिपकलियाँ निर्द्वन्द्व विचर रही थी। झींगुरों और मच्छरोंकी भरमार।

इस कष्ट-साध्य मिलनमें भी प्रेमी वह प्यार न दे सका, न ले सका, जिसकी दोनोंको अर्सेसे चाह थी। प्रियतमाके ताना देनेपर कि—"यह तुम्हें क्या हो गया है? पत्रोंमें तो ऐसी बेचैनी प्रकट करते रहे कि पढ़-पढ़कर रुलाई आती थी। मुझे दिन-रात सुलगाते रहे और आज जानपर खेलकर किसी तरह आयी भी तो मौनीबाबा बन गये। न जाने तुम इतने मुर्झा-से क्यों गये हो? तुम्हारी वह प्रफुल्लता, मादकता किस डायनने चाट ली? मेरे छैल-छबीले चितचोर तुम कृष्णके बदले यह राम कबसे बन गये?"

अब वह अपनी इस राधाको कैसे बताये कि वे कुंज-गलियोंमें आँख-मिचौनी खेलनेके दिन गये। कालीदहमें चन्दनके डण्डेसे मखमली

---

१. आकर्षक, २. रूप।

गेंद फेंकनेके समय बह गये और लुक-छिपकर मिलनेके वक्त लद गये। उसने द्रौपदीकी पुत्रियोंके चीर उतरते हुए देखे हैं। उसने रावणों-द्वारा सीताओंका अपहरण होते हुए देखा है। अब वह नन्दगाँव बरसानेवाला रसिया मुरलीधर नहीं बना रह सकता। उसे तो सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण अथवा राक्षस-वंशनाशक राम बनना ही होगा। वह अपनी प्रियतमासे मिलकर अपने सब अरमान पूरे करना चाहता था और वे सब भाव उँड़ेल देना चाहता था जो कि मुद्दतसे उसके मनमें उमड़ रहे थे, किन्तु उस विश्वासघाती हृदयके आगे बेबस था, जो कि उस प्रिया-मिलनके नाजुक मौकेपर असहयोग कर बैठा था।

उसका हृदय चिकोटियाँ काटता रहा और वे घटनाएँ स्मरण कराता रहा, जो कि उसने अभी हालमें स्वयं अपनी आँखोंसे कलकत्तेमें देखी थीं। उसकी आँखोंमें वह बंगालकी अकालपीड़िता बुढ़िया झलक आयी जो अपने पौत्रके भोजनपर टूट पड़ी थी। उसे वह किशोरी भी सुबकती दीख पड़ी। जिसने उससे कहा था—"बाबू पहले रोटी खिला दो, फिर चाहे जिधर ले चलना" उसे चौरंगीकी वह दोपहरी भी स्मरण हो आयी, जहाँसे कुछ गोरे एक संभ्रान्त महिलाको घसीटकर कारमें डालकर नौ-दो ग्यारह हो गये थे और उपस्थित समूह जीवन-मुक्त बना तमाशा देखता रहा था। उसे न्यू मार्केट स्थित रेस्टोराँकी वह सेल्स गर्ल्स भी चीखती-सी दिखायी दी, जिसपर कई टामी टूट पड़े थे, और अपने उस भाईकी जो चिकित्साके अभावमें घुलता हुआ मृत्यु-मुखमें जा रहा था; याद भी उसी वक्त आनी थी। वह न तो प्रेमपगी बातें ही कर सका और न अपनी मनोव्यथा ही कह सका। लाचार हतबुद्धि-सा वापिस चला आया। फ़ैज चूँकि शाइर है, अपनी मनोव्यथा प्रकट करना जानते हैं। फैजकी उक्त नज़्म 'मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग' और निम्नलिखित 'रकीबसे' नज़्मके ६, ७, ८ बन्द हमारे मित्रकी मनोदशाका देखिए कैसा हूबहू चित्रण है—

रक़ीबसे

आ कि वाबस्ता[1] हैं, उस हुस्नकी यादें तुझसे
जिसने इस दिलको परीख़ाना[2] बना रक्खा है
जिसकी उल्फ़तमें भुला रक्खी थी दुनिया हमने
दहरको[3] दहरका अफ़साना[4] बना रक्खा है

आश्ना[5] हैं तेरे क़दमोंसे वे राहें जिनपर
उसकी मदहोश जवानीने इनायत[6] की है
कारवाँ गुज़रे हैं, जिनसे उसी रानाईके[7]
जिसकी इन आँखोंने बेसूद[8] इबादत[9] की है

तुझसे खेली हैं वोह महबूब[10] हवाएँ जिनमें
उसके मलबूसकी[11] अफ़सुर्दा[12] महँक बाक़ी है
तुझपै भी बरसा है उस बामसे[13] महताबका नूर[14]
जिसमें बीती हुई रातोंकी कसक बाक़ी है

तूने देखी है वह पेशानी[15] वो रुख़्सार[16], वो होंट
ज़िन्दगी जिनके तसव्वुरमें[17] लुटा दी हमने
तुझ पै उट्ठी हैं वो खोयी हुई साहिर[18] आँखें
तुझको मालूम है क्यों उम्र गँवा दी हमने ?

---

१. संबद्धित, २. प्रियाका मन्दिर, ३. विश्वको, ४. इतिहास, ५. परिचित, जानकार, ६. कृपा, ७. यात्रीदल, ८. सुन्दरताके, ९. निष्काम, निष्प्रयोजन, १०. वन्दना, भक्ति, ११. प्यारी, १२. परिधानकी, १३. कुम्हलायी हुई गन्ध, १४. छतसे, ऊपरी कमरेसे, १५. चन्द्रप्रकाश, १६. मस्तक, १७. कपोल, १८. ध्यानमें, १९. जादूभरी।

हम पै मुश्तरका[1] हैं एहसान ग़मे-उल्फ़तके
इतने एहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकूँ
हमने इस इश्क़में क्या खोया है क्या सीखा है ?
जुज़[2] तेरे औरको समझाऊँ तो समझा न सकूँ

आजिज़ी[3] सीखी ग़रीबोंकी हिमायत सीखी
यासो-हिरमानके[4] दुःख-दर्दके माने सीखे
ज़ेरदस्तोंके[5] मुसाइबको[6] समझना सीखा
सर्द आहोंके रुख़े-ज़र्दके[7] माने सीखे

जब कहीं बैठके रोते हैं, वे बेकस[8] जिनके
अश्क[9] आँखोंमें बिलकते हुए सो जाते हैं
नातवानोंके[10] निवालों पै[11] झपटते हैं उक़ाब[12]
बाज़ू तोले हुए मँडलाते हुए आते हैं

जब कभी बिकता है बाज़ारमें मज़दूरका गोश्त
शाहराहों पै[13] ग़रीबोंका लहू बहता है
आग-सी सीनेमें रह-रहके उबलती है न पूछ
अपने दिल पै मुझे क़ाबू ही नहीं रहता है

---

१. साझेदारीके, २. तेरे अतिरिक्त, केवल तेरे सिवा, ३. नम्रता, ४. आशा-निराशाके, ५. निर्धनोंके, पराश्रितोंके, ६. कष्टोंको, ७. पीत-मुखोंके, ८. निरुपाय, लाचार, ९. आँसू, १०. निर्बलोंके, ११. ग्रासोंपर, १२. बाज़, गिद्ध, १३. आम रास्तोंपर ।

'जो ग़म हुआ उसे ग़मे-जानाँ बना लिया' यानी सांसारिक आपदाएँ किसी भी कारणसे आयें, वे सब इश्क़के कारण आयीं; यही समझकर उसका उल्लेख ग़ज़लमे करते हैं। लेकिन आजका शाइर ग़मे-दौराँको ग़मे-जानाँ न बनाकर ग़मे-जानाँको गमे-दौराँ बनानेके पक्षमे है।

हमपर अकेले ही यह मुसीबतोंका पहाड़ नहीं टूट रहा है, अपितु समस्त मानव-समाज इसके नीचे पड़ा हुआ कराह रहा है। उन सबका दुःख दूर होनेमें ही अपना कल्याण है। यही भावना 'ग़मे-दौराँ है।'

राष्ट्रपिता बापूपर जो अमानुषिक अत्याचार दक्षिण अफ्रीकामे गोरों-द्वारा हुए, बापूने उन्हे व्यक्तिगत न समझकर समस्त अश्वेत जातिका अपमान समझा। इसी समझको 'ग़मे-दौराँ' कहते हैं।

एक अबला भरी जवानीमें विधवा हो जाती है। वह बिलख-बिलख कर रोनेके बजाय, यह समझकर कि यह आपदा केवल उसीपर नहीं आयी है, न जाने कितनी नारियाँ इस दुःखसे बिलख रही हैं, उनके उद्धारके लिए आश्रमों और शिक्षालयोंका प्रबन्ध करनेमें जुट जाती है। घर-घर जाकर विधवाओंको सान्त्वना देती है। इसी कार्यको 'ग़मे-दौराँ' कहते है।

यदि किसी पुत्रवती माँका इकलौता लाल देशहितमें शहीद हो जाता है और उसकी माँ अपनेको निपूती न समझकर, समूचे देशकी माँ समझ लेती है। उसी समझको 'ग़मे-दौराँ' कहते है। उसी ग़मे-दौराँको फ़ैज़ यूँ व्यक्त करते हैं—

सोच

क्यों मेरा दिल शाद[1] नहीं है ? क्यों ख़ामोश रहा करता हूँ ?
छोड़ो मेरी रामकहानी, मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ

---

१. प्रफुल्ल, प्रसन्न।

मेरा दिल ग़मगीन है तो क्या ? ग़मगीं यह दुनिया है सारी
यह दुःख तेरा है न मेरा हम सबकी जागीर है प्यारी
तू गर मेरी भी हो जाये दुनियाके दुःख यूँही रहेंगे
पापके फन्दे ज़ुल्मके बन्धन अपने कहेसे कट न सकेंगे

ग़म हर हालतमें मोहलिक[1] है, अपना हो या और किसीका
रोना-धोना जीको जलाना यूँ भी हमारा, यूँ भी हमारा
क्यों न जहाँका ग़म अपना लें बादमें सब तदबीरें[2] सोचें
बादमें सुखके सपने देखें सपनोंकी ताबीरें[3] सोचें

बे-फ़िक्रे धन-दौलतवाले यह आख़िर क्यों ख़ुश रहते हैं ?
इनका सुख आपसमें बाँटें, यह भी आख़िर हम जैसे हैं
हमने माना, जंग कड़ी है, सर फूटेंगे ख़ून बहेगा
ख़ूनमें ग़म भी बह जायेंगे हम न रहें, ग़म भी न रहेगा

अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिए जिन्होंने कारावास एवं कालेपानीकी यातनाएँ सही है। जिनके इष्ट-मित्रोंको फाँसियाँ हुई हैं। अत्याचारके विरुद्ध संघर्ष करनेपर जिनके भाई या पुत्र पुलिसकी गोलियोंसे शहीद हुए है, या जो स्वयं लाठियोंके प्रहारसे अपंगु हो गये है। वे भुक्तभोगी ही उस कष्टसाध्य स्थितिको समझते है कि ऐसे अवसरोंपर वृद्ध माता-पिताओंको डकारते हुए चुप कराना, बिलकते हुए मासूम बच्चोके आँसू पोंछना, और आँचलमे मुँह दबाये पत्नीको धैर्य्य बँधाना कितना दुष्कर कर्तव्य है। फ़ैज़ भी पाकिस्तानी शासनकी भट्टीमे ५ वर्षके क़रीब तपते रहे हैं। वे अपनी प्रियतमाको धैर्य्य बँधाते हुए कहते हैं—

---

१. घातक, मार डालनेवाला, २. उपाय, ३. स्वप्न-फल।

चन्द रोज़ और मेरी जान !

चन्द रोज़ और मेरी जान! फ़क़त चन्द ही रोज़
ज़ुल्मकी छाँवमें दम लेने पै मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सहलें, तड़पलें, रोलें,
अपने अजदाद[१]की मीरास[२] है माज़ूर[३] हैं हम
जिस्म पै क़ैद है, जज़्बात पै[४] ज़ंजीरें हैं
फ़िक्र महबूस[५] है, गुफ़्तार पै[६] ताज़ीरें[७] हैं

अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं
ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़लिसकी[८] क़बा[९] है जिसमें
हर घड़ी दर्दके पेवन्द लगे जाते हैं
लेकिन अब ज़ुल्मकी मीयादके दिन थोड़े हैं
इक ज़रा सब्र कि फ़रियादके दिन थोड़े हैं

अर्सए-दहरकी[१०] झुलसी हुई वीरानीमें
हमको रहना है, पै यूँही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथोंका बेनाम गराँबार[११] सितम
आज सहना है, पै यूँही तो नहीं सहना
यह तेरे हुस्नसे लिपटी हुई आलामकी गर्द[१२]
अपनी दो रोज़ा जवानीकी शिकस्तोंका[१३] शुमार

---

१. पूर्वजोकी, २. उत्तराधिकारवाली वस्तु, ३. असमर्थ, लाचार, ४. भावनाओंपर, ५. चिन्तन बन्दी है, ६. वार्तालापपर, ७. दण्ड, सज़ा, ८. निर्धनकी, ९. वस्त्र, १०. संसार रूपी मैदानकी, ११. असह्य अत्याचार, १२. दुःखोंकी धूल, १३. हारका, पराजयोंका।

चाँदनी रातोंका बेकार दहकता हुआ दर्द
दिलकी बेसूद[1] तड़प, जिस्मकी मायूस पुकार
चन्द रोज़ और मेरी जान ! फ़क़त चन्द ही रोज़

आगेके पृष्ठोंमें हम 'फ़ैज़'की सभी रंगकी नज़्में और ग़ज़लें दे रहे हैं।

ख़ुदा वह वक़्त न लाये...

ख़ुदा वह वक़्त न लाये कि सोगवार[2] हो तू
सकूँ की[3] नींद तुझे भी हराम हो जाये
तेरी मसर्रते-पैहम[4] तमाम हो जाये
तेरी हयात[5] तुझे तल्ख़ जाम[6] हो जाये

ग़मोंसे आईनए-दिल गुदाज़[7] हो तेरा
हुजूमे-याससे[8] बेताब हो के रह जाये
वफ़ूरे-दर्दसे[9] सीमाब[10] हो के रह जाये
तेरा शबाब[11] फ़क़त ख़्वाब होके रह जाये

ग़रूरे-हुस्न[12] सरापा नियाज़[13] हो तेरा
तवील[14] रातोंमें तू भी क़रारको तरसे

---

१. व्यर्थ, २. शोकाकुल, ३. सुख-चैनकी, ४. सदैवके लिए खुशियाँ नष्ट हो जायें, ५. जिन्दगी, ६. कड़ुवा घूँट, ७. पिघलनेवाला हृदय-दर्पण, ८. निराशाओंकी भीड़से, ९. व्यथाकी अधिकतासे, १०. पारा, चूर-चूर, ११. यौवन, १२. सौन्दर्याभिमान, १३. विनयी, १४. लम्बी।

तेरी निगाह किसी ग़म - गुसारको[1] तरसे
ख़िज़ाँ - रसीद-तमन्ना[2] बहारको तरसे

कोई [3]जबीं न तेरे संगे-आस्ताँ पै[4] झुके
कि जिसे-अज़्ज़ो-अक़ीदतसे[5] तुझको शाद[6] करे
फ़रेबे-वादए-फ़र्दा पै[7] ऐतमाद[8] करे
ख़ुदा वह वक़्त न लाये कि तुझको याद आये

वह दिल कि तेरे लिए बेक़रार अब भी है
वह आँख जिसको तेरा इन्तज़ार अब भी है

तनहाई[9]

फिर कोई आया दिले-ज़ार[10] ! नहीं, कोई नहीं !
राहरौ[11] होगा कहीं और चला जायेगा
ढल चुकी रात, बिखरने लगा तारोंका ग़ुबार[12]
लड़खड़ाने लगे ईवानोंमें[13] ख़्वाबीदा चिराग़[14]
सो गयी रास्ता तक-तकके हर इक राहगुज़ार[15]

---

१. हमदर्द, दुःखोंसे सहानुभूति रखनेवालेको, २. उजड़ी हुई अभिलाषाएँ, अतृप्त इच्छाएँ, ३. मस्तक, ४. चौखटपर, ५. श्रद्धा एवं विनयसे, ६. प्रसन्न, ७. भविष्यके वादेके फरेबपर, ८. विश्वास, ९. एकान्त, अकेलापन, १०. व्याकुल हृदय, ११. बटोही, पथिक, १२. नक्षत्र-समूह, १३. महलोंमें, १४. सुप्त, स्वप्न देखते हुए दीप, १५. पगडण्डियाँ, गलियाँ, सड़कें ।

अजनबी ख़ाकने धुँधला दिये क़दमोंके सुराग़[1]
गुल करो[2] शमएँ, बढ़ा दो, मै-ओ-मीना-ओ-अयाग़[3]
अपने बे-ख़्वाब किवाड़ोंको[4] मुक़फ़्फ़ल[5] कर लो
अब यहाँ कोई नहीं, कोई नहीं आयेगा

मौज़ूए-सुख़न

गुल[6] हुई जाती हैं, अफ़्सुर्दा सुलगती हुई शाम
धुलके निकलेगी अभी चश्मः-ए-महताबसे[7] रात
और—मुश्ताक़ निगाहोंसे[10] सुनी जायेगी
और—उन हाथोंसे मस[11] होंगे ये तरसे हुए हात

उनका आँचल है कि रुख़सार[12] कि, पैराहन[13] है
कुछ तो है जिससे हुई जाती है, चिलमन[14] रंगीं
जाने उस ज़ुल्फ़की मौहूम[15] घनी छाओंमें
टिमटिमाता है वह आवेज़ा[16] अभी तक कि नहीं ?

---

१. पावोंके चिह्न, २. दीप बुझा दो, ३. मदिरा और सुरापात्र उठा लो, ४. प्रत्यक्ष दिखनेवाले द्वारोंको, खुले हुए दरवाज़ोंको, ५. ताले लगा दो, ६. कविताका प्रसंग, ७. बुझने ही वाली है ८. उदास शाम, चिन्ता-पूर्ण रातें, ९. चन्द्रमा-झरनेसे, १०. उत्सुक नेत्रोंसे, ११. स्पर्श, १२. कपोल, मुख, १३. परिधान, लिबास, १४.चिक, १५. काल्पनिक, भ्रम उत्पन्न करनेवाली, १६. कर्णफूल ।

आज फिर हुस्न-दिलाराकी[1] वही धज होगी
वही ख़्वाबीद:[2]-सी आँखें, वही काजलकी लकीर
रंगे-रुख़सार पै हल्का-सा वह ग़ाज़ेका ग़ुबार[3]
सन्दली[4] हाथ पै धुन्दली-सी हिनाकी तहरीर[5]

अपने अफ़्कारकी,[6] अशआ़रकी दुनिया है यही
जाने-मज़्मूँ[7] है यही, शाहिदे-मानी[8] है यही

आज तक सुर्ख़ी-सियह सदियोंके सायेके तले
आदमी-हव्वाकी औलाद पै[9] क्या गुज़री है,
मौत और ज़ीस्तकी रोज़ना सफ़-आराईमें[10]
हम पै क्या गुज़रेगी, अजदाद पै[11] क्या गुज़री है ?

इन दमकते हुए शहरोंकी फ़रावाँ मख़्लूक़[12]
क्यों फ़क़त मरनेकी हसरतमें[13] जिया करती हैं ?
यह हसीं खेत फटा पड़ता है जोबन जिनका
किस लिए इनमें फ़क़त भूक उगा करती है ?

---

१. हृदयाकर्षक रूपकी, २. स्वप्निल, नींदसे मदमाती, ३. कपोलोंपर पाउडर लगा हुआ, ४. चन्दन-जैसे हाथोंमे, ५. मेहदी लगी हुई, ६. रचनाओंकी, विचारोंकी, ७. लेखोंकी आत्मा, ८. लेखोंका आशय, उद्देश्य (इस शेरका भाव यह है कि अभी तक शाइरोंकी शाइरी हुस्नो-इश्क़के रंगमे सराबोर रही है) ९. मानव सन्तानपर, १०. मृत्यु-जीवनके संग्राममें, ११. पूर्वजोपर, १२. असंख्य जनता, १३. अभिलाषामें ।

यह हर-इक सिम्त[1] पुरइसरार[2] कड़ी दीवारें
जल बुझे जिनमें हज़ारोंकी जवानीके चिराग़

यह हर इक गाम पै[3] उन ख़्वाबोंकी मक़तलगाहें[4]
जिनके परतौसे चराग़ाँ[5] है हज़ारोंके दमाग़

ये भी हैं, ऐसे कई और भी मज़मूँ[6] होंगे
लेकिन उस शोख़के आहिस्तासे खुलते हुए होंट
हाय उस जिस्मके कम्बख़्त दिलावेज़ ख़ुतूत[7]
आप ही कहिए कहीं ऐसे भी अफ़सूँ[8] होंगे ?

अपना मौज़ूए-सुख़न इनके सिवा और नहीं
तबए-शाइरका[9] वतन इनके सिवा और नहीं

शाहराह

एक अफ़सुर्दः शाहराह है दराज़[10]
दौरे-उफ़क़पर[11] नज़र जमाये हुए
सर्द मिट्टी पै अपने सीनेके
सुरमगीं हुस्नको[12] बिछाये हुए

---

१. तरफ़, २. भेद-भरी, रहस्यपूर्ण, ३. पग-पगपर, कदम-कदमपर, ४. सुख-स्वप्नोंकी वधशालाएँ, ५. प्रतिविम्बसे दीप्त है, ६. विषय प्रसंग, ७. चित्ताकर्षक आकृति, ८. मोहक, जादू, ९. शाइरका स्वभाव, १०. लम्बा और उदास जन-मार्ग, ११. क्षितिजपर, १२. सुर्मई रूपको।

जिस तरह कोई ग़मज़दा[1] औरत
अपने वीराँकदेमें[2] महवेख़याल[3]
वस्ले-महबूबके तसव्वुरमें[4]
मू-ब-मू चूर, अज़ू-अज़ू निढ़ाल[5]

—नक़्शे-फ़रियादीसे

ऐ दिले-बेताब ठहर

[२ में-से १ बन्द]

तीरगी[6] है कि उमड़ती ही चली आती है
शबकी[7] रग-रगसे लहू फूट रहा हो जैसे
चल रही है कुछ इस अन्दाज़से नब्ज़े-हस्ती[8]
दोनों आलमका[9] नशा टूट रहा हो जैसे

रातका गर्म लहू और भी बह जाने दो
यही तारीकी[10] तो है ग़ाज़ए-रुख़सारे-सहर[11]
सुबह होने ही को है ऐ दिले-बेताब ! ठहर

---

१. दुःखी, २. वीरान घरमें, ३. विचारोंमें डूबी हुई, ४. प्रियमिलन, की सुखद कल्पनामें, ५. पोर-पोर और बाल-बाल निमग्न, ६. अँधेरी, ७. रातकी, ८. जीवन-नाड़ी, ९. दुनियाका, १०. अँधियारी, ११. सुबहके गालोंका पाउडर, प्रातःकालके कपोलोंका प्रसाधन।

मेरे हमदम ! मेरे दोस्त !!

गर मुझे इसका यक़ीं[1] हो, मेरे हमदम[2], मेरे दोस्त !
गर मुझे इसका यक़ीं हो कि तेरे दिलकी थकन
तेरी आँखोंकी उदासी, तेरे सीनेकी जलन
मेरी दिलजोई,[3] मेरे प्यारसे मिट जायेगी

गर मेरा हर्फ़े-तसल्ली[4] वह दवा हो जिससे
जी उठे फिर तेरा उजड़ा हुआ बेनूर[5] दमाग़
तेरी पेशानीसे धुल जायें ये तज़लीलके दाग़[6]
तेरी बीमार जवानीको शिफ़ा[7] हो जाये

गर मुझे इसका यक़ीं हो, मेरे हमदम ! मेरे दोस्त !!
रोज़ो-शब,[8] शामो-सहर[9] मैं तुझे बहलाता रहूँ
मैं तुझे गीत सुनाता रहूँ हलके शीरीं[10]
आबशारोंके[11] बहारोंके चमन-ज़ारोंके[12] गीत

आमदे-सुबहके[13] महताबके,[14] सैय्यारोंके[15] गीत
तुझसे मैं हुस्नो-मुहब्बतकी हिकायात[16] कहूँ

---

१. विश्वास, २. दुःख-सुखके साथी, प्रेयसी, ३. सान्त्वना प्रकट करनेसे, दिलासा देनेसे, ४. ढारसका शब्द, ५. प्रकाश-रहित, ६. मस्तकसे अपमानके धब्बे, ७. स्वास्थ्य लाभ, आराम, ८. दिन-रात, ९. शाम-सुबह, १०. मधुर, ११. झरनोंके, १२. उद्यानोंके, १३. प्रातःकालके आगमनके, १४. चन्द्रमाके, १५. नक्षत्रोंके, १६. दास्तान, कथाएँ।

कैसे मग़रूर हसीनाओंके बरफ़ाब-से जिस्म[1]
गर्म हाथोंकी हरारतमें[2] पिघल जाते हैं
कैसे इक चेहरेके ठहरे हुए मानूस नक़ूश[3]
देखते-देखते यक लख़्त[4] बदल जाते हैं
किस तरह आरिज़े-महबूबका शफ़्फ़ाफ़बिलूर[5]
यक-ब-यक बादए-अहमरसे[6] दहक जाता है
कैसे गुलचींके लिए झुकती है ख़ुद शाख़े-गुलाब
किस तरह रातका ईवान[7] महक जाता है
यूँ ही गाता रहूँ, गाता रहूँ तेरी ख़ातिर
गीत बुनता रहूँ, बैठा रहूँ तेरी ख़ातिर
पर, मेरे गीत तेरे दुःखका मुदावा[8] तो नहीं
नग़मः जर्राह[9] नहीं, मूनिसो-ग़मख़्वार[10] सही
गीत नश्तर तो नहीं, मरहमे-आज़ार[11] सही
तेरे आज़ारका चारा[12] नहीं नश्तरके सिवा
और यह सफ़्फ़ाक मसीहा[13] क़ब्ज़ेमें नहीं
इस जहाँके किसी ज़ीरूहके[14] क़ब्ज़ेमें नहीं
हाँ मगर तेरे सिवा, तेरे सिवा, तेरे सिवा

---

१. अभिमानी सुन्दरियोंके बर्फ़-जैसे सख़्त और गोरे जिस्म, २. गरमीमें, ३. जाने-पहचाने चेहरोंके हाव-भाव, परिचित मुखाकृति, ४. एकदम, तुरन्त, ५. प्रेयसीके स्फटिकमणि जैसे स्वच्छ कपोल, ६. लाल मदिरासे, ७.महल, प्रासाद, ८. उपचार, ९. संगीत, शल्यचिकित्सक नहीं, १०. मित्र, संवेदनशील, ११. घावका मरहम, १२. इलाज, १३. कठोर हृदय-चिकित्सक, १४. भद्र मनुष्यके।

सुबहे-आज़ादी

[अगस्त १९४७ ई०]

यह दाग़-दाग़ उजाला,[१] यह शब गज़ीर:सहर[२]
वह इन्तज़ार था जिसका, यह वह सहर[३] तो नहीं
यह वह सहर तो नहीं जिसकी आरज़ू[४] लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं-न-कहीं

फ़लकके दश्तमें[५] तारोंकी आख़िरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे-सुस्त मौजका साहिल[६]
कहीं तो जाके रुकेगा सफ़ीनए-ग़मे-दिल[७] ?
जवाँ लहूकी पुर-इसरार शाहराहोंसे[८]

चले जो यार तो दामन पै कितने हाथ पड़े
दयारे-हुस्नकी[९] बेसब्र ख़्वाबगाहोंसे[१०]
पुकारती रहीं बाँहें, बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज़[११] थी लेकिन रुख़े-सहरकी[१२] लगन

बहुत क़रीं[१३] था हसीनाने-नूरका दामन[१४]
सुबक-सुबक[१५] थी तमन्ना, दबी-दबी थी थकन

१.धूमिल प्रकाश, २. आँसुओंसे भीगी हुई रात्रिका प्रातःकाल, ३. प्रभात, ४. अभिलाषा, ५. आकाशके मार्गमे, ६. धीमीगतिसे चलनेवाली रातरूपी लहरका किनारा, ७. हृदयके दुःखकी नौका, ८. भेद-भरे मार्गोंसे, ९. रूपके संसारके, १०. शयन-कक्षोसे, ११. प्यारी, १२. प्रातःकालका मुख देखनेकी, १३. समीप, १४. रूपवतियोंका परिधान, १५. मृदुल,कोमल ।

सुना है हो भी चुका है फ़िराक़े-ज़ुल्मतो-नूर[1]
सुना है हो भी चुका है, विसाले-मंज़िलो-गाम[2]
बदल चुका है बहुत अहले-दर्दका दस्तूर
निशाते-वस्ल, हलाल[3]-ओ-अज़ाबे हिज्र हराम[4]

जिगरकी आग, नज़रकी उमंग, दिलकी जलन
किसीपै चारए-हिजराँका कुछ असर ही नहीं
कहाँसे आयी निगारे-सबा[5] किधरको गयी
अभी चराग़े-सरे-रहको[6] कुछ ख़बर ही नहीं
अभी गगनिए-शबमें[7] कभी नहीं आयी
निजाते-दीदा-ओ-दिलकी[8] घड़ी नहीं आयी
चले चलो कि वह मंज़िल अभी नहीं आयी

लोहो-क़लम

हम परवरिशे-लोहो-क़लम[9] करते रहेंगे
जो दिल पै गुज़रती है, रक़म[10] करते रहेंगे

---

१. अन्धकार और प्रकाशका विछोह, २. यात्रा और यात्रास्थानका मिलन, ३. मिलनका सुख, उचित, जाइज़, ४. विछोहका दुःख अनुचित, नाजाइज, ५. सुन्दरी वायु, ६. मार्गके दीपकोको, ७. अन्धकारकी गहनतामे, ८. नेत्र और हृदयकी पराधीनतासे छुटकारा पानेकी, ९. तलवार और क़लमका पालन-पोषण, १०. लेखबद्ध।

असबाबे-ग़मे-इश्क़ बहम[1] करते रहेंगे
वीरानीए-दौराँपै[2] करम[3] करते रहेंगे
हाँ तल्ख़िए-ऐय्याम[4] अभी और बढ़ेगी
हाँ अहले-सितम[5], मश्क़े-सितम[6] करते रहेंगे
मञ्ज़ूर यह तल्ख़ी[7], ये सितम हमको गवारा[8]
दम है तो मदावा-ए-अलम[9] करते रहेंगे
मैख़ाना[10] सलामत है तो हम सुर्ख़िए-मैसे[11]
तज़ईने दरो-बाम हरम[12] करते रहेंगे
बाक़ी है लहू दिलमें तो हर अश्क से[13] पैदा
रंगे-लबो-रुख़सारे-सनम करते रहेंगे
इक तर्ज़े-तग़ाफ़ुल[14] है सो वह उनको मुबारक
इक अर्ज़े-तमन्ना है सो हम करते रहेंगे ।

दो आवाज़ें

पहली आवाज़

अब सईका इमकान[15] और नहीं परवाज़का मज़मूँ[16] हो भी चुका
तारोंपै कमन्दें फैंक चुके, महताबपै[17] शबख़ूँ[18] हो भी चुका

१. प्रेमकष्टोंके साधन एकत्र, २. विश्वकी अज्ञानतारूपी वीरानीपर, ३. कृपा, ४. ससारकी कडवाहट, ५ अत्याचारी, ६ अत्याचारोंका अभ्यास, ७. कष्टोकी कटुता, ८. सहन, ९. कष्टोके दूर करनेका उपाय, १०. मदिरालय, ११.मदिराकी लालीसे, १२. अन्तःपुरके दरवाजे और छत रँगकर सजाते रहेगे, १३.आँसूसे, १४.उपेक्षाका ढंग, १५. प्रयत्न करनेकी सम्भावना, १६. उड़ानका प्रयास, १७ चन्द्रमापर, १८. आक्रमण, धावा ।

अब और किसी फ़र्दाके[1] लिए उन आँखोंसे क्या पैमाँ[2] कीजे
किस ख़्वाबके झूठे अफ़सूँसे[3] तसकीने-दिले-नादाँ[4] कीजे
जीनेके फ़साने[5] रहने दो अब उनमें उलझकर क्या लेंगे
इक मौतका धन्दा बाक़ी है, जब चाहेंगे निपटा लेंगे
यह तेरा कफ़न, वह मेरा कफ़न, यह मेरी लहद[6], वह तेरी है

दूसरी आवाज़

हस्तीकी मताए-बेपायाँ[7] जागीर तेरी है, न मेरी
इस बज़्ममें[8] अपनी मशअ़ले-दिल,[9] बिस्मिल[10] है तो क्या
रूख़्शाँ[11] है तो क्या
यह बज़्मे-चराग़ाँ[12] रहती है, इक ताक़[13] अगर वीराँ[14] है तो क्या
अफ़सुर्दा[15] हैं गर ऐय्याम[16] तेरे, बदला नहीं मसलके-शामो-सहर[17]
ठहरे नहीं मौसमे-गुलके क़दम, क़ायम हैं जमाले-शम्सो-क़मर[18]
आबाद है वादिए-काकुलो-लब,[19] शादाबो-हसीं गुलगस्ते नज़र[20]
मक़सूम है, लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर[21] मौजूद है नेमते-दीदए तर[22]

---

१. भविष्यके, २. वादे, ३. स्वप्निल झूठो मोहनीसे, ४. भोले हृदयको चैन देनेवाली बातें, ५. किस्से, ६. समाधि, कब्र, ७. जीवनरूपी असीम निधि, ८. महफ़िलमे, उत्सवमे, ९. हृदय-दीप, १०. घायल, मन्द, ११. प्रभायुक्त, प्रज्वलित, १२. दीपमाला, १३. आला, खाना, १४. रिक्त, १५. मुरझाये हुए, १६. दिवस, १७. सन्ध्या और प्रातःकालके नियम, १८. सूर्य्य-चन्द्रका सौन्दर्य्य, १९. ओठों और जुल्फ़ोकी घाटियाँ, २०. प्रफुल्ल, सुन्दर, दर्शनीय, २१. जिगरके दर्दका स्वाद विभाजित है, २२. अश्रुपूर्ण नेत्रोंकी न्यामत ।

इस दीदए-तरका शुक्र[1] करो इस ज़ौक़ेनज़र[2]का, शुक्र करो
उस शामो-सहरका[3] शुक्र करो, इस शम्सो-क़मर[4]का शुक्र करो

पहली आवाज़

गर है यही मसलके शम्सो-क़मर[5] इन शम्सो-कमरका क्या होगा
रानाइए-शबका[6] क्या होगा, अन्दाज़े-सहरका[7] क्या होगा
जब ख़ूने-जिगर बरफ़ार्व[8] बना जब आँखें आहन[9]पोश हुईं
इस दीदए-तरका क्या होगा, इस ज़ौक़े-नज़रका क्या होगा

जब शेरके ख़ेमे[10] राख हुए, नग़मोंकी[11] तनावें टूट गयीं
यह साज़ कहाँ सर फोड़ेंगे, इस किलके-गुहर[12]का क्या होगा
जब कुंजे-क़फ़स[13] मस्कन[14] ठहरा और जेबो-गरेबाँ तौक़ो-रसन
आये कि न आये मौसमे-गुल, इस दर्दे-जिगरका क्या होगा

दूसरी आवाज़

यह हाथ सलामत हैं जबतक इस ख़ूँमें हरारत है जबतक
इस दिलमें सदाक़त[15] है जबतक इस नुत्क़में[16] ताक़त है जबतक

---

१. अश्रुपूर्ण नेत्रोंको धन्यवाद दो, २. सुरुचिपूर्ण नेत्रोंका आभार मानो, ३. सन्ध्या-प्रातःकालका, ४. सूर्य-चन्द्रका, ५. सूर्य्य-चन्द्रकी व्यवस्था, ६. रात्रिकी सुन्दरताका, ७. सुबहके अन्दाजोंका, ८. बर्फ जैसा ठंडा हो गया, ९. कठोर, १०. शाइरीके तम्बू, ११. गीतोंका, १२. मोती-जैसी क़ीमती क़लमका, १३. बन्दीगृह, १४. निवासस्थान, १५. सचाई, १६. वाणीमे ।

इक तौक़ों[1]-सलासलको[2] हम-तुम सिखलायेंगे शोरिशे बरबत-ओनै[3]
वह शोरिश[4] जिसके आगे ज़ुबूँ[5] हंगामिए-तुब्लि[6] क़ैसरो-के[7]
आज़ाद हैं अपने फ़िक्रो-अमल[8] भरपूर ख़ज़ीना[9] हिम्मतका
इक उम्र है अपनी हर साअ़त[10] इमरोज़ है अपना हर फ़र्दा[11]
यह शामो-सहर, यह शम्सो-क़मर, यह अख़्तरो-कोकब[12] अपने हैं
यह लोहो-क़लम यह तब्लो[13]-अलम यह मालो-हशम[14] सब अपने हैं

तुम्हारे हुस्नके नाम

[७ में-से २]

तुम्हारा हुस्न जवाँ है, तो महरबाँ है फ़लक[15]
तुम्हारा दम है तो दमसाज़[16] है हवाए-वतन[17]
अगर्चे तंग हैं औक़ात[18], सख़्त हैं आलाम[19]
तुम्हारी यादसे शीरीं[20] है तल्ख़िए-ऐय्याम[21]
सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्नके नाम

---

१. लोहेकी गोल हँसली जो कैदियोंके गलेमें डाली जाती है, २. बेड़ियोंको, ३. गीत और वाद्य, ४. शोर-गुल, ५. तुच्छ, ६-७. बादशाहों और अफसरोंके झूठे दंगे-फ़िसाद, ८. काम करनेकी शक्ति एवं विचार, ९. कोश, १०. हर वक़्त, ११. भविष्यकाल हमारा वर्त्तमान है। भविष्यपर कार्य्योंको न छोड कर वर्त्तमानमे कार्य्य करनेकी शक्ति, १२. नक्षत्र-तारे, १३. लोह-लेखनी और दुंदुभि एवं ध्वजा, १४. दौलत और सेना, १५. आकाश, १६. दम भरनेवाली, साथ देनेवाली, १७. देशकी वायु अनुकूल है, १८. प्रतिष्ठा, १९. मुसीबतें, २०. मधुर, २१. दुर्दिन, मुसीबतके दिन।

तराना

दरबारे-वतनमें जब इक दिन, सब जानेवाले जायेंगे
कुछ अपनी सज़ाको पहुँचेंगे, कुछ अपनी जज़ा[1] ले जायेंगे

ऐ ख़ाक नशीनो ! उठ बैठो, वह वक़्त क़रीब आ पहुँचा है
जब तख़्त[2] गिराये जायेंगे, जब ताज[3] उठाये जायेंगे

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें, अब ज़िन्दानोंकी[4] ख़ैर नहीं
जो दरिया झूमके उट्ठे हैं, तिनकोंसे न ढाले जायेंगे

कुटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत
चलते भी चलो कि अब डेरे, मंज़िल ही पै डाले जायेंगे

ऐ ज़ुल्मके मातो[5] ! लब खोलो, चुप रहनेवालो ! चुप कबतक ?
कुछ हश्र तो इनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे

नज़रे-सौदा

फ़िक्रे-दिलदारिए-गुलज़ार[6] करूँ या न करूँ ?
ज़िक्रे-मुर्ग़ाने-गिरफ़्तार[7] करूँ या न करूँ ?
क़िस्सए-साज़िशे-अग़ियार[8] कहूँ या न कहूँ
शिकवए-यार तरहदार[9] करूँ या न करूँ ?

---

१. शुभ कर्मोंको, २. राज्य-सिंहासन, ३. बादशाहतके ताज, ४. कैद-खानोंकी, ५. अत्याचारपीडितो, ६. उद्यान-हितैषोके व्यवहारकी, ७. उद्यानके पंछियोंके फँसानेकी कहानी, ८. शत्रुओंके षड्यन्त्रकी कारिस्तानी, ९. माशूककी शिकायत ।

जाने क्या वज़अ[1] है अब रस्मे-वफ़ाकी[2] ऐ दिल !
वजहे-देरीनापै[3] इसरार[4] करूँ या न करूँ ?
जाने किस रंगमें तफ़सीर[5] करें अहले-हविस[6]
मदहे-जुल्फ़ो-लबो-रुख़सार[7] करूँ या न करूँ ?

यूँ बहार आयी है, इमसाल कि गुलशनमें सबा[8]
पूछती है गुज़र इस बार करूँ या न करूँ ?
गोया इस सोचमें है दिलमें लहू भरके गुलाब
दामनो-जेबको गुलनार करूँ या न करूँ ?

है फ़क़त मुर्ग़े-ग़ज़लख़्वाँ[9] कि जिसे फ़िक्र नहीं
मौतदिल गर्मिए-गुफ़्तो[10]र करूँ या न करूँ ?

निसार मैं तेरी गलियों पै···

निसार[11] मैं तेरी गलियों पै ऐ वतन ! कि जहाँ
चली है रस्म कि कोई न सर उठाके चले
जो कोई चाहनेवाला तवाफ़[12]को निकले
नज़र चुराके चले, जिस्मो-जाँ बचाके चले

१. पद्धति, तौर-तरीका, २. वादा-वफाकी रस्म, बातके निभानेका ढंग, ३. पुराने तौर-तरीकोंके लिए, ४. आग्रह, ५ व्याख्या, टीका, ६. कामुक, ७. जुल्फ़ों, ओठों और कपोलोकी प्रशंसा, ८ उद्यानमें हवा, ९. गज़ल गानेवाली बुलबुल, १०.मध्यम स्वरमे वार्तालाप, ११. न्योछावर, १२. परिक्रमाको ।

है अहले-दिलके लिए अब यह नज़्मे-बस्तो-कुशाद[1]
कि संगो-ख़िश्त मुक़य्यद हैं और सग आज़ाद[2]

बहुत है ज़ुल्मके दस्ते बहाना-जूके लिए
जो चन्द अहले-जुनूँ तेरे नाम लेवा हैं
बने हैं, अहले हविस, मुद्दई भी मुंसिफ़ भी
किसे वकील करें किससे मुंसफ़ी चाहें ?
मगर गुज़ारने वालोंके दिन गुज़रते हैं
तेरे फ़िराक़में यूँ सुबहो-शाम करते हैं

बुझा जो रोज़ने-ज़िन्दाँ[3] तो दिल यह समझा है
कि तेरी माँग सितारोंसे भर गयी होगी[4]
चमक उठे हैं सलासिल[5] तो हमने जाना है
कि अब सहर[6] तेरे रुख़पै बिखर गयी होगी
ग़रज़ तसव्वुरे-शामो-सहरमें जीते हैं
गिरफ़्तेे-सायए-दीवारो-दरमें[7] जीते हैं

युहीं हमेशा उलझती रही है ज़ुल्मसे ख़ल्क़[8]
न उनकी रस्म नयी है न अपनी रीति नयी

१. दिलवालोंके लिए बन्दी और स्वतंत्र जीवनका यह प्रबन्ध किया गया है, २. निर्माणमे सहयोग देनेवाले पत्थर और ईंट तो स्थिर है, बन्दी है और कुत्ते स्वतन्त्र है, ३-४. कैदखानेकी कोठरीके रोशनदानसे जब रोशनी आनी बन्द हो जाती है तो अनुमान होता है कि रात हो गयी है, ५. बेड़ियाँ, ६. सुबह हो गयी होगी, ७. बन्दीखानेकी दीवारोंकी छायामें, ८. जनता ।

यूँहीं हमेशा खिलाये हैं हमने आगमें फूल
न उनकी हार नयी है, न अपनी जीत नयी
इसी सबबसे फ़लकका गिला नहीं करते
तेरे फ़िराक़में हम दिल बुरा नहीं करते

गर आज तुझसे जुदा हैं तो कल बहम[1] होंगे
यह रातभरकी जुदाई तो कोई बात नहीं
गर आज ओजपै है तालए-रक़ीब[2] तो क्या
यह चार दिनकी ख़ुदाई तो कोई बात नहीं
जो तुझसे अहदे-वफ़ा उस्तुवार[3] रखते हैं
इलाजे-गर्दिशे-लैलो-निहार रखते हैं

याद

दश्ते-तनहाईमें[4] ऐ जाने-जहाँ[5] लरज़ाँ[6] हैं
तेरी आवाज़के साये तेरे होंटोंके सराब[7]
दश्ते-तनहाईमें, दूरीके ख़सो-ख़ाक तले[8]
खिल रहे हैं, तेरे पहलूके समन[9] और गुलाब

१. एकत्र, एक साथ, २. शत्रुका भाग्य उन्नत है, ३. चिरस्थायी प्रेम, ४. वीरान जंगलमें, सुनसान स्थानमें, ५. विश्व-भरमें प्रिय, विश्व-मोहनी, ६. कम्पित, ७. ओठोंकी स्मृतिरूपी मृगमरीचिका, ८. घास और कणोंके नीचे, ९. नवमल्लिका, चमेली।

उठ रही है कहीं क़ुरबतसे[1] तेरी साँसकी आँच
अपनी ख़ुशबूमें सुलगती हुई मद्धिम-मद्धिम
दूर—उफ़क़पार[2] चमकती हुई क़तरा-क़तरा
गिर रही है तेरी दिलदार नज़रकी[3] शबनम[4]

इस क़दर प्यारसे ऐ जाने जहाँ! रक्खा है
दिलके रुख़सारपै[5] इस वक़्त तेरी यादने हात
यूँ गुमाँ[6] होता है, गर्चे है अभी सुबहे-फ़िराक़[7]
ढल गया हिज्रका[8] दिन, आ भी गयी वस्लकी[9] रात

—दस्ते-सबासे

ऐ हबीब अम्बरे-दस्त!

[७ में-से २ शेर]

लिये है बूए-रफ़ाक़त[10] अगर हवाए-चमन
तो लाख पहरे बिठायें क़फ़सपै, ज़ुल्मपरस्त
हमेशा सब्ज़ रहेगी वह शाख़े-महरो-वफ़ा
कि जिसके साथ बँधी है दिलोंकी फ़तह-ओ-शिकस्त

---

१. समीपसे, २.आकाशके पार, ३.आकर्षक नेत्रोंसे, ४. ओस (आँसू), ५. कपोलपर, ६. वहम, शक, ७. विरहका प्रारम्भकाल, ८. जुदाईका दिन, वियोगदिवस, ९. मिलन-रात्रि, १०. मंत्रीकी सुगन्ध।

मुलाक़ात

—२—

बहुत सियह[1] है यह रात लेकिन
इसी सियाहीमें रूनुमा[2] है
वह नहरे-ख़ूँ[3] जो मेरी सदा[4] है
इसीके सायेमें नूर[5]गर है
वह मौजे-ज़र जो तेरी नज़र है

वह ग़म जो इस वक़्त तेरी बाहों-
के गुलसिताँमें[6] सुलग रहा है
[वह ग़म जो इस रातका समर[7] है]
कुछ और तप जाये अपनी आहों-
की आँचमें तो यही शरर[8] है

हर-इक सियह शाख़की कमाँसे[9]
जिगरमें टूटे हैं तीर जितने
जिगरसे नोचे हैं और हर इक-
का हमने तेशा[10] बना लिया है

---

१. काली, अँधेरी, २. उजागर, ३. रक्तकी नहर, ४. वाणी,आवाज, ५. प्रकाशवान्, ६. उद्यानमें, ७. फल, ८. चिनगारी, अंगारे, ९. काली-टहनियोंकी कमानसे, १०. कुदाल।

अलम नसीबों,[1] जिगर फ़िगारो-[2]
की सुबह, अफ़लाकपर[3] नहीं है
जहाँपै हम तुम खड़े हैं दोनों
सहरका[4] रोशन उफ़क़[5] यहीं है

यहींपै ग़मके शरार[6] खिलकर
शफ़क़का[7] गुलज़ार[8] बन गये हैं
यहींपै क़ातिल दुःखोंके तेग़
क़तार अन्दर, क़तार करनों-
के आतिशीं[9] हार बन गये हैं

यह ग़म जो उसने रात दिया है
यह ग़म सहरका यक़ीं बना है
यक़ीं जो ग़मसे करीमतर है
सहर जो शबसे अज़ीमतर है

वासोख़्त

सच है हमींको आपके शिकवे बजा[10] न थे
बेशक सितम जनाबके सब दोस्ताना थे

---

१. दुखियों, २. जिगरके ज़ख़्मियों, ३. आस्मानपर, ४. प्रातः-कालका, ५. उज्ज्वल आकाश, ६. अंगारे, ७. उषाका, ८. उद्यान, ९. आग्नेय मालाएँ, १०. अत्याचारोंकी शिकायत करना उचित न था।

हाँ जो जफ़ा भी आपने की क़ायदेसे की
हाँ हम ही कारबन्दे-उसूले-वफ़ा[1] न थे
आये तो यूँ कि जैसे हमेशा थे महरबाँ
भूले तो यूँ कि गोया कभी आशना[2] न थे

क्यों दादे-ग़म, हमींने तलब की, बुरा किया
हमसे जहाँमें कुश्तए-ग़म[3] और क्या न थे ?
गर फ़िक्रे-ज़ख़्मकी तो ख़तावार हैं कि हम
क्यों महवे-मदहे-ख़ूबिए-तेग़े-अदा[4] न थे

लबपर है तल्ख़िए-मए-ऐय्याम[5] वर्ना 'फ़ैज़' !
हम तल्ख़िए-कलाम पै माइल ज़रा न थे

हम जो तारीक राहोंमें मारे गये

तेरे होंटोंके फूलोंकी चाहतमें हम
दारकी[6] ख़ुश्क टहनी पै वारे गये[7]
तेरे हाथोंकी शमओंकी हसरतमें[8] हम
नीमतारीक[9] राहोंमें मारे गये

---

१. वफ़ादारीके नियमोंपर हमी न चले, २. परिचित, ३. ग़मोसे मिटे हुए, ४. हाव-भावरूपी तलवारकी ख़ूबियोंकी प्रशसामे लीन, ५. दुर्दिनोकी मदिरारूपी कड़वाहट, ६. सूलीकी, ७. बलि किये गये, ८. लालसामे, ९. अर्द्ध अँधेरो ।

सूलियोंपर हमारे लबोंसे परे
तेरे होंटोंकी लाली लपकती रही
तेरी ज़ुल्फ़ोंकी मस्ती बरसती रही
तेरे हाथोंकी चाँदी दमकती रही

जब घुली तेरी राहोंमें शामे-सितम[1]
हम चले आये, लाये जहाँतक क़दम
लबपै हर्फ़े-ग़ज़ल, दिलमें क़न्दीले-ग़म[2]
अपना ग़म था गवाही तेरे हुस्नकी

देख क़ायम रहे उस गवाही पै हम
हम जो तारीक राहोंमें मारे गये

ना-रसाई[3] अगर अपनी तक़्दीर थी
तेरी उल्फ़त तो अपनी ही तदबीर[4] थी
किसको शिकवा है गर शौक़के सिलसिले
हिज्रकी क़त्लगाहोंसे सब जा मिले

क़त्लगाहोंसे चुनकर हमारे अलम[5]
और निकलेंगे उश्शाक़के क़ाफ़िले[6]
जिनकी राहे-तलबसे हमारे क़दम
मुख़्तसिर कर चले दर्दके फ़ासले

---

१. अत्याचारकी सन्ध्या, २. व्यथारूपी लालटेन, ३. पहुँच न सकना, ४. पुरुषार्थ, ५. ध्वजा, पताका, ६. आशिक़ोंके दल, बलिदानियों-के झुण्ड।

कर चले जिनकी ख़ातिर जहाँगीर[1] हम
जाँ गवाँ कर तेरी दिलबरीका भरम
हम जो तारीक राहोंमें मारे गये

दरीचः

गड़ी हैं कितनी सलीबें[2] मेरे दरीचेमें[3]

हर-एक अपने मसीहाके ख़ूँ का रंग लिये
हर-एक वस्ले-ख़ुदावन्दकी उमंग लिये

हर आये दिन यह ख़ुदावन्दगाने महरो-जमाल
लहूमें ग़र्क़ मेरे ग़मकदेमें आते हैं
और आये दिन मेरी नज़रोंमें सामने उनके
शहादे–जिस्म सलामत उठाये जाते हैं

दर्द आयेगा दबे पाँव

[१४ मैं-से ६ शेर]

दिलसे फिर होगी मेरी बात कि ऐ दिल ! ऐ दिल !!

यह जो महबूबे[4] बना है तेरी तनहाईका[5]
यह तो मेहमाँ है घड़ी-भरका चला जायेगा

१. विश्वविजय, २. सूलियाँ, ३. झरोखेमें, ४. प्यारा-मित्र, ५. एकान्त-वासका ।

इससे कब तेरी मुसीबतका मदावा[1] होगा
मुश्तइल[2] होके अभी उट्ठेंगे वह शी साये
यह चला जायेगा, रह जायेंगे बाक़ी साये
रात-भर जिनसे तेरा ख़ून ख़राबा होगा

जंग ठहरी है कोई खेल नहीं है ऐ दिल !
दुश्मने-जाँ हैं सभी सारे-के-सारे क़ातिल
यह कड़ी रात भी, यह साये भी, तनहाई भी
दर्द और जंगमें कुछ मेल नहीं है ऐ दिल !

लाओ सुलगाओ, कोई जोशे-ग़ज़बका अंगार
तैशकी[3] आतिशे-जर्रार[4] कहाँ है लाओ
वह दहकता हुआ गुलज़ार कहाँ है लाओ
जिसमें गरमी भी है, हरकत भी, तवानाई[5] भी

हो न हो अपने क़बीलेका[6] भी कोई लश्कर
मुन्तज़िर[7] होगा अँधेरेकी फ़सीलोंके[8] उधर
उनको शोलोंके रजज़[9] अपना पता तो देंगे
ख़ैर हमतक वे न पहुँचे भी सदा[10] तो देंगे
दूर कितनी है अभी सुबह बता तो देंगे

१. इलाज, २. प्रज्वलित, ३. क्रोधकी, ४. विशाल ज्वाला, ५. सामर्थ्य, ६. परिवारका, ७. प्रतीक्षा करता, ८. प्राचीरोंके, ९. कण, लपट, १०. आवाज़।

यह फ़स्ल उम्मीदोंकी हमदम !

सब काट दो
बिस्मिल पौदोंको
बे-आब सिसकते मत छोड़ो
सब नोच लो
बेकल फूलोंको
शाख़ोंपै बिलकते मत छोड़ो

यह फ़स्ल उम्मीदोंकी हमदम !
इस बार भी ग़ारत जायेगी
सब महनत सुबहो-शामोंकी
अबके भी अकारत जायेगी

खेतीके कोनों खदरोंमें
फिर अपने लहूकी खाद भरो
फिर मिट्टी सींचो अश्कोंसे
फिर अगली ऋतुकी फ़िक्र करो

फिर अगली ऋतुकी फ़िक्र करो
जब फिर इक बार उजड़ना है
इक फ़स्ल पकी तो भर पाया
जबतक तो यही कुछ करना है

बुनियाद कुछ तो हो

[७ में-से ५ शेर]

क़व्वाली

मरने चले तो सितवते-क़ातिलका[1] ख़ौफ़ क्या
इतना तो हो कि बाँधने पाये न दस्तो-पा[2]
मक़तलमें[3] कुछ तो रंग जमे जश्ने-रक़्सका[4]
रंगीं लहूसे पंजए-सैय्याद कुछ तो हो
ख़ूँपर गवाह दामने-जल्लाद कुछ तो हो
जब ख़ूँबहा तलबे करें बुनियाद कुछ तो हो
गर तन नहीं, ज़बाँ सही आज़ाद कुछ तो हो
दुश्नाम, नाला, हाऊ हू, फ़रियाद कुछ तो हो
चीख़े है दर्द, ऐ दिले-बर्बाद कुछ तो हो
बोलो कि शोरे-हश्रकी ईजाद कुछ तो हो
बोलो कि रोज़े-अद्लकी बुनियाद कुछ तो हो

कोई आशिक़ किसी महबूबसे !

यादकी राह-गुज़र[5], जिस पै इसी सूरतसे
मुद्दतें बीत गयी हैं तुम्हें चलते-चलते
ख़त्म हो जाये जो दो-चार क़दम और चलो

१. बधिकके आतंकका, दबदबेका, २. हाथ-पाँव, ३. वधस्थलमें, ४. नृत्योत्सवका, ५. कातिलसे जब क़त्लका मुआविज़ा माँगा जाये, ६. स्मृतिकी पगडण्डीपर ।

मोड़ पड़ता है जहाँ दश्ते-फ़रामोशीका[1]
जिससे आगे न कोई मैं हूँ न कोई तुम हो
साँस थामे हैं निगाहें कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुज़र जाओ, या मुड़कर देखो

गर्चे वाक़िफ़ हैं, निगाहें कि यह सब धोका है
गर कहीं तुमसे हम-आग़ोश[2] हुई फिरसे नज़र
फूट निकलेगी वहाँ और कोई राह-गुज़र[3]
फिर इसी तरह जहाँ होगा मुक़ाबिल पैहम
सायए-ज़ुल्फ़का और जुम्बिशे-बाज़ूका सफ़र

दूसरी बात भी झूटी है कि दिल जानता है
याँ कोई मोड़, कोई दश्त, कोई घात नहीं
जिसके पर्देमें मेरा माहे-रवाँ डूब सके
तुमसे चलती रहे यह राह, यूँ ही अच्छा है
तुमने मुड़कर भी न देखा तो कोई बात नहीं

अगस्त १९५५ ई०

शहरमें चाक-गरेबाँ हुए ना-पैद अबके
कोई करता ही नहीं ज़ब्तकी ताकीद अबके
लुत्फ़ कर ऐ निगहे-यार ! कि ग़मवालोंने
हसरते-दिलकी उठायी नहीं तमहीद अबके

---

१. मार्ग भटकनेका, २. मिली, लिपटी, ३. पगडण्डी ।

चाँद देखा तेरी आँखोंमें न होंटोंपै शफ़क़
मिलती-जुलती है, शबे-ग़मसे तेरी दीद अबके
दिल दुखा है न वह पहला-सा न जाँ तड़पी है
हम ही ग़ाफ़िल थे कि आयी है नहीं ईद अबके
फिरसे बुझ जायेंगी शमएँ जो हवा तेज़ चली
ला के रक्खो सरे महफ़िल कोई ख़ुर्शीद अबके

—ज़िन्दानामासे

हम्द

मलकए-शहरे-ज़िन्दगी ! तेरा शुक्र किस तौरसे अदा कीजे
दौलते-दिलका कुछ शुमार नहीं, तंग-दस्तीका क्या गिला कीजे
जो तेरे हुस्नके फ़क़ीर हुए, उनको तशवीशे-रोज़गार कहाँ
दर्द बेचेंगे, गीत गायेंगे, इससे ख़ुशवक़्त कारोबार कहाँ

साज़ छेड़ा तो जम गयी महफ़िल, मिन्नते-तबए-ग़मगुसार किसे
अश्क टपका तो खिल गया गुलशन, रंज-कमज़र्फ़िए-बहार किसे
ख़ुश नशीं हैं, कि चश्मो-दिलकी मुराद, दैरमें है न ख़ानकाहमें है
हम कहाँ क़िस्मत आजमाने जायें, हर सनम अपनी बारगाहमें है

कौन ऐसा ग़नी है जिससे कोई नक़्दे-शम्सो-क़मरकी बात करे
हमसे शौक़े नबर्द हो जिसको, जाये तसख़ीरे-कायनात करे

—नक़्श, दिसम्बर १९५८

क़ते

रात यूँ दिलमें तेरी खोयी हुई याद आयी
जैसे वीरानेमें चुपके-से बहार आ जाये
जैसे सहराओंमें[1] हौले-से चले बादे-नसीम[2]
जैसे बीमारको बेवजह क़रार आ जाये

दिल रहीने-ग़मे-जहाँ[3] है आज
हर नफ़स[4] तिश्नए-फ़ुग़ाँ[5] है आज
सख़्त वीराँ[6] है महफ़िले-हस्ती[7]
ऐ ग़मे-दोस्त ! तू कहाँ है आज

वक़्फ़े-हिर-मानों पास[8] रहता है
दिल है, अक्सर उदास रहता है
तुम तो ग़म देके भूल जाते हो
मुझको एहसाँका पास रहता है

ग़ज़लोंके शेर

मेरी ख़ामोशियोंमें लरज़ाँ[9] है
मेरे नालोंकी गुमशुदः[10] आवाज़

१. मरुस्थलोंमे, रेगिस्तानोंमे, २. मृदु पवन, ३. संसारके दुःखोंमे दुःखी, ४. साँस, ५. आह करनेको प्यासी, दुःखोंको प्रकट करनेके लिए उतावली, ६. वीरान, उजाड़, ७. ज़िन्दगीरूपी महफ़िल, ८. आशा-निराशाके सुपुर्द, ९. कम्पायमान, १०. खोयी हुई।

हो चुका इश्क़, अब हविस[1] ही सही
क्या करें फ़र्ज़ है अदाए-नमाज़[2]
तू है और इक तग़ाफ़ुले-पैहम[3]
मैं हूँ और इन्तज़ारे-बेअन्दाज़[4]

अदाए-हुस्नकी मासूमियतको[5] कम कर दे
गुनाहगार नज़रको हिजाब[6] आता है

यहाँ वाबस्तगी[7], वाँ बरहमी[8] क्या जानिए क्यों है ?
न हम अपनी नज़र समझे, न हम उनकी अदा समझे
फ़रेबे-आर्ज़ूकी[9] सहलअंगारी[10] नहीं जाती
हम अपने दिलकी धड़कनको तेरी आवाज़े-पा समझे[11]

मेरी क़िस्मतसे खेलनेवाले !
मुझको क़िस्मतसे बे-ख़बर कर दे

बरस रही है हरीमे-हविसमें[12] दौलते-हुस्न[13]
गदाए-इश्क़के कासेमें[14] इक नज़र भी नहीं
न जाने किस लिए उम्मीदवार बैठा हूँ
इक ऐसी राहपै जो तेरी रहगुज़र[15] भी नहीं

---

१. कामुकता, २. नमाज पढ़ना, ३. लगातार उपेक्षा, ४. असीम, ५. भोलेपनके हाव-भावको, ६. शर्म, ७. सम्पर्क, अपनापनका लगाव, ८. नाराजगी, ९. इच्छाओंके छलकी, १०. सरलता, ११. पाँवोंकी आवाज, १२. भोगविलासी महलोंमे, १३. रूपराशि, १४. प्रेमीके भिक्षापात्रमे, १५. राह, मार्ग ।

निगाहे-शौक़[1] सरेबज़्म[2] बेहिजाब[3] न हो
वे बेख़बर ही सही, इतने बेख़बर भी नहीं
यह अहदे-तर्के-मुहब्बत[4] है किस लिए आख़िर ?
सुकूने-क़ल्ब[5] इधर भी नहीं, उधर भी नहीं

आज उनकी नज़रमें कुछ हमने
सबकी नज़रें बचाके देख लिया
सीखी यहीं मेरे दिले-काफ़िरने बन्दगी
रब्बे-करीम[6] है तो तेरी रहगुज़र[7]में है

थी, मगर, इतनी राइगाँ[8] भी न
आज कुछ ज़िन्दगीसे खो बैठे
तेरे दरतक पहुँचके लौट आये
इश्क़की आबरू डुबो बैठे

—नक़्शे-फ़रियादीसे

क़तें

न पूछ जबसे तेरा इन्तज़ार कितना है
कि जिन दिनोंसे मुझे तेरा इन्तज़ार नहीं
तेरा ही अक्स है, उन अजनबी बहारोंमें
जो तेरे लब, तेरे बाज़ू, तेरा कनार[9] नहीं

---

१. उत्सुक दृष्टि, २. महफ़िलमें, ३. लाजरहित, शर्म न छोड़, ४. प्रेम-त्यागकी प्रतिज्ञा, ५. दिलको चैन, ६. ख़ुदा, ७.मार्गमें, ८. व्यर्थ, ९. ओठ, बाँहें, गोद ।

सबाके[1] हाथमें नर्मी है उनके हातोंकी
ठहर-ठहरके यह होता है आज दिलको गुमाँ[2]
वह हात ढूँढ़ रहे हैं बिसाते-महफ़िलमें
कि दिलके दाग़ कहाँ हैं, नशिस्ते-दर्द[3] कहाँ

तेरा जमाल[4] निगाहोंमें ले-के उट्ठा हूँ
निखर गयी है, फ़िज़ा[5] तेरे पैरहनकी-सी[6]
नसीम[7] तेरे शबिस्ताँसे[8] होके आयी है
मेरी सहरमें[9] महक है तेरे बदनकी-सी

हमारे दमसे है कूए-जुनूँमें[10] अब भी ख़जिल[11]
अबाये-शैख़ो-क़बाए-अमीरो-ताजे-शहो[12]
हमींसे सुन्नते-मंसूरो-क़ैस ज़िन्दा[13] है
हमींसे बाक़ी है गुल दामनी-ओ-कजकलही[14]

ग़ज़लोंके शेर

कभी-कभी यादमें उभरते हैं नक़्शे-माज़ी[15] मिटे-मिटे-से
वह आज़माइश दिलो-नज़रकी वही कुर्बतें-सी[16] वह फ़ासिले-से

---

१. वायुके, २. विश्वास, ३. दर्दका निवासस्थान, ४. रूप, ५. वातावरण, ६. लिबासकी-सी, ७. हवा, ८. शयनकक्षसे ९. सुबहमें, १०. दीवानोंके कूचेमें, ११. शर्म, हया, १२. धर्माचार्य्योंके चोगे, अमीरोंकी क़बाएँ (लम्बे परिधान), बादशाहोंके ताज, १३. मंसूर और कैसके क़िस्से, १४. कोमलता और बाँकपन, १५. भूतकालीन बातें, १६. नज़दीकी-सी, सामीप्यता-सी ।

क़भी-कभी आर्जू के सहरामें[1] आके रुकते हैं क़ाफ़िले-से[2]
वह सारी बातें लगावकी-सी वह सारे उनवाँ विसालके-से[3]

निगाहो-दिलको क़रार[4] कैसा? निशातो-ग़ममें[5] कमी कहाँ की?
वे जब मिले हैं तो उनसे हरबार की है उल्फ़त नये सिरेसे
तुम्हीं कहो रिंदो-मोहतसिबमें[6], है आज शब[7] कौन फ़र्क़ ऐसा
यह आके बैठे हैं, मैकदेमें[8], वह उठके आये हैं मैकदेसे

हुई है हज़रते नासेहसे गुफ़्तगू जिस शब[9]
वह शब ज़रूर सरे-कूए-यार[10] गुज़री है
वह बात सारे फ़सानेमें जिसका ज़िक्र न था
वह बात उनको बहुत नागवार गुज़री है
न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मै पी है
अजीब रंगमें अबकी बहार गुज़री है
चमनपै ग़ारते-गुलचींसे[11] जाने क्या गुज़री?
क़फ़ससे आज सबा[12] बेक़रार[13] गुज़री है

तुम्हारी यादके जब ज़ख़्म भरने लगते हैं
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं
हर अजनबी[14] हमें महरम[15] दिखायी देता है
जो अब भी तेरी गलीसे गुज़रने लगते हैं

१. अभिलाषाओंके रेगिस्तानमे, २. यात्री-दलसे, ३. मिलनकी-सी स्मृतियाँ, ४. चैन, ५. सुख-दुःखमे, ६. मद्यप और मद्यनिषेधकमे, ७. रात, ८. मदिरालयमे, ९. रात, १०. प्रेयसीके कूचेमें, ११. फूल तोड़नेवालेके हाथों, १२. वायु, १३. बेचैन, १४. अपरिचित, १५. परिचित।

सबासे[1] करते हैं ग़ुरबत-नसीब[2] ज़िक्रे-वतन
तो चश्मे-सुबहमें आँसू उभरने लगते हैं
वे जब भी करते हैं इस नुत्क़ो-लबकी बख़ियागरी[3]
फ़िज़ामें[4] और भी नग़मे[5] बिखरने लगते हैं

जगह-जगह पै थे नासेह[6] तो कू-ब-कू दिलबर[7]
इन्हें पसन्द, उन्हें नापसन्द क्या करते ?
जिन्हें ख़बर थी कि शर्ते-नवागरी[8] क्या है
वह ख़ुशनवा[9] गिलए-क़ैदो-बन्द[10] क्या करते ?

गुलूए-इश्क़को[11] दारो-रसन[12] न पहुँच सके
तो लौट आये तेरे सरबुलन्द[13] क्या करते

तुम आ रहे हो कि बजती हैं मेरी ज़ंजीरें
न जाने क्या मेरे दीवारो-बाम कहते हैं
पियो कि मुफ़्त लगा दी है ख़ूने-दिलकी कशीद[14]
गराँ है अबके मए-लाला-फ़ाम[15] कहते हैं

फ़क़ीहे-शहरसे[16] मै का जवाज़[17] क्या पूछो
कि चाँदनीको भी हज़रत हराम कहते हैं

१. हवासे, २. परदेशमे रहनेवाले, ३. जिह्वा और ओठ सी देते है, चुप कर देते है, ४. वातावरणमे, ५. गीत, ६. नसीहत देनेवाले, ७. गली-गली दिल लेनेवाले, ८. बोलनेपर प्रतिबन्ध, ९. मधुर स्वरवाले, १०. बन्दी-जीवनकी शिकायत, ११. प्रेमके गले तक, १२. सूली-फाँसी, १३. उच्चमस्तक रखनेवाले, १४. हृदयके रक्तसे खिची हुई, १५. मदिरा महँगी है, अप्राप्य है, १६. ज्ञानीसे, १७. मदिरा पानके उचित या अनुचितका निर्णय ।

नवाए-मुर्ग़को[1] कहते हैं अब ज़ियाने-चमन[2]
खिले न फूल इसे इन्तज़ाम कहते हैं
रंग-पैराहनका[3] ख़ुशबू, ज़ुल्फ़ लहरानेका नाम
मौसमे-गुल है तुम्हारे बामपर[4] आनेका नाम
हमसे कहते हैं, चमनवाले ग़रीबाने-चमन[5]!
तुम कोई अच्छा-सा रख लो अपने वीरानेका नाम
'फ़ैज़' उनको है तक़ाज़ाए-वफ़ा हमसे जिन्हें
आशनाके नामसे प्यारा है बेगानेका नाम

दिलमें अब यूँ तेरे भूले हुए ग़म आते हैं
जैसे बिछुड़े हुए काबेमें सनम आते हैं
रक़्से-मै[6] तेज़ करो, साज़की लै तेज़ करो
सूए-मैख़ाना[7] सफ़ीराने-हरम[8] आते हैं

आज तक शैख़के इकराममें[9] जो शै थी हराम[10]
अब वही दुश्मने-दीं[11] राहते-जाँ[12] ठहरी है
है ख़बर गर्म कि फिरता है, गुरेज़ाँ नासेह[13]
गुफ़्तगू आज सरे-कूए-बुताँ ठहरी है

---

१. पक्षियोंके कलरवको, २. वाटिकाके लिए हानि-प्रद, ३. परिधानका रंग, ४. छतपर, ५. वाटिकासे निर्वासित, ६. मदिराका नृत्य, ७. मदिरालयकी तरफ़, ८. काबेवाले, नमाज़ी, ९. धर्म्माचार्य्यके धर्मशास्त्रानुसार, १०. जो वस्तु वर्जित थी, ११. धर्मभ्रष्ट करनेवाली (सुरा), १२. दिलको चैन देनेवाली, १३. घृणित उपदेशक, दीवानोंकी तरह।

दस्ते-सैय्याद भी आजिज़[1] है, कफ़े-गुलचीं भी
बूए-गुल ठहरी न, बुलबुलकी ज़बाँ ठहरी है
हमने जो तर्ज़े-फ़ुग़ाँ की है क़फ़समें ईजाद
'फ़ैज़' गुलशनमें[2] वही तर्ज़े-बयाँ ठहरी है

कर रहा था ग़मे-जहाँका हिसाब
आज तुम याद बे-हिसाब आये
न गयी तेरे ग़मकी सरदारी
दिलमें यूँ रोज़ इन्क़िलाब आये
जल उठे बज़्मे-ग़ैरके दरो-बाम[3]
जब भी हम ख़ानुमाँ ख़राब आये

ग़मे-जहाँ[4] हो, ग़मे-यार[5] हो कि तीरे-सितम[6]
जो आये, आये कि हम दिल कुशादा[7] रखते हैं

अश्क[8] तो कुछ भी रंग ला न सके
ख़ूँसे तर आज आस्तीं[9] की है
दिलसे पैहम[10] ख़याल कहता है
इतनी शीरीं[11] है ज़िन्दगी इस पल
ज़ुल्मका ज़हर घोलनेवाले
कामराँ[12] हो सकेंगे आज न कल

१. सैय्यादके हाथ असमर्थ हैं, २. गुलचीके हाथ भी, ३. शत्रुकी महफिलके दरवाज़े और छतें, ४. विश्व-भरका दुःख, ५. प्रेयसीका ज़ुल्म, ६. अत्याचारोंके तीर, ७. विशाल, ८. आँसू, ९. बाँह, १०. बार-बार, ११. मधुर, १२. सफल।

जल्वागाहे-विसालकी[1] शमएँ
वह बुझा भी चुके अगर तो क्या
चाँदको गुल करें तो हम जाने

यादे-ग़ज़ाल-चश्माँ, जिक्रे-समन[2] इज़ाराँ
जब चाहा कर लिया है कुञ्जे-क़फ़स[3] बहाराँ
आँखोंमें दर्दमन्दी,[4] होंटोंपै उज्रख़्वाही[5]
जानानावार[6] आयी शामे-फ़िराक़े-याराँ[7]
नामूसे-जानो-दिलकी[8] बाज़ी लगी थी वर्ना
आसाँ न थी कुछ ऐसी राहे-वफ़ा-शुआराँ[9]
शायद क़रीब पहुँची सुबहे-विसाले-हमदम[10]
मौजे-सबा लिये है, ख़ुशबूए-ख़ुश कनाराँ
है अपनी किश्ते-वीराँ सरसब्ज़ इस यक़ींसे
आयेंगे इस तरफ़ भी एक रोज़ अब्रो-बाराँ[11]
आयेगी 'फ़ैज़' इक दिन बादे-बहार लेकर
तस्नीमे-मै-फ़रोशाँ,[12] पैग़ामे-मै-गुसाराँ[13]

१. मिलनकी, शोभागृहका दीपक, २. मृगनयनियोंकी याद, चमेली जैसे कपोलोंका जिक्र करके, ३. क़ैदकी नीरसतामें भी बहारका तसव्वुर कर लिया है, ४. सहानुभूति, ५. नहीं-नहीं; ६ प्रियतमा-जैसी शानसे, ७. प्रेयसीकी जुदाईकी शाम, ८. प्राण-हृदयकी मर्य्यादाकी, ९. वफ़ा करनेवालोंकी राह, १०. प्रातःकालीन वायु सम्भवतः प्रेयसीका स्पर्श करके आयी है, तभी इतनी सुगन्धित है, ११. अपनी सूखी खेती इसी आशासे हरी-भरी है कि एक रोज पानीके बादल बरसेंगे, १२-१३ सुरा-सेवियोंके पास जन्नती सुराका सन्देश लेकर।

देखें, हैं कौन-कौन, ज़रूरत नहीं रही
कूए-सितममें सबको ख़फ़ा कर चुके हैं हम
अब अपना इख़्तियार है, चाहें जहाँ चलें
रहबरसे[1] अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम

उनकी नज़रमें, क्या करें फीका है अब भी रंग
जितना लहू था सर्फ़े-क़बा[2] कर चुके हैं हम
कुछ अपने दिलकी ख़ूका[3] भी शुकराना चाहिए
सौ बार उनकी ख़ूका गिला कर चुके हैं हम

—दस्ते-सबासे

क़ते

न आज लुत्फ़[4] कर इतना कि कल गुज़र न सके
वह रात जो कि तेरे गेसुओंकी[5] रात नहीं
यह आ.ज़ू[6] भी बड़ी चीज़ है मगर हमदम[7] !
विसाले--यार[8] फ़क़त आ.ज़ूकी बात नहीं

फ़िक्रे--सूदो-ज़ियाँ[9] तो छूटेगी
मिन्नते-ई-ओ-आँ तो छूटेगी
ख़ैर दोज़ख़में मै मिले न मिले
शैख़ साहबसे जान छूटेगी

१. मार्गदर्शकसे, २. लिबास रँगनेमें व्यय, ३. आदतका, ४. आनन्द, ५. बालोंके लटोंकी, ६. इच्छा, ७. मित्र, ८. प्रेयसीका मिलन, ९. लाभ-हानिकी चिन्ता।

ग़ज़लोंके शेर

शैख़ साहबसे रस्मो-राह न की
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की
तुझको देखा तो सैरे-चश्म[1] हुए
तुझको चाहा तो और चाह न की

तेरे दस्ते-सितमका[2] अज्ज़[3] नहीं
दिल ही काफ़िर था, जिसने आह न की
थे शबे-हिज्रॉ[4] काम और बहुत
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह[5] न की

शमए-नज़र,[6] ख़यालके अंजुम[7] जिगरके दाग़
जितने चिराग़ हैं, तेरी महफ़िलसे आये हैं
उठकर तो आ गये हैं, तेरी बज़्मसे, मगर-
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिलसे आये हैं

सितमकी रस्में बहुत थीं लेकिन, न थी तेरी अंजुमनसे पहले
सज़ा, ख़ताए-नज़रसे पहले, अताब[8] जुर्मे-सुख़नसे[9] पहले
जो चल सको तो चलो कि राहे-वफ़ा बहुत मुख़्तसिर[10] हुई है
मुक़ाम है अब कोई न मंज़िल, [11]फ़राज़े-दारो-रसनसे[12] पहले

---

१. आँखें तृप्त हुईं, २. अत्याचारोंकी, ३. मिन्नत-समाजत नहीं, गिड़-गिड़ानेसे कोई लाभ नहीं, ४. विरह-रात्रिको, ५. बरबाद दिलकी चिन्ता, ६. दृष्टि-दीप, ७. चिन्तन-नक्षत्र, ८. क्रोध, ९. बात करनेके अपराधसे पूर्व, १०. भीड़ी, छोटी, ११. बुलन्दी, १२. फाँसीसे।

नहीं रही अब जुनूँकी ज़ंजीरपर वह पहली इजारादारी[1]
गिरफ़्त करते हैं करनेवाले, ख़िरदपै[2] दीवानापनसे पहले
करे कोई तेग़का नज़ारा, अब उनको यह भी नहीं गवारा
ब-ज़िद है क़ातिल कि जाने-बिस्मिल[3] फ़िगार हो[4] जिस्मो-तनसे पहले

ग़रूरे-सरू-ओ-समनसे[5] कह दो कि फिर वही ताजदार[6] होंगे
जो ख़ारो-ख़स-वालिए-चमन[7] थे उरूजे-सरुओ-समनसे[8] पहले
इधर तक़ाज़े हैं मस्लहतके, उधर तक़ाज़ाए-दर्दे-दिल है
ज़बाँ सँभालें कि दिल सँभालें असीर-ज़िक्रे-वतनसे पहले ?

बज़्मे-ख़यालमें तेरे हुस्नकी शमअ़ जल गयी
दर्दका चाँद बुझ गया, हिज्रकी रात ढल गयी
जब तुझे याद कर लिया सुबह महक-महक उठी
जब तेरा ग़म जगा लिया रात मचल-मचल गयी
दिलसे तो हर मुआ़मिला करके चले थे साफ़ हम
कहनेमें उनके सामने बात बदल-बदल गयी
आख़िरे-शबके हमसफ़र[9] 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए ?
रह गयी किस जगह सबा, सुबह किधर निकल गयी ?

रहे-ख़िज़ाँमें[10] तलाशे-बहार करते रहे
शबे-सियहसे[11] तलब हुस्ने-यार करते रहे

१. ठेकेदारी, २. बुद्धिपर उन्माद आनेसे पूर्व, ३. घायलके प्राण, ४. आहत, ५. घमण्डी वृक्षोंसे, ६. शासक, रखवाले, ७. काँटे और घास उगानेवाले माली, ८. वृक्षों और पौदोंके लगनेसे पूर्व, ९. सहयात्री, १०. पतझडके दिनोंमें, ११. अँधेरी रातसे ।

ख़याले-यार, कभी ज़िक्रे-यार, करते रहे
इसी मताअ[1] पै हम रोज़गार करते रहे
नहीं शिकायते-हिज्राँ कि इस वसीलेसे
हम उनसे रिश्तए-दिल उस्तुवार[2] करते रहे
वे दिन कि कोई भी जब वजहे-इन्तज़ार न थी
हम उनमें तेरा, सिवा इन्तज़ार करते रहे
उन्हींके फ़ैज़से[3] बाज़ारे-अक़्ल रौशन है
जो गाह-गाह[4] जुनूँ इख़्तियार करते रहे

बात बससे निकल चली है
दिलकी हालत सँभल चली है
अब जुनूँ हदसे बढ़ चला है
अब तबीअ़त बहल चली है
अश्क़ ख़ूँनाब हो चले हैं
ग़मकी रंगत बदल चली है

या यूँ हीं बुझ रहा हैं शमएँ ?
या शबे-हिज्र टल चली है ?
लाख पैग़ाम हो गये हैं
जब सबा एक पल चली है
जाओ अब सो रहो सितारो !
दर्दकी रात ढल चली है

---

१. पूँजीपर, २. चिरस्थायी, दृढ़, ३. कृपासे, ४. कभी-कभी दीवानगी ।

बर्क़[1] सौ बार गिरके ख़ाक हुई
रौनक़े-ख़ाके-आशियाँ है वही
चाँद तारे इधर नहीं आते
वर्ना ज़िन्दाँमें आसमाँ है वही

कब यादमें तेरा साथ नहीं, कब हाथमें तेरा हात नहीं ?
सद शुक्र कि अपनी रातोंमें अब हिज्रकी कोई रात नहीं
मुश्किल हैं, अगर हालात वहाँ, दिल बेच आयें, जाँ दे आयें
दिलवालो ! कूचए-जानाँमें क्या ऐसे भी हालात नहीं ?
गर बाज़ी इश्क़की बाज़ी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाज़ी मात नहीं

हमपर तुम्हारी चाहका इलज़ाम ही तो है
दुश्नाम[2] तो नहीं है यह इक्राम[3] ही तो है
करते हैं जिसपर तअ़न[4] कोई जुर्म तो नहीं
शौक़े-फ़ुज़ूलो-उल्फ़ते-नाकाम[5] ही तो है
दिल मुद्दईके[6] हर्फ़े-मलामतसे[7] शाद[8] है
ऐ जाने-जाँ यह हर्फ़ तेरा नाम ही तो है

दिल ना उम्मीद तो नहीं, नाकाम ही तो है
लम्बी है ग़मकी शाम, मगर शाम ही तो है

१. बिजली, २. बुराई, गाली, ३. सम्मान, सत्कार, ४. व्यंग, कटाक्ष, भर्त्सना, ५. व्यर्थका शौक़ और असफल प्रेम, ६. वादीके, ७. लानत-मलामतके देनेसे, ८. प्रफुल्ल ।

दस्ते-फ़लकमें[1] गर्दिशे-तक़दीर[2] तो नहीं
दस्ते-फ़लकमें गर्दिशे-ऐय्याम[3] ही तो है
आख़िर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफ़ा[4]
वह यार-ख़ुश-ख़साल[5] सरे-बाम[6] ही तो है
भीगी है रात 'फ़ैज़' ग़ज़ल इब्तदा[7] करो
वक़्ते-सुरूद,[8] दर्दका हंगाम[9] ही तो है

जो हम पै गुज़री सो गुज़री मगर शबे-हिजराँ[10] !
हमारे अश्क तेरी आक़बत सँवार चले
हुजूरे-यार हुई दफ़्तरे-जुनूँकी तलब
गिरहमें ले के गरेबाँका तार-तार चले
मुक़ाम 'फ़ैज़' ! कोई राहमें जँचा ही नहीं
जो कूए-यारसे निकले तो सूए-दार चले

यूँ अज़ीं-तलबसे[11] कब ऐ दिल ! पत्थर दिल पानी होते हैं
तुम लाख रज़ाकी ख़ू[12] डालो, कब ख़ूए-सितमगर जाती है
हाँ जाँ के ज़ियाँकी[13] हमको भी तशवीश[14] है लेकिन क्या कीजे
हर रह जो उधरको जाती है, मक़तलसे गुज़रकर जाती है

---

१. आकाशके हाथोंमें, २. भाग्यचक्र, ३. रात-दिनका चक्र, ४. असर, ५. अच्छी आदतवाला, भद्रस्वभावी, ६. छतपर, ऊपरके कमरेपर, ७. प्रारम्भ, ८. संगीतके समय, ९. दु:खका समय, १०. विरह-की रात, ११. समझाने-बुझानेसे, १२. प्रसन्नताकी आदत, नम्र स्वभाव-की आदत, १३. प्राण जानेके नुक़सानकी, १४. चिन्ता।

अब कूचए-दिलबरका रहरव[1], रहज़न[2] भी बने तो बात बने
पहरेसे उदू टलते ही नहीं, और रात बराबर जाती है
हम अहले-क़फ़स तनहा भी नहीं, हर रोज़ नसीमे-सुबहे-वतन[3]
यादोंसे मुअत्तर[4] आती है, अश्कोंसे मुनव्वर[5] जाती है

गर्मिए-शौक़े-नज़ाराका असर तो देखो
गुल खिले जाते हैं वह सायए-दर तो देखो
ऐसे नादाँ भी न थे जाँसे गुज़रनेवाले
नासहो ! पिन्दगरो ! राहगुज़र तो देखो

वे तो वे हैं, तुम्हें हो जायेगी उल्फ़त मुझसे
इक नज़र तुम मेरा महबूबे-नज़र तो देखो
वह जो अब चाक गरेबाँ भी नहीं करते हैं
देखनेवालो ! कभी उनका जिगर तो देखो

दामने-दर्दको गुलज़ार बना रक्खा है
आओ इक दिन दिले-पुरख़ूँका हुनर तो देखो
सुबहकी तरह झमकता है, शबे-ग़मका उफ़क़
'फ़ैज़' ता-बन्दगी दीदए-तर तो देखो !

यूँ बहार आयी है इस बार कि जैसे क़ासिद
कूचए-यारसे बे-नैलेमराम[6] आता है

---

१. यात्री, २. लुटेरा, ३. देशकी प्रातःकालीन हवा, ४. सुगन्धित, ५. प्रकाशमान, ६. निराश, मनोरथरहित ।

शौक़वालोंकी हज़ीं महफ़िले-शबमें[1] अब भी
आमदे-सुबहकी सूरत तेरा नाम आता है
अब भी ऐलाने-सहर[2] करता हुआ मस्त कोई
दाग़े-दिल करके फ़रोज़ाँ[3] सरे-शाम आता है

—ज़िन्दानामासे

९ मार्च १९६२ ई०

•

पुनश्च

पुस्तक छपते-छपते सूचना मिली है कि सोवियत रूसने 'फ़ैज़' को इस वर्षका अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

१५-८-६२

---

१. शोकाकुल रात्रिके जल्सेमें, २. प्रातःकाल होनेकी सूचना देता हुआ, ३. दिलके भावोंको प्रज्वलित करके।